

KIM

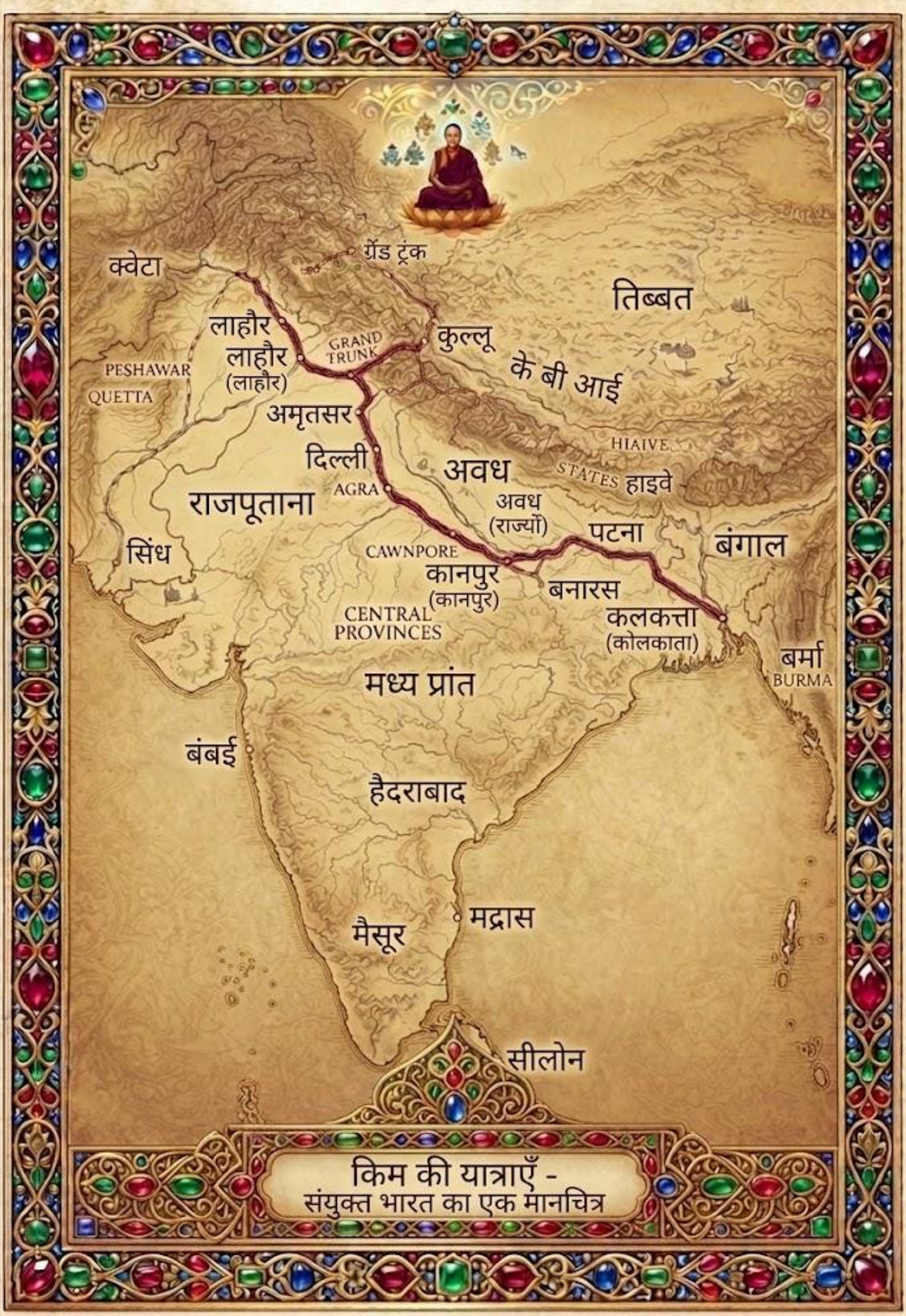
by Rudyard Kipling

किम्

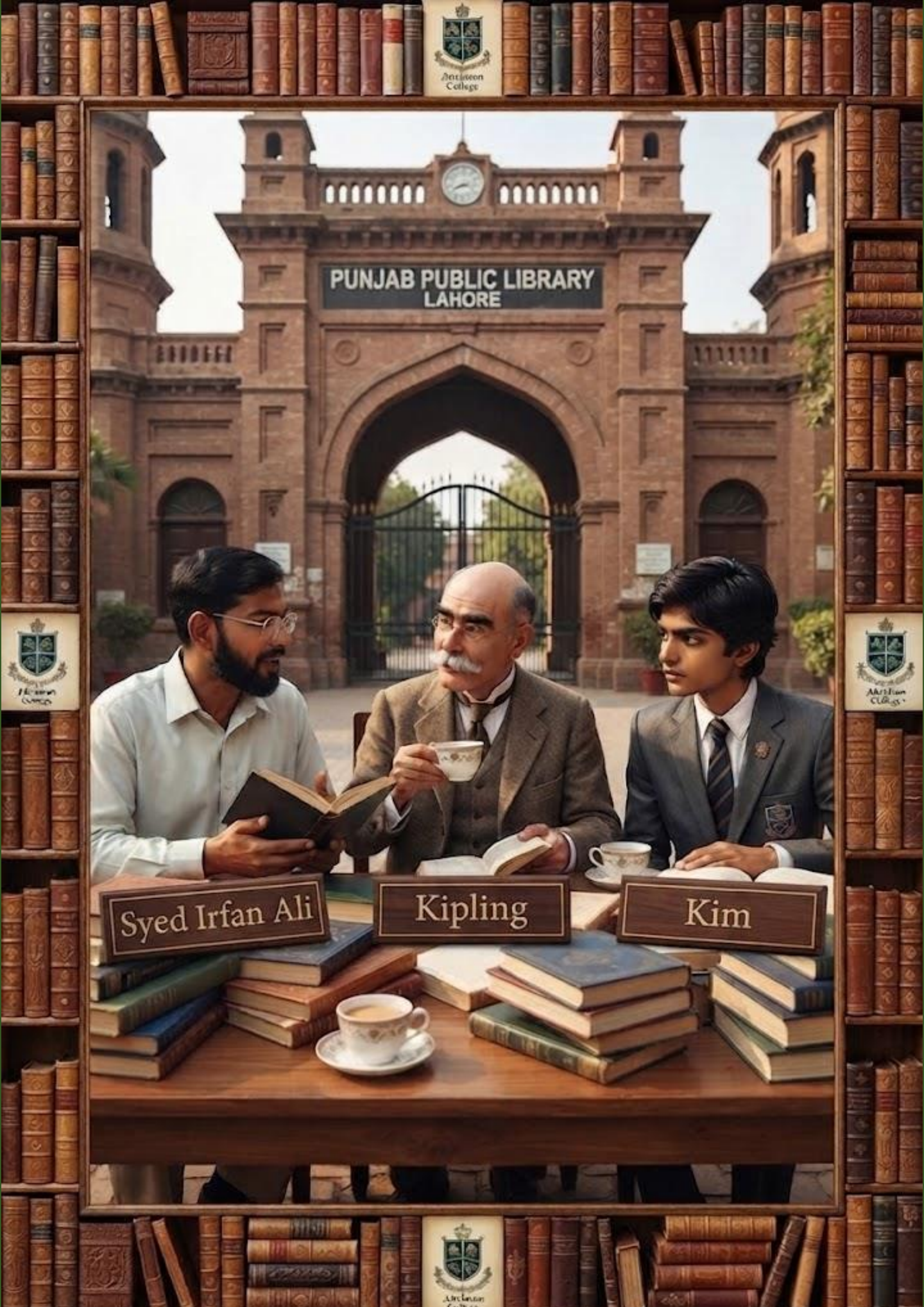
हिन्दी अनुवाद

सैयद इरफान अली


Kim, Kipling
Syed Irfan Ali
Kim
Mahbub Ali
Mahbub Ali
Hurree Chunder Mookerjee
Teshoo Lama
Father Victor



ग्रेंड ट्रंक
क्वेटा
तिब्बत
लाहौर
GRAND
TRUNK
कुल्लू
लाहौर
(लाहौर)
PESHAWAR
QUETTA
के बी आई
अमृतसर
HIAIVE
दिल्ली
अवध
STATES हाइवे
AGRA
राजपूताना
अवध
(राज्यों)
पटना
बंगाल
सिंध
CAWNPORE
कानपुर
(कानपुर)
बनारस
CENTRAL
PROVINCES
कलकत्ता
(कोलकाता)
बर्मा
BURMA
मध्य प्रांत
बंबई
हैदराबाद
मद्रास
मैसूर
सीलोन
किम की यात्राएँ -
संयुक्त भारत का एक मानचित्र


PUNJAB PUBLIC LIBRARY
LAHORE
Syed Irfan Ali
Kipling
Kim

Kim

Rudyard Kipling

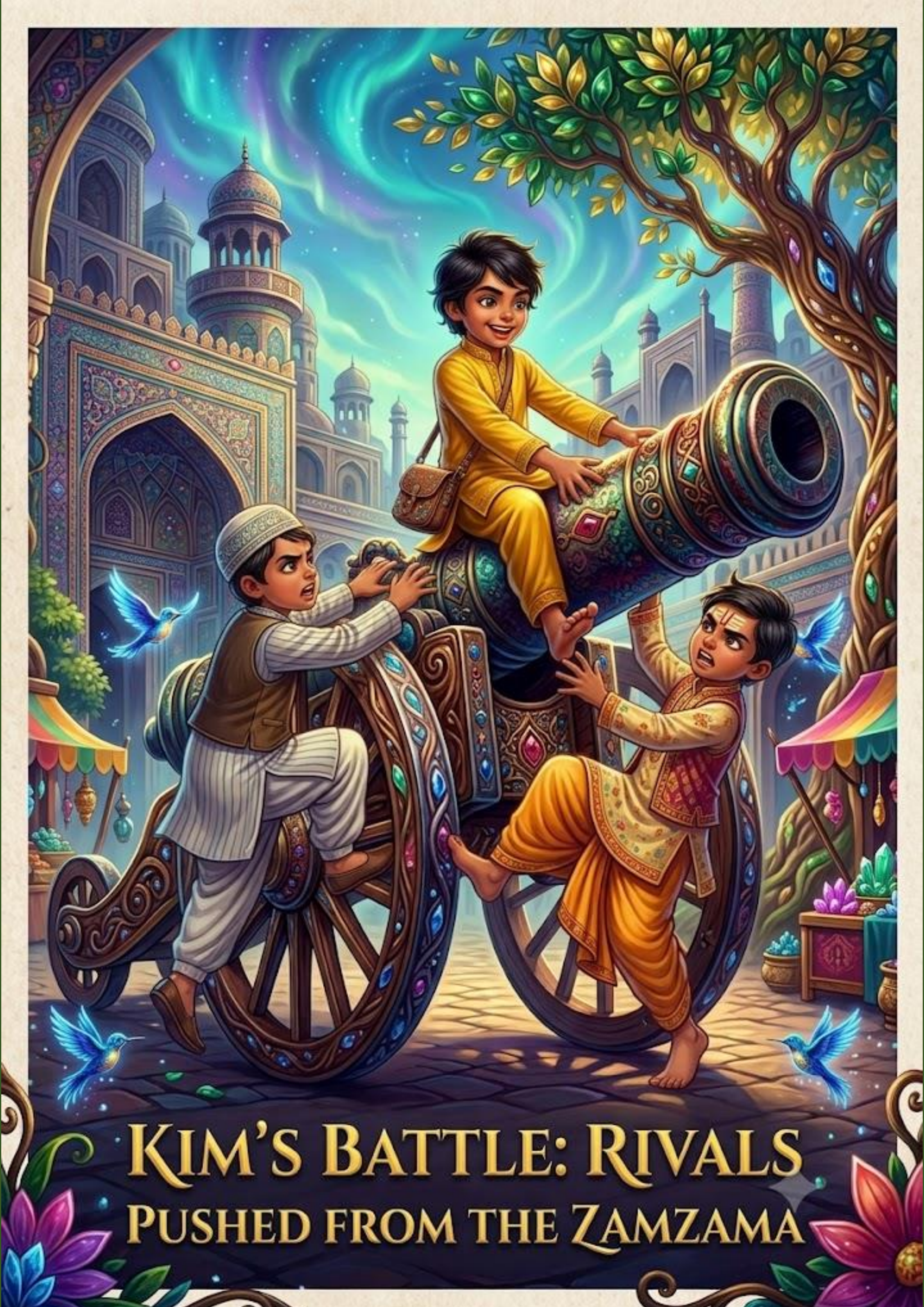
Hindi Translation

Syed Irfan Ali

ज़मज़मा उस तोप का नाम है जो लाहौर के अजायबघर (संग्रहालय) के सामने खड़ी है। इसके ऊपर बैठना मना था, लेकिन एक लड़का जिसका नाम "किम" था, उस पर मजे से बैठा हुआ था। तोप से ज्यादा आग के शोले उगलता हुआ अजगर इसे नाम देना चाहिए। पंजाब को फतह करने वाला सबसे पहले इस ज़मज़मा तोप पर ही काबिज़ होता। यह लड़का किम अंग्रेज था और पंजाब पर अंग्रेजों की हुकूमत थी, इसलिए उसे इस तोप पर बैठने का भी हक हासिल था।


KIM'S ADVENTURE
THE ZAMZAMA GUN

अपने दोस्त लाला दीना नाथ के लड़के को अभी उसने लात मारकर तोप से नीचे उतारा था।


KIM'S BATTLE: RIVALS
PUSHED FROM THE ZAMZAMA

हालांकि हिंदुस्तान के किसी भी लड़के की तरह किम का रंग सांवला हो चुका था।

हालांकि उर्दू भी वह दूसरे लड़कों की तरह ही बिल्कुल साफ बोलता था और बाजार में मौजूद दूसरे लड़कों से दोस्ती करता। उनकी तरह ही जिंदगी गुजारता, मगर हकीकत यह थी कि वह असल में अंग्रेज था। एक बहुत ही गरीब सफेद अंग्रेज लड़का।



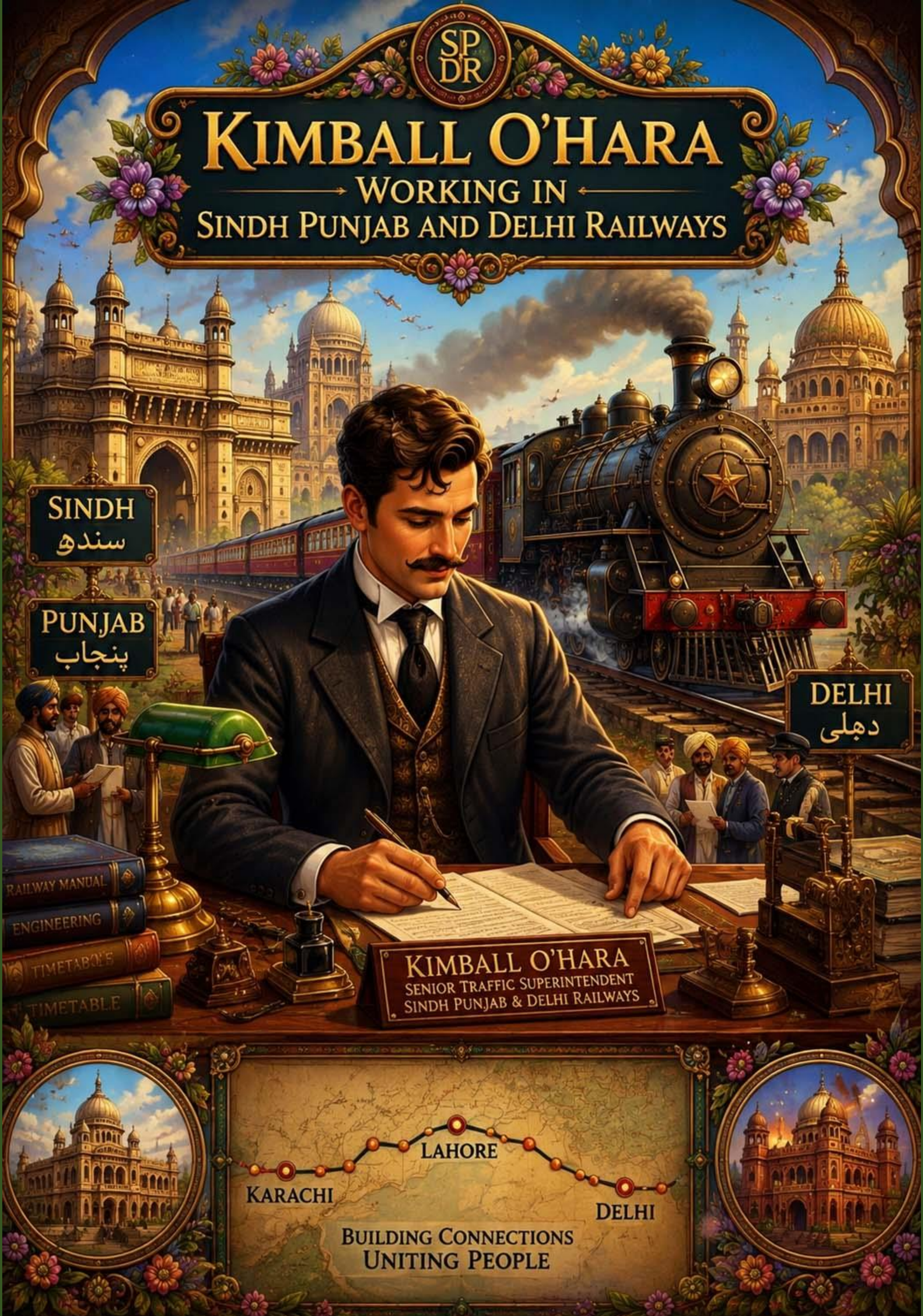
आइए किम के माता-पिता की तरफ नज़र डालते हैं।

किम के पिता का नाम किम्बल ओ'हारा था जो सेना में कार्यरत थे और उसकी माँ एक सैन्य अधिकारी के घर काम करती थीं।



RUDYARD KIPLING
KIM
KIMBALL O'HARA
WITH HIS WIFE AND BABY

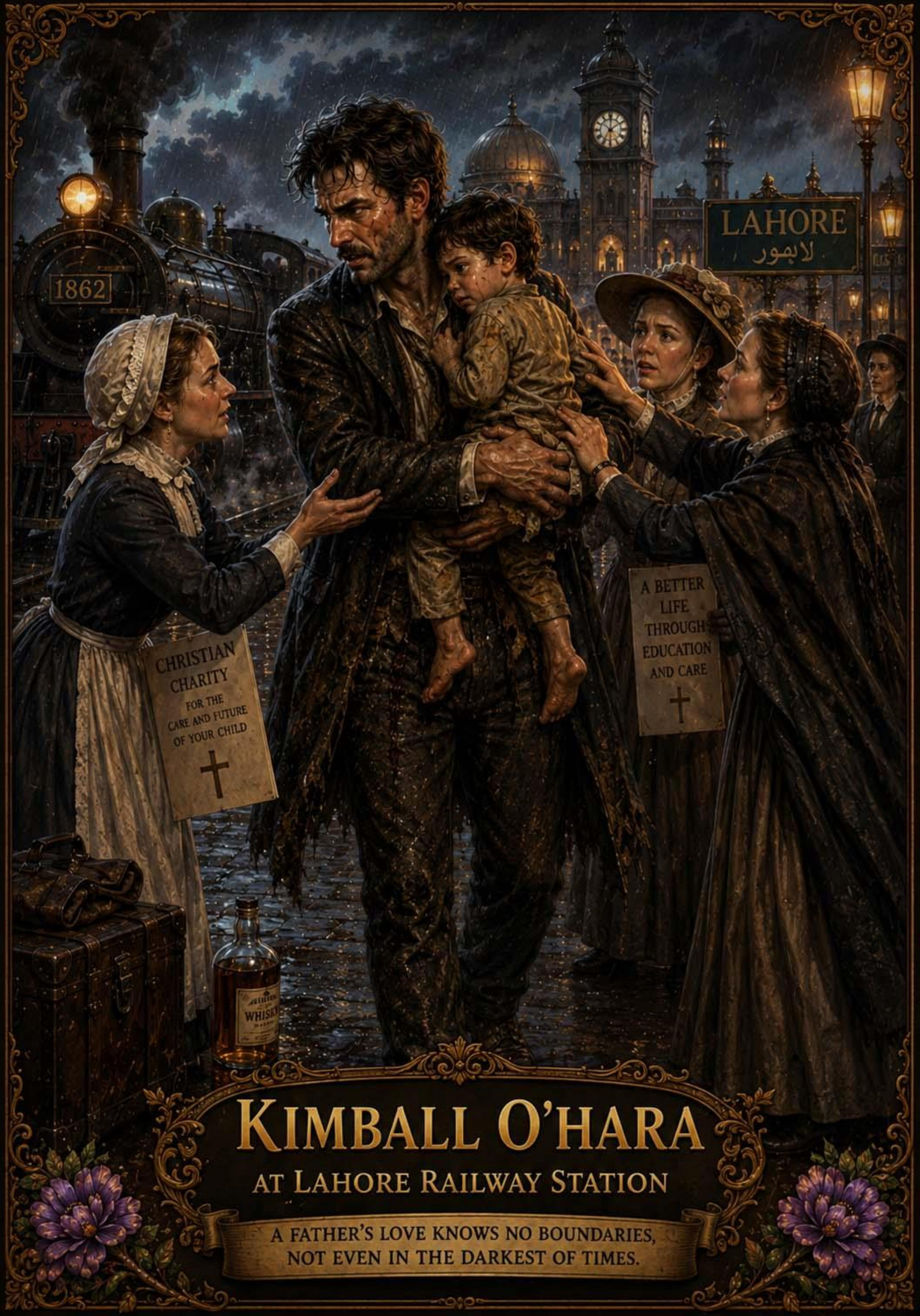
उसके बाप ने फौज की नौकरी छोड़कर रेलवे में मुलाज़मत इख्तियार कर ली और सिंध, पंजाब और दिल्ली रेलवे में काम करता रहा।


SP DR
KIMBALL O'HARA
WORKING IN
SINDH PUNJAB AND DELHI RAILWAYS
SINDH
سندھ
PUNJAB
پنجاب
DELHI
دھلی
RAILWAY MANUAL
ENGINEERING
TIMETABLE
TIMETABLE
KIMBALL O'HARA
SENIOR TRAFFIC SUPERINTENDENT
SINDH PUNJAB & DELHI RAILWAYS
LAHORE
KARACHI
DELHI
BUILDING CONNECTIONS
UNITING PEOPLE

फिरोजपुर में किम की मां बीमारी की वजह से मर गई तो उसके बाप ने बहुत ज्यादा शराबनोशी शुरू कर दी और रेलवे लाइन के साथ अपने तीन साला खूबसूरत बेटे को लेकर इधर-उधर परेशान हाल घूमता रहता।


1862
LAHORE
KIMBALL O'HARA
AT LAHORE RAILWAY STATION
IN GRIEF, DROWNING SORROWS,
HOLDING ON TO THE ONLY LOVE LEFT

भलाई करने वाले और नेक अंग्रेज उसे देखते तो बच्चे को उससे लेने की कोशिश करते ताकि उसकी अच्छी तालीम व तरबियत कर सकें, मगर उसका बाप उसे लेकर उनसे बचता फिरता।


1862
LAHORE
CHRISTIAN CHARITY
FOR THE CARE AND FUTURE OF YOUR CHILD
A BETTER LIFE THROUGH EDUCATION AND CARE
WHISKY
KIMBALL O'HARA
AT LAHORE RAILWAY STATION
A FATHER'S LOVE KNOWS NO BOUNDARIES,
NOT EVEN IN THE DARKEST OF TIMES.

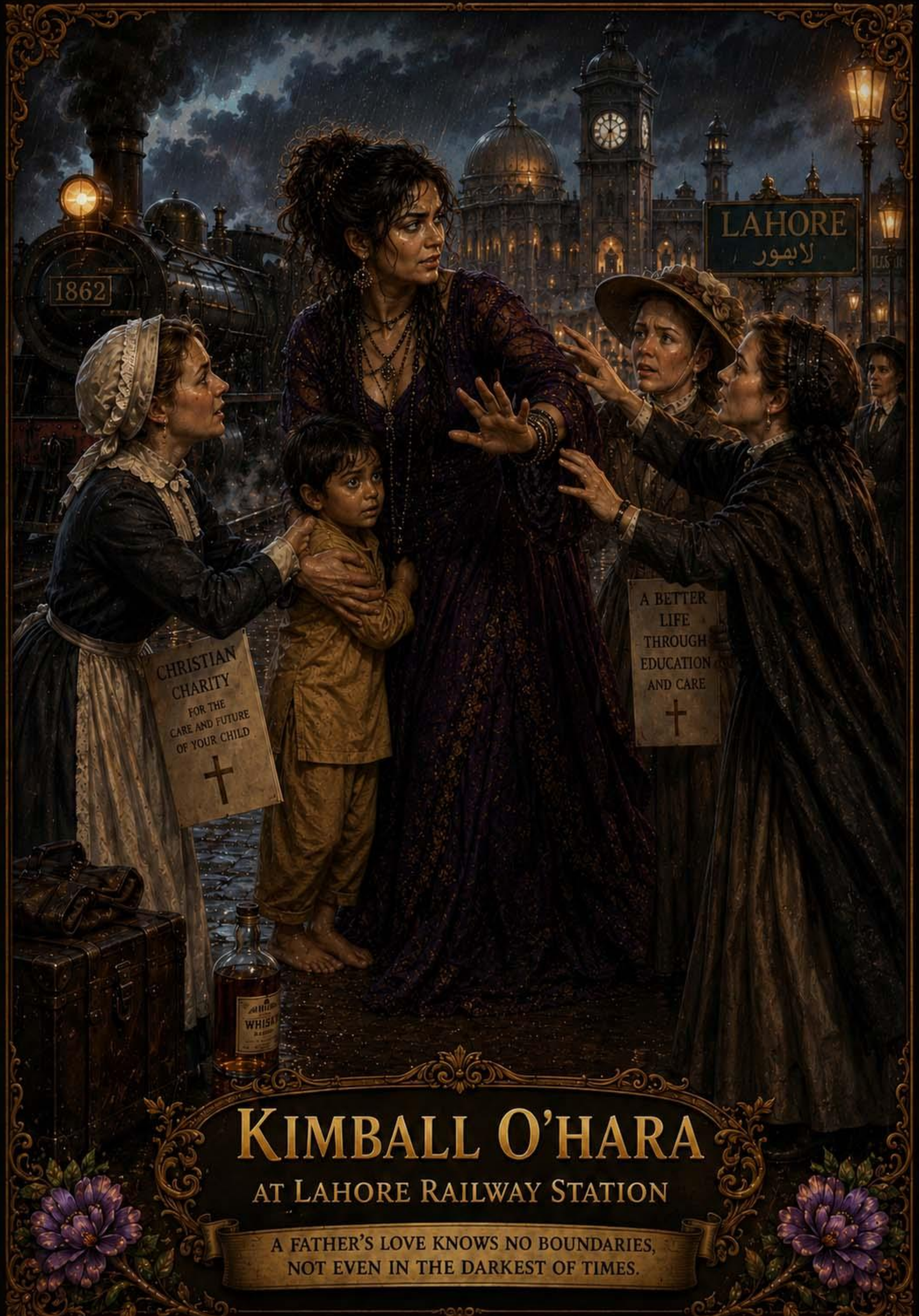
फिर उसकी मुलाकात एक औरत से हुई जो खुद भी नशा करती थी और नशे की चीजें भी बेचती थी। हालांकि दुनिया को दिखाने के लिए वह पुराने फर्नीचर की दुकान चला रही थी। किम के बाप ने उससे लेकर बहुत ज्यादा नशा करना शुरू कर दिया और एक दिन मर गया।



जिस के बाद उस औरत ने किम की देख-भाल शुरू की।



कल्याण (भलाई) का काम करने वाले लोग जब उससे बच्चा लेने की कोशिश करते तो वह कहती कि वह उसकी खाला (मौसी) है।


1862
LAHORE
لاہور
CHRISTIAN CHARITY
FOR THE CARE AND FUTURE OF YOUR CHILD
A BETTER LIFE THROUGH EDUCATION AND CARE
KIMBALL O'HARA
AT LAHORE RAILWAY STATION
A FATHER'S LOVE KNOWS NO BOUNDARIES,
NOT EVEN IN THE DARKEST OF TIMES.

अंतिम समय में किम को उसके बाप ने तीन कागजात दिए थे। एक वसीयतनामा, दूसरा अपनी नेकनामी का क्लियरेंस सर्टिफिकेट (सच्चरित्रता प्रमाण पत्र) और तीसरा महत्वपूर्ण कागज किम का जन्म प्रमाण पत्र।

उस औरत ने चमड़े के छोटे से ताबीज में ये चीजें रखकर किम के गले में पहना दीं ताकि गुम न हों।



उसका बाप जब तीव्र नशे की हालत में होता तो कहता कि ये चीजें एक दिन किम के बहुत काम आएंगी और उसे बहुत बड़ा आदमी बना देंगी, बहुत महानता प्रदान करेंगी। उसके विचार में ये चीजें उसी तरह जादू का असर रखती थीं जिस तरह अजायबघर (संग्रहालय) के पीछे मौजूद जादूघर में जादूगर जादू के द्वारा चीजों को बदल देते थे। उसका बाप कहता था कि एक बहुत शानदार सेना का कर्नल आलीशान घोड़े पर सवार किम से मिलने आएगा, यदि उसने अपने उस सिपाही को याद रखा जो अब फ़िरोज़पुर रेलवे लाइन के पास गरीबी का जीवन बिता रहा है। हरे-भरे मैदान पर लाल बैल (सांड) का भी वह जिक्र करता जो उस सेना की रेजिमेंट का निशान था। यह कहकर वह अपने बरामदे में टूटी हुई कुर्सी पर बैठकर बहुत देर तक रोता रहता।

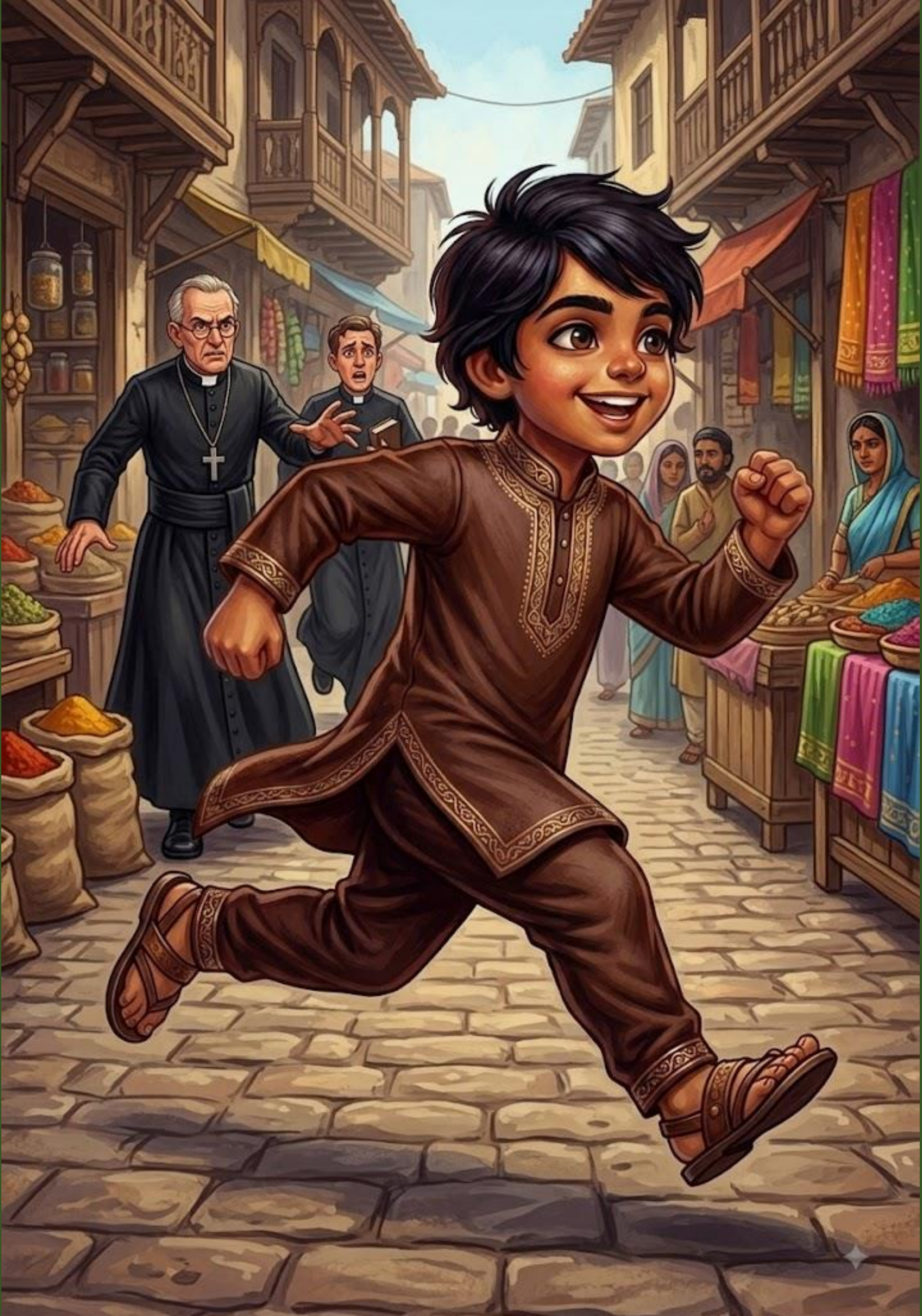


किम का पालन-पोषण करने वाली औरत उसके बाप के शब्द याद करते हुए कभी-कभार उसे बताती और किम कहता, "हाँ, मैं ये चीजें याद रखूँगा।" वह औरत कभी सोचती कि इन चीजों के साथ किम को जादूघर भेज दे, मगर फिर ख्याल आता कि कहीं वे लोग किम को अनाथालय ही न भिजवा दें। दरअसल जादूगर की बातों और चमत्कारों पर उसे यकीन ही न था।



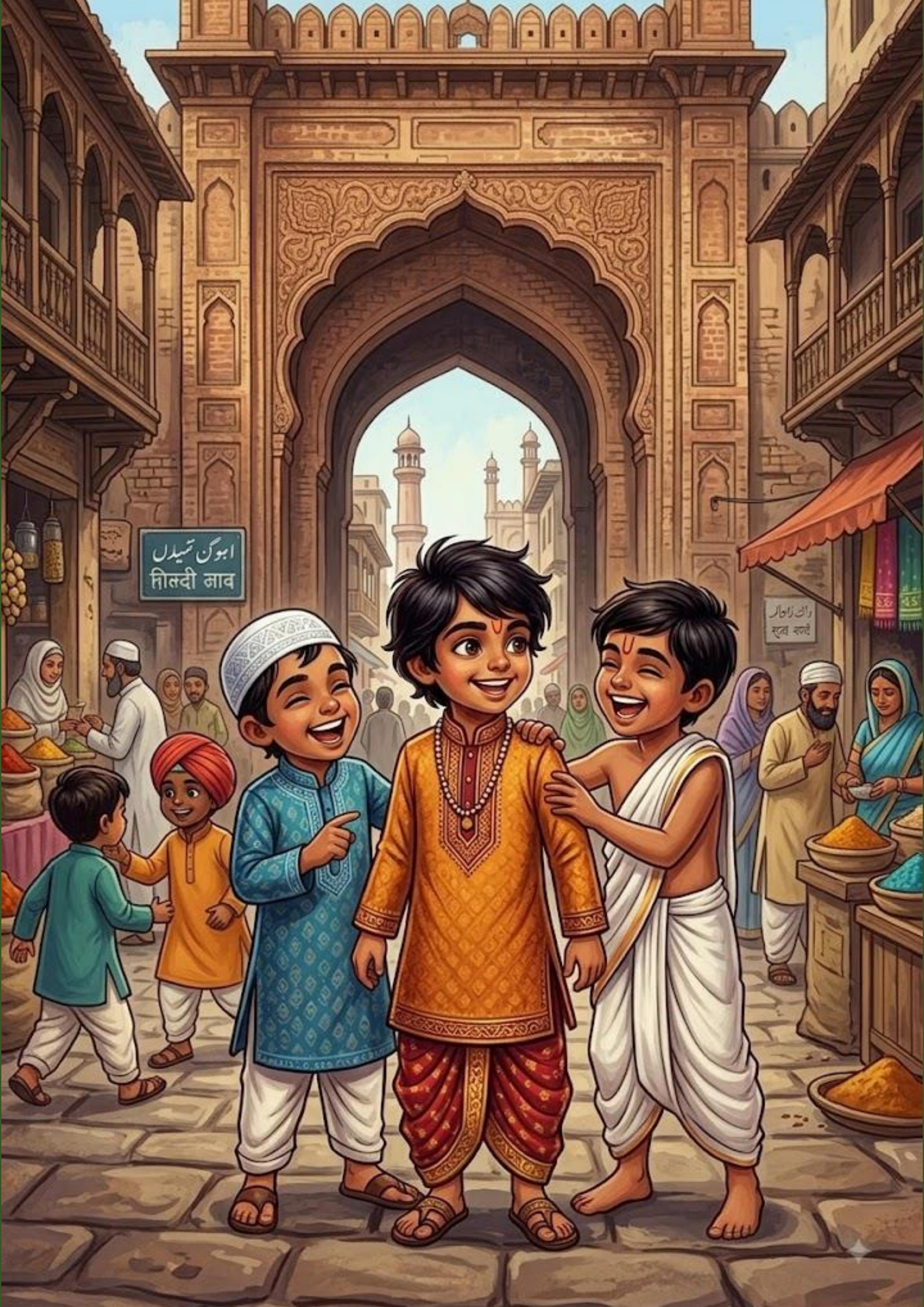
अब दोबारा किम की तरफ लौटते हैं।

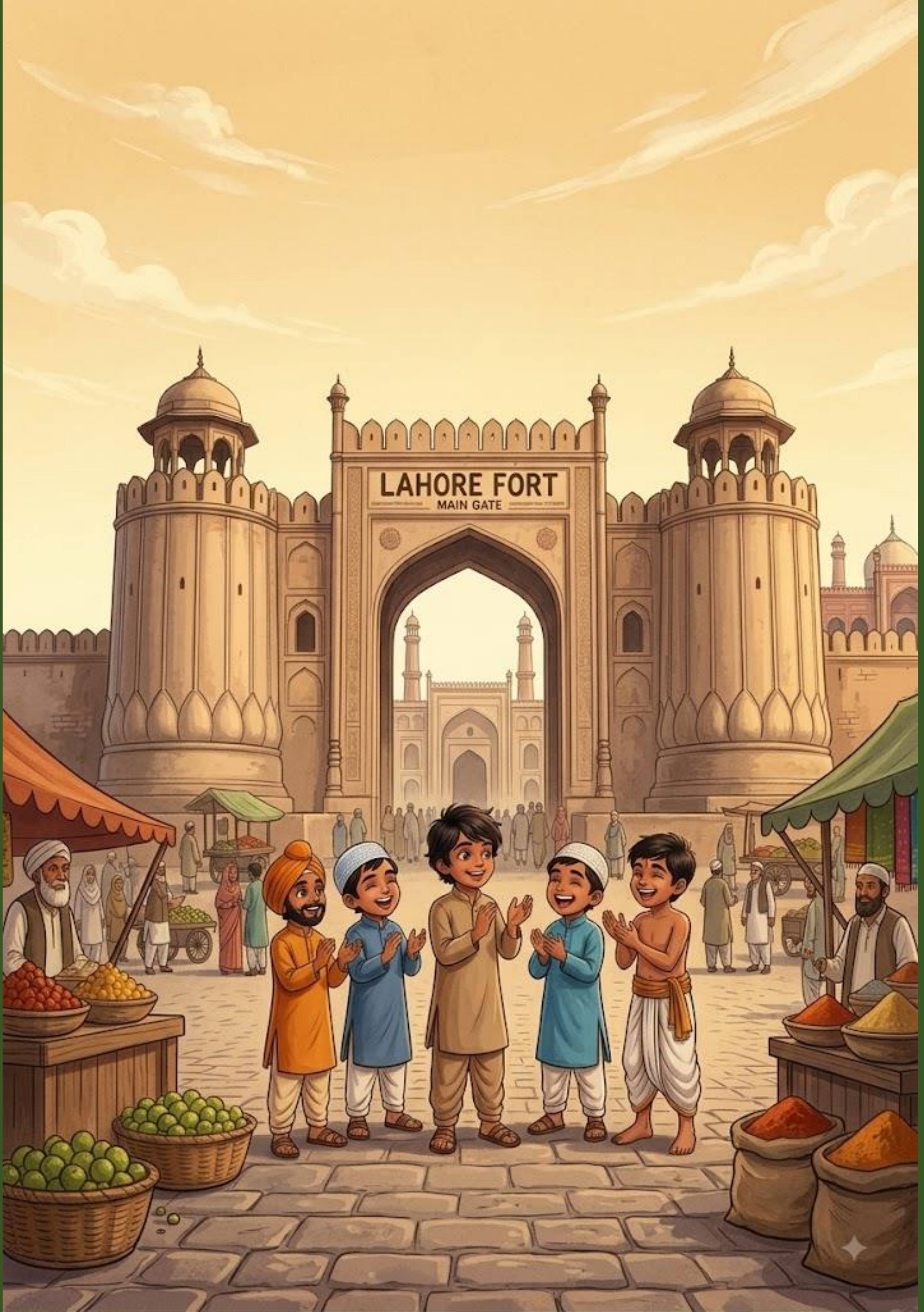
किम की अपनी ही सोच थी और जब खैराती संस्थानों (कल्याणकारी संस्थाओं) के गोरे अंग्रेज उससे उसके बारे में पूछताछ करते ताकि उसकी शिक्षा और परवरिश कर सकें, तो वह उनसे बचकर दूर चला जाता।



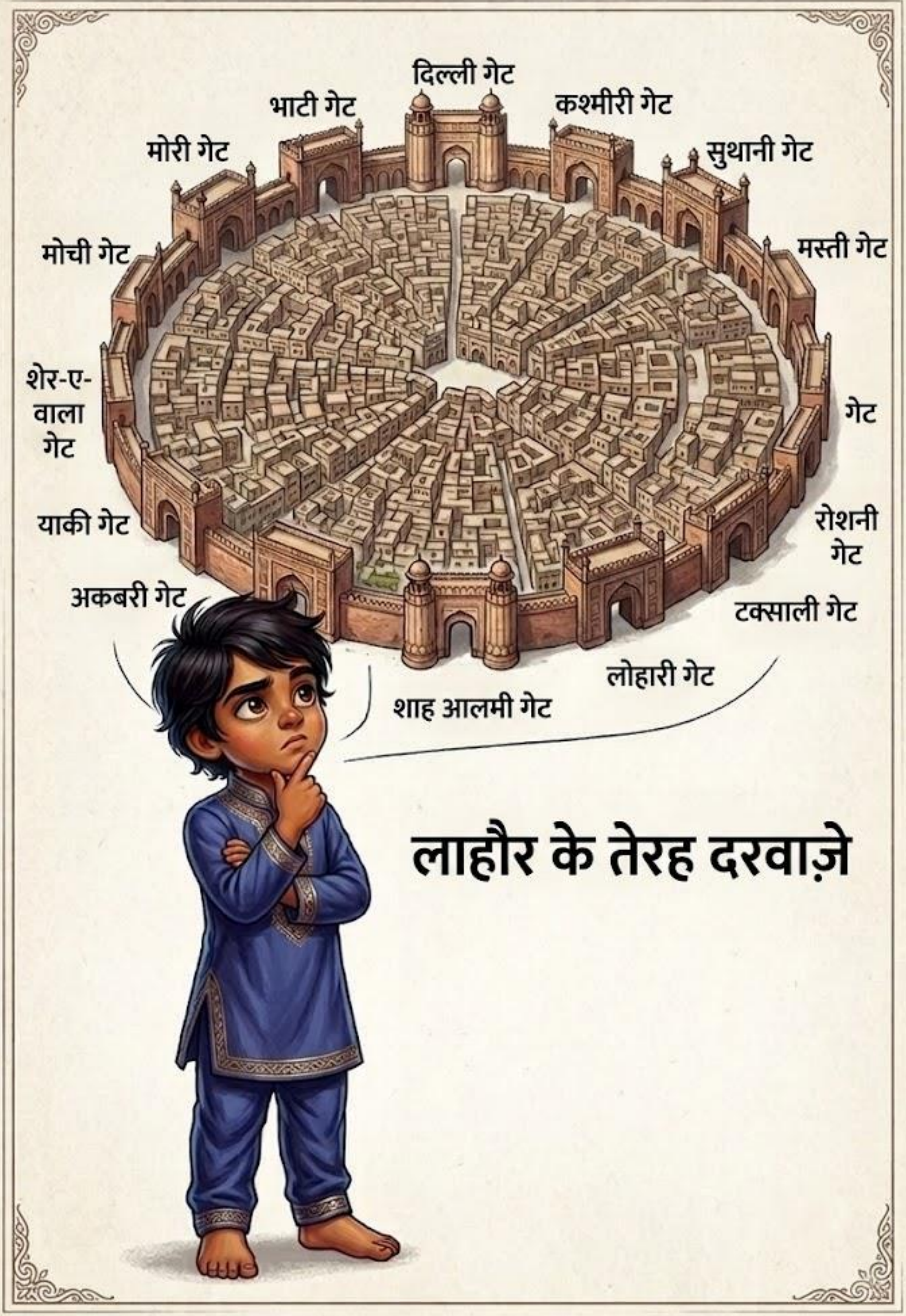
दरअसल वह तो पसंद करता था लाहौर शहर के रास्तों को, उसके दरवाज़ों को—दिल्ली गेट से लेकर शाही किले तक।

शानदार। आलीशान।

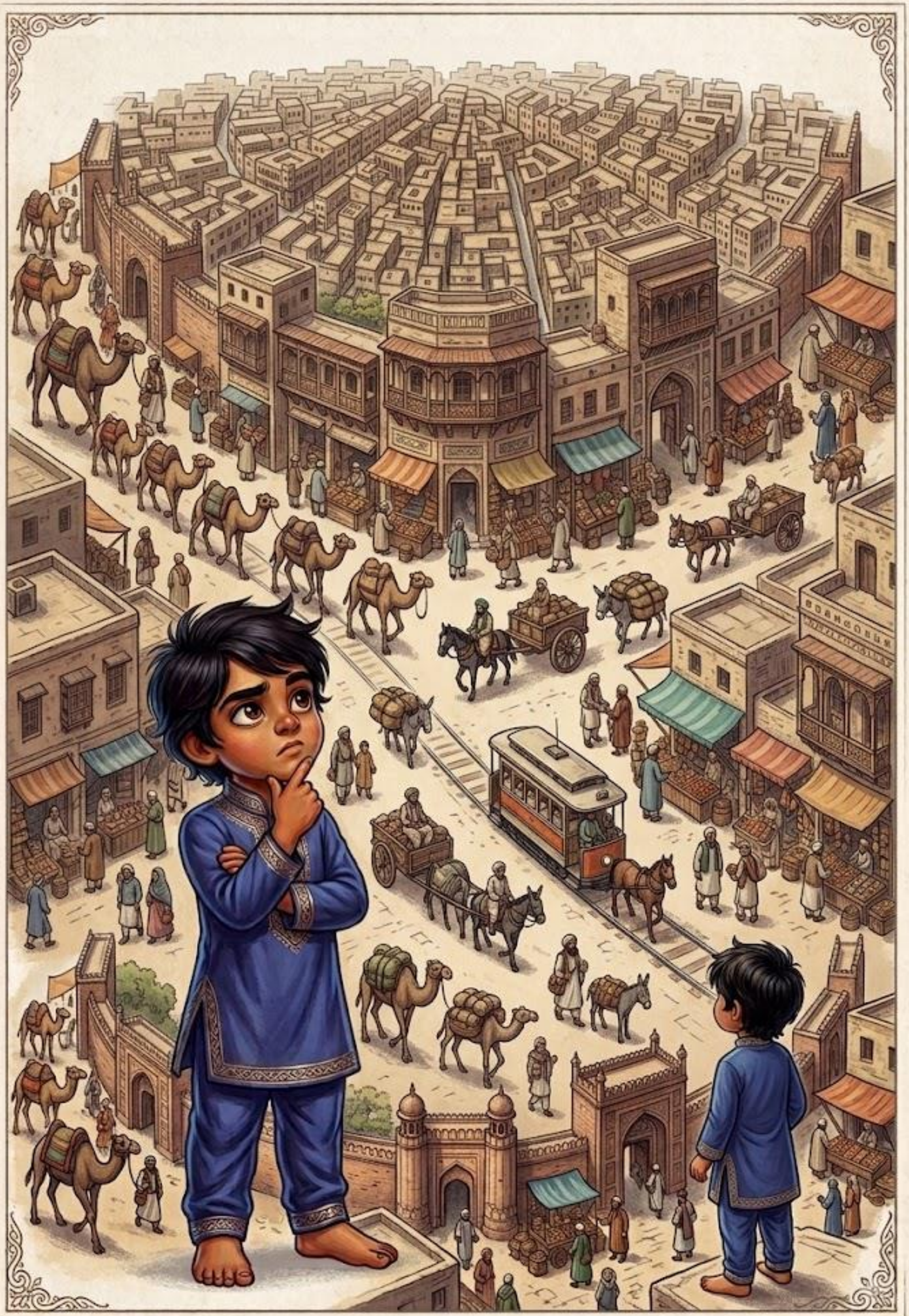



LAHORE FORT
MAIN GATE

बल्कि तेरह दरवाज़ों के अंदर आबाद लाहौर के रास्तों का उसे ज्ञान (पता) था।

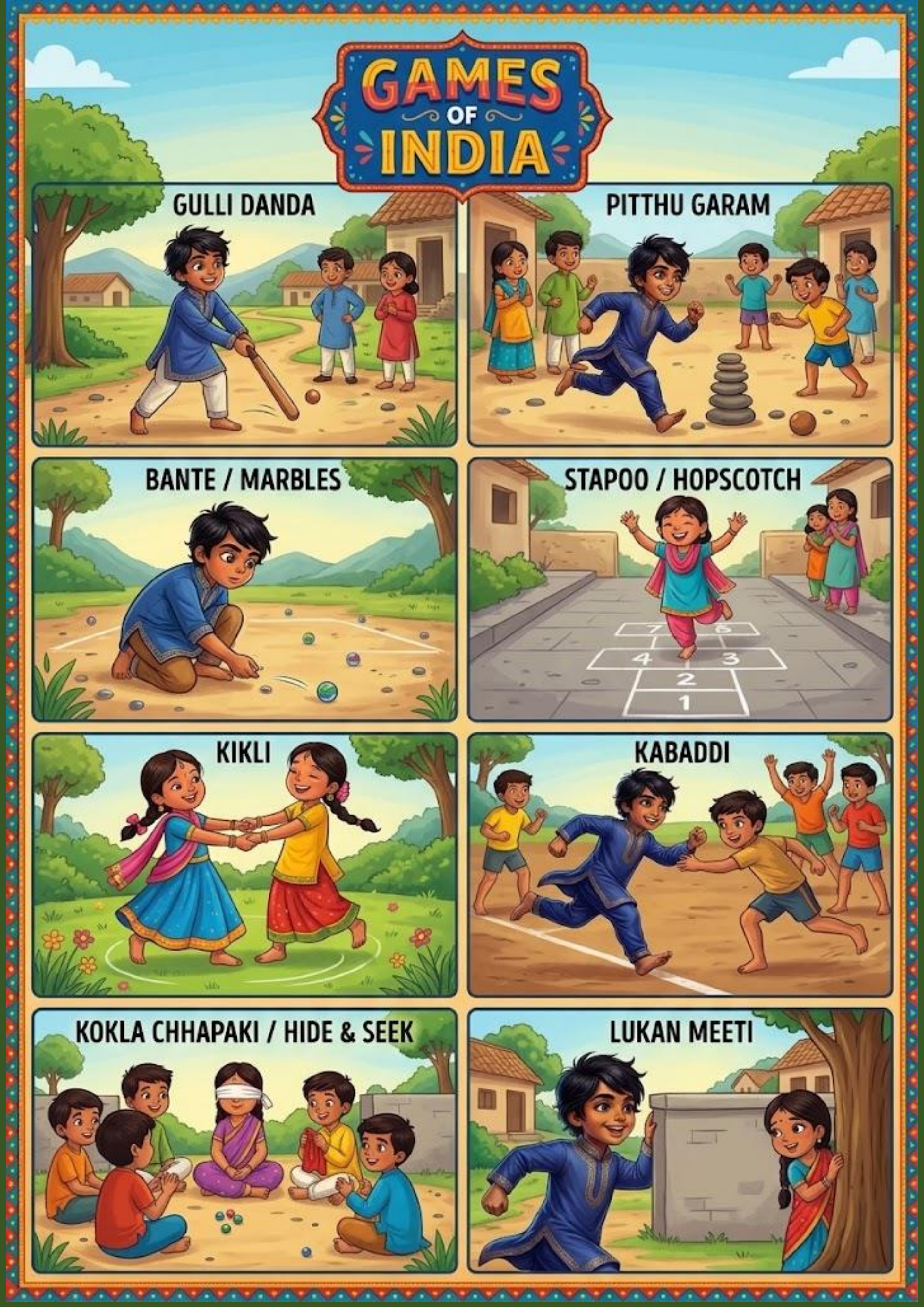

दिल्ली गेट
भाटी गेट
कश्मीरी गेट
मोरी गेट
सुथानी गेट
मोची गेट
मस्ती गेट
शेर-ए-
वाला
गेट
गेट
याकी गेट
रोशनी
गेट
अकबरी गेट
टक्साली गेट
लोहारी गेट
शाह आलमी गेट
लाहौर के तेरह दरवाज़े

और वहाँ पर रहते हुए उन तमाम लोगों का भी जो ऐसी हैरान करने वाली जिंदगी बसर करते थे, जिसका हारून अल-रशीद जैसा बादशाह भी सिर्फ ख्वाब में ही तसव्वुर (कल्पना) कर सकता था। वे ऐसी जिंदगी बसर करते जैसे अलिफ़ लैला की कहानियों में ज़िक्र होता है। लेकिन खैराती संस्थाएँ तो इस चीज़ का तसव्वुर भी नहीं कर सकती थीं कि किम कितनी हसीन जिंदगी गुज़ार रहा है।

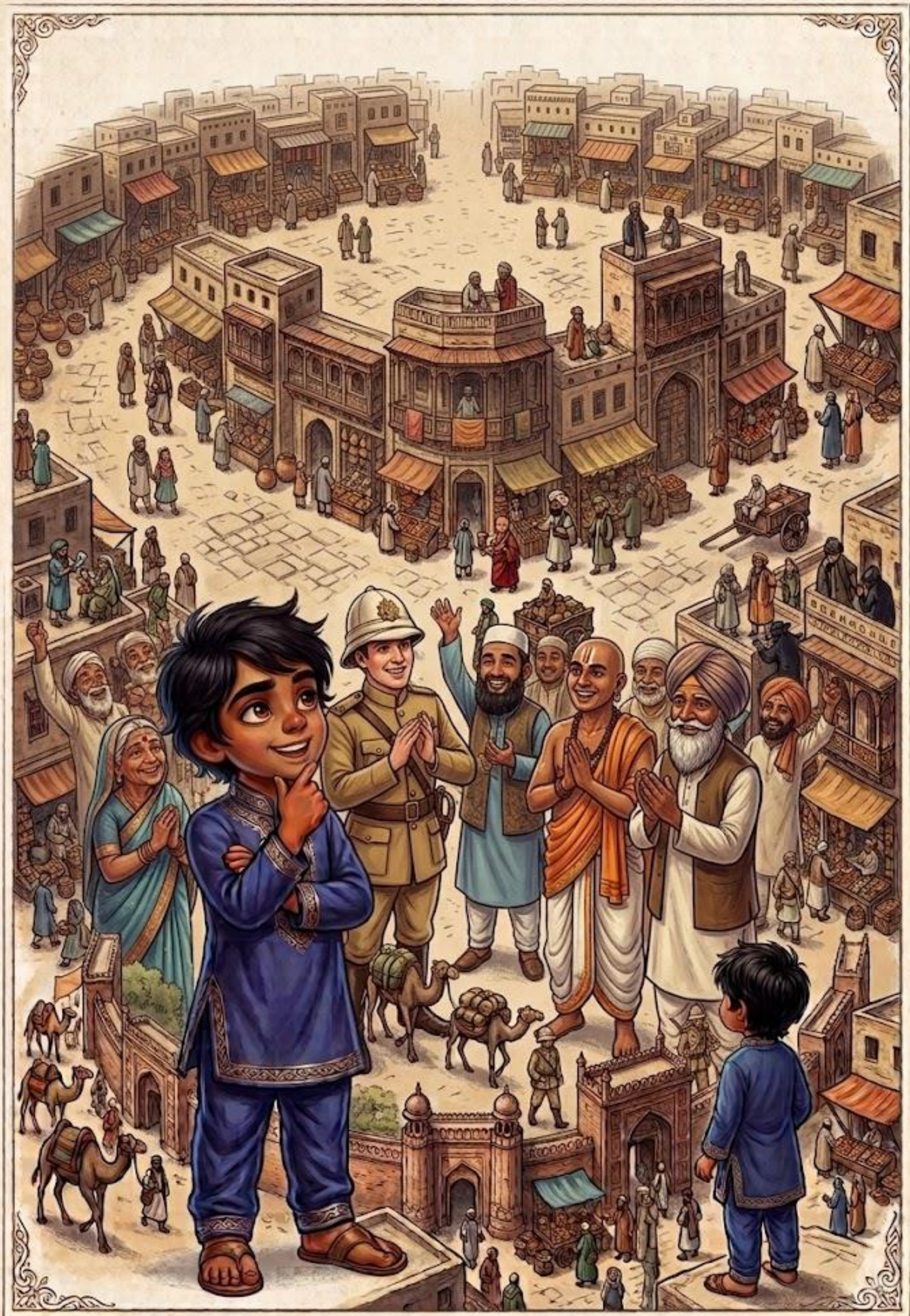



Lahore, Kim
A City of Gardens, Heritage & Festivals
BASANT & KITE FLYING
THOUSANDS OF DIYAS & LAMPS
QATLAMBA COOKING
ANARKALI BAZAR
LAHORI FOOD STREETS
SUFI MUSIC & DHAMAL


LAHORE
BRITISH RAJ
The City of Gardens and Festivals
LAHORE
ANARKALI
BAZAR
QATLAMBA
LAHORI TASTE


GAMES
OF
INDIA
GULLI DANDA
PITTHU GARAM
BANTE / MARBLES
STAPOO / HOPSCOTCH
7
4
3
2
1
KIKLI
KABADDI
KOKLA CHHAPAKI / HIDE & SEEK
LUKAN MEETI

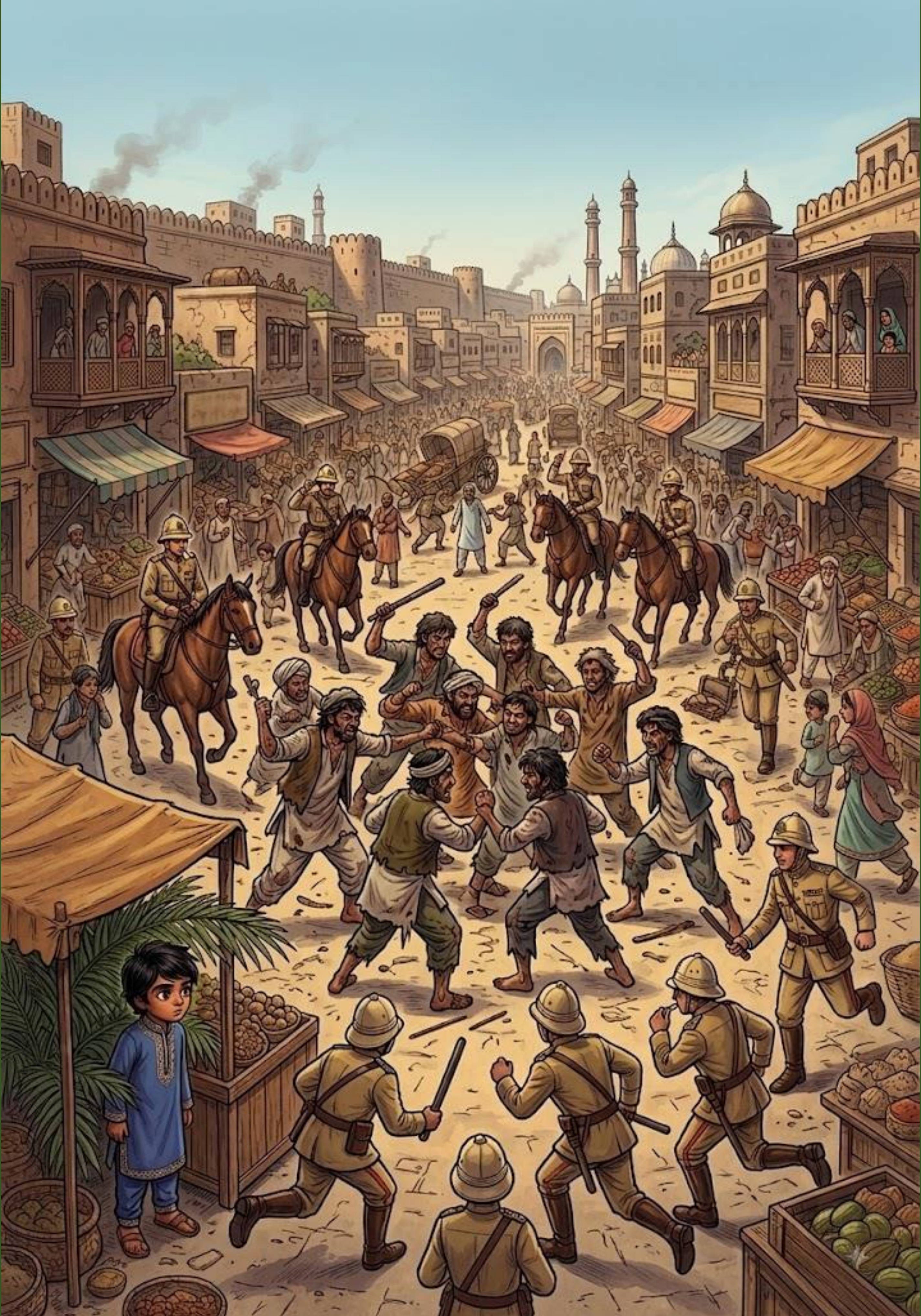
लोग उससे मोहब्बत करते और उसे छोटा महबूब-ए-आलम (सारे संसार का छोटा दोस्त) कहते।



कभी-कभी किम महत्वपूर्ण लोगों के लिए शानदार और महत्वपूर्ण काम भी अंजाम देता। उसे मालूम था कि ये दरअसल जासूसी के काम हैं।



जब से उसने होश संभाला था, दुनिया में मौजूद बुराइयाँ उसकी नज़र में आ गई थीं। लेकिन जासूसी वगैरह के फ़र्ज़ अंजाम देना उसे पसंद था।



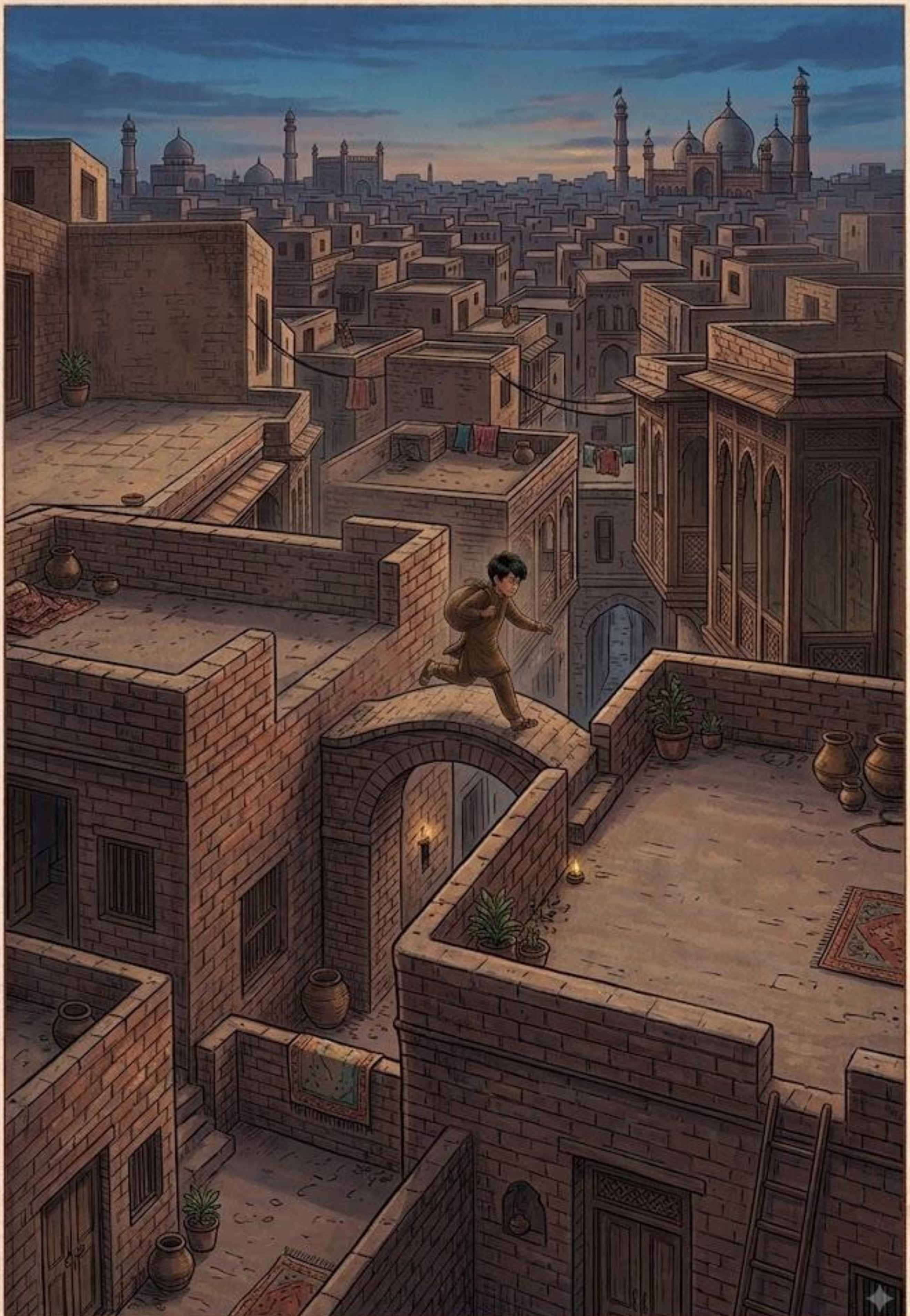
गलियों से वह गुज़रता जो सुनसान और अंधेरी होतीं।



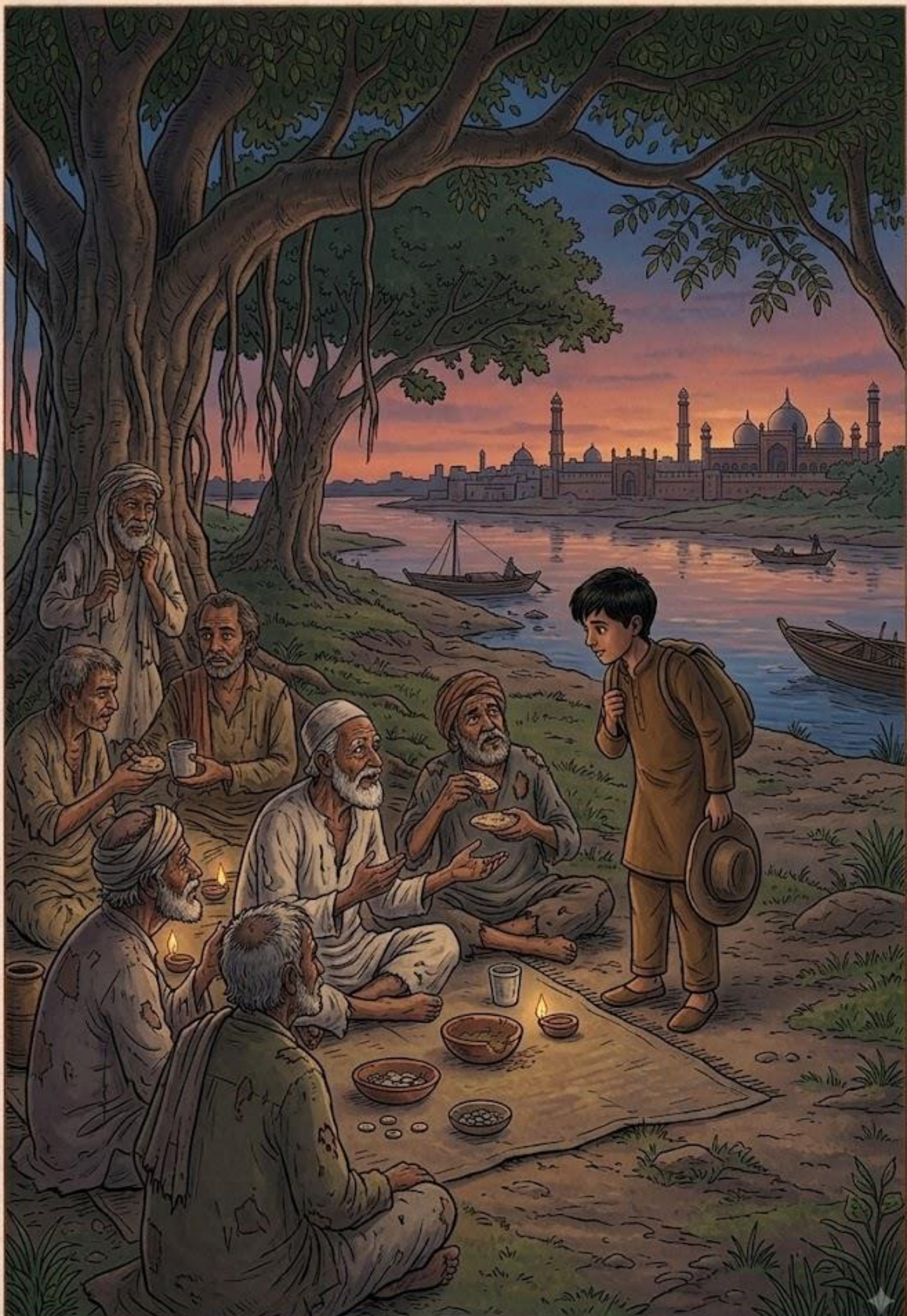
छतों पर बैठी हुई औरतें उसे बातें करती हुई सुनाई देतीं।



कभी-कभी गर्म मौसम में वह अपना लंबा रास्ता सिर्फ घरों की छतें फांदते हुए ही पार कर लेता।



दरिया-ए-रावी (रावी नदी) के किनारे पेड़ों के नीचे बैठे फ़कीरों से भी वह खूब वाकिफ़ था। भीख मांगने के बाद जब वे वापस आते तो किम उनसे सलाम-दुआ करता और उन्हें एक साथ खाना खाते हुए देखता।



उसकी देख-भाल करने वाली औरत उससे रोते हुए कहती कि किम, तुम्हें अंग्रेजों वाले कपड़े और उसी तरह के जूते और टोपी भी पहननी चाहिए। मगर किम जब किसी खुफिया जासूसी के अभियान पर जाता तो लोगों की नज़र से बचने के लिए गरीबों, मुसलमानों या हिंदुओं का लिबास पहन लेता।



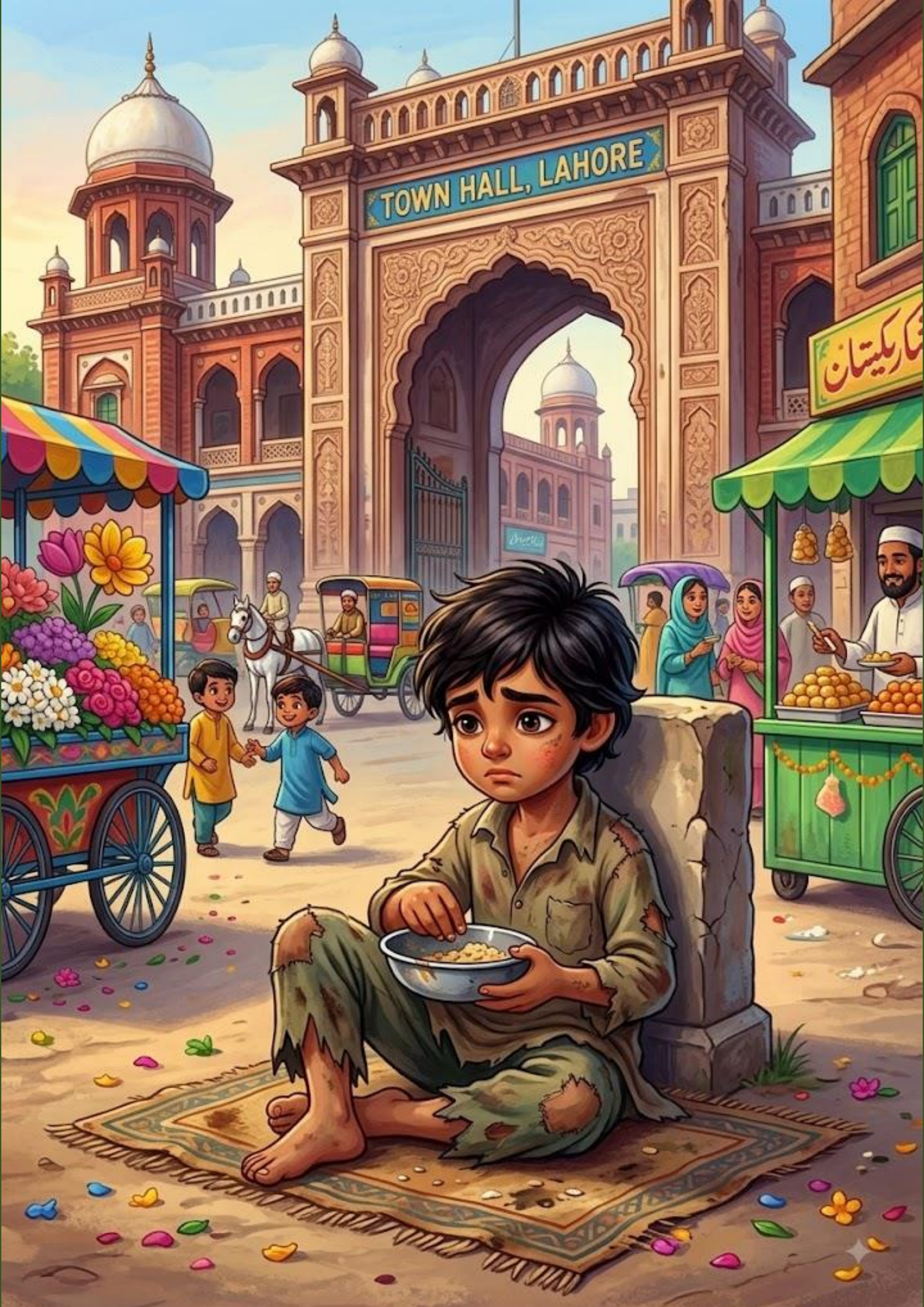
एक फैशनेबल युवा आदमी ने उसे हिंदू लड़के की पूरी पोशाक (कपड़े) दी थी, मगर अफसोस एक रात तीव्र भूकंप आया और कुएं के अंदर से उस व्यक्ति की लाश मिली। किम ने पंजाब हाई कोर्ट के पास नीला राम के लकड़ियों के गोदाम में उन कपड़ों को लकड़ियों के बीच एक खुफिया जगह पर छुपाया हुआ था।


TIMBER GODAM
PUNJAB HIGH COURT
LAHORE

खास मौकों पर जब किसी मिशन पर जाता, हिंदू त्योहार या शादी का समारोह होता, तो किम उन कपड़ों को पहनता।



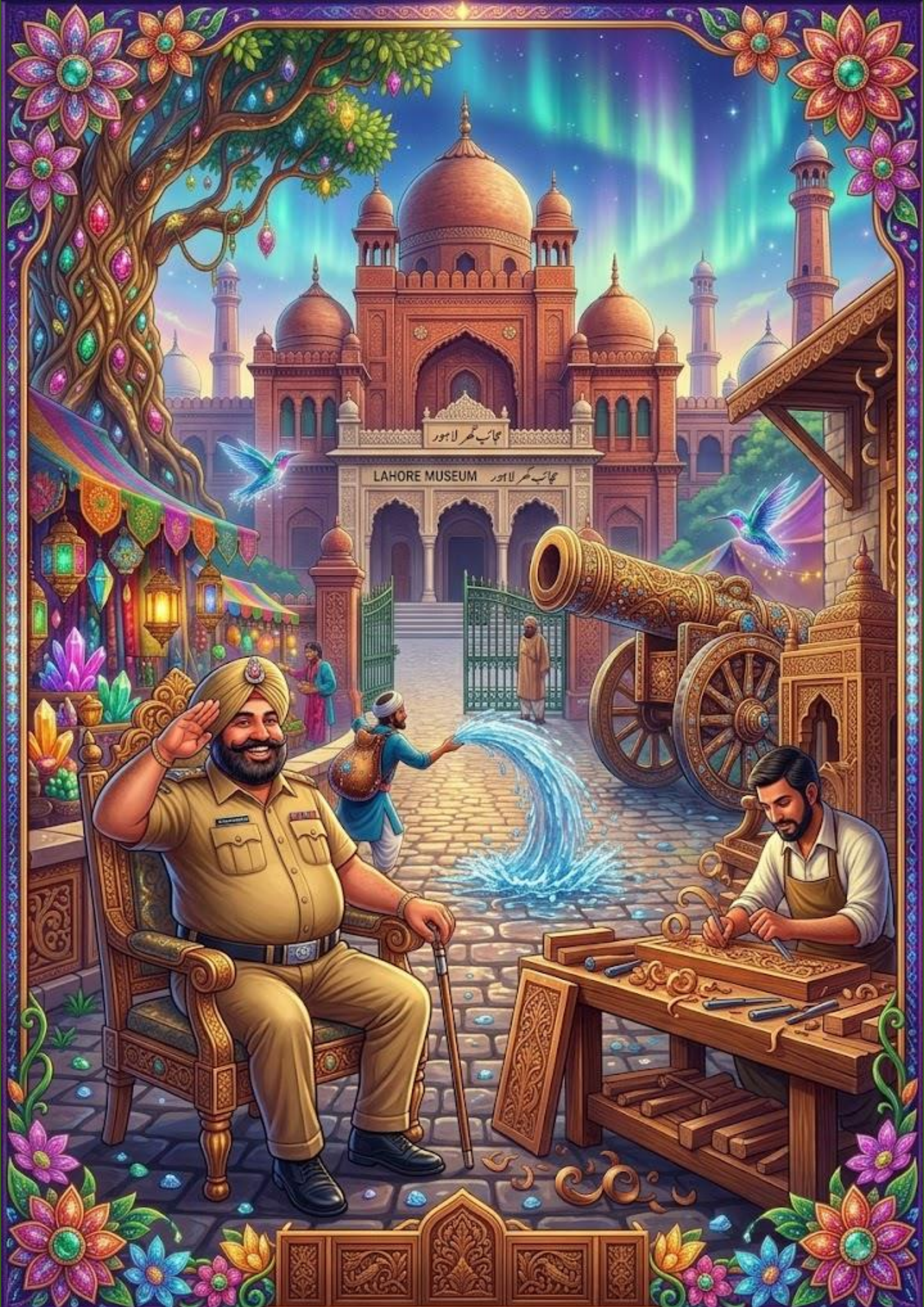
गरीब किम को कभी घर में खाना मिल जाता और कभी वह अपने हिंदू और मुसलमान दोस्तों के साथ ही मांगकर खाना खा लेता।


TOWN HALL, LAHORE

ज़मज़मा तोप के ऊपर बैठा हुआ किम अपने दोस्तों छोटा लाल और मिठाई वाले के बेटे अब्दुल्लाह के साथ खेल में व्यस्त था।


KIM'S BATTLE: RIVALS
PUSHED FROM THE ZAMZAMA

अजायबघर की हिफाजत करने वाले पंजाबी सिपाही को किम ने कुछ कहकर छेड़ा। जिसने बर्दाश्त करते हुए गुस्से का इजहार बड़बड़ाकर किया क्योंकि वह किम को उसी तरह बहुत पहले से जानता था जिस तरह सूखी सड़कों पर पानी छिड़कने वाला माशकी जानता था। जिस तरह अजायबघर का बढ़ई जवाहर सिंह उसे जानता था। मगर दूर-दराज से आए हुए अजनबी जो अजायबघर देखने आते थे, वे किम को नहीं जानते थे। हर अमीर और गरीब को अजायबघर में जाने की इजाजत थी और वहां का निगहबान वहां मौजूद अजायबों के बारे में और जानकारी भी दे सकता था।



عجائب گھر لاہور
LAHORE MUSEUM عجائب گھر لاہور

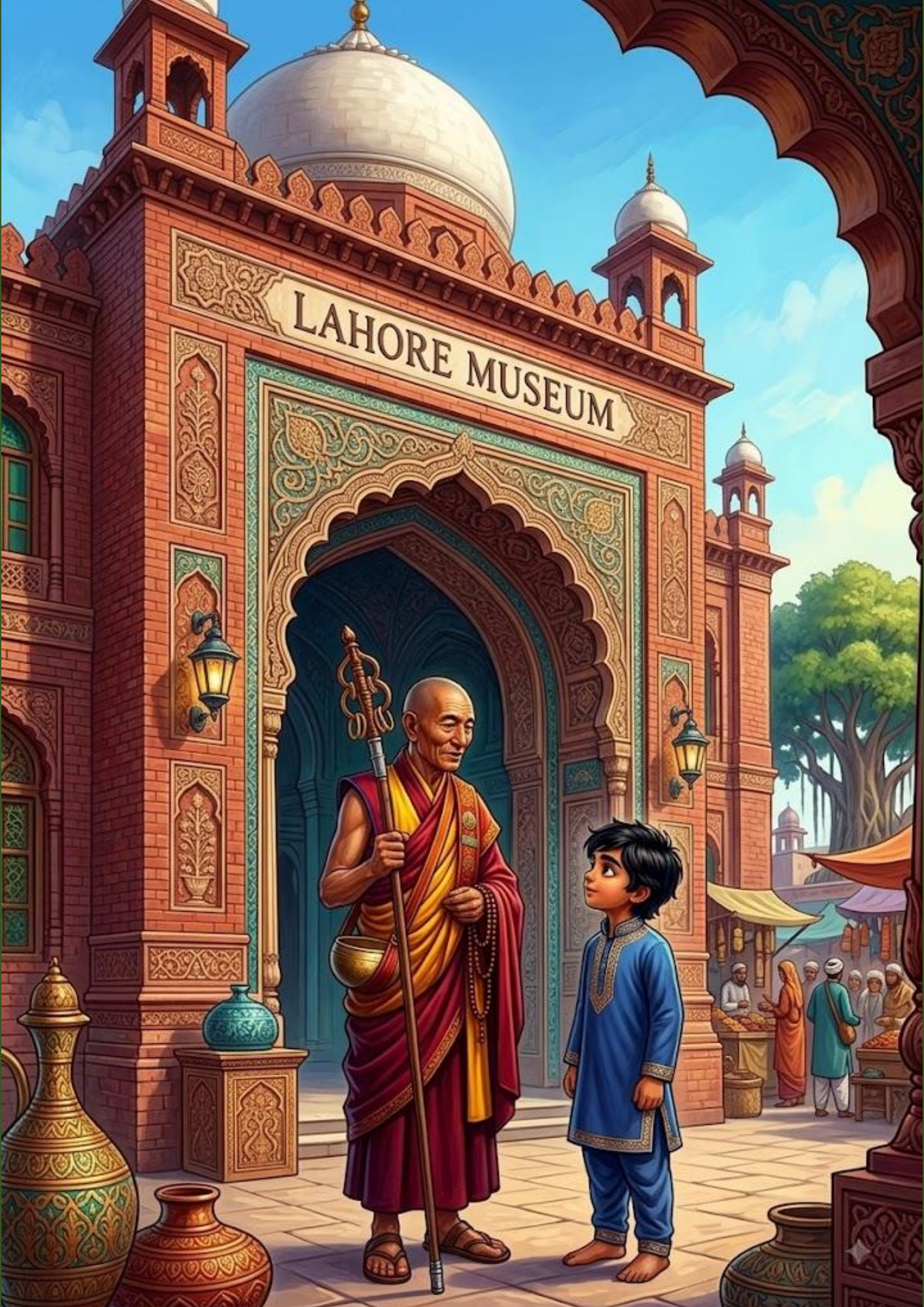
तोप के बड़े पहिए पर चढ़ते हुए अब्दुल्लाह ने कहा कि मुझे भी ऊपर आने दो। जिस पर किम ने मजे लेते हुए उसे तंग किया कि तुम्हारे अब्बू तो पेस्ट्रियां बनाते थे और तुम्हारी अम्मी घी चुराती थीं। मुसलमानों से तो यह तोप बहुत पहले छीनी जा चुकी है। अच्छे और कीमती कपड़े पहने हुए छोटा लाल ने ऊपर आने की कोशिश की। हालांकि उसका बाप बहुत दौलतमंद इंसान था, मगर इंडिया में अमीर और गरीब बच्चे एक साथ खेल सकते थे।

किम ने उसे भी यह कहते हुए ऊपर आने की इजाजत न दी कि हिंदुओं से भी यह छीनी जा चुकी है। मुसलमानों ने उनसे छीनी। फिर उसे छेड़ा कि तुम्हारे अब्बू तो पेस्ट्रियां बनाने वाले थे।


KIM'S BATTLE: RIVALS
PUSHED FROM THE ZAMZAMA

मगर किम ने मोती बाज़ार की तरफ से आते हुए एक शख्स को देखा तो अपनी बात को बीच में ही छोड़ दिया। किम, जो हर जात और हर नस्ल के इंसान से वाकिफ था, उसने ऐसा शख्स पहली बार देखा था। बहुत लंबे कद का, छह फुट के करीब। ऐसे कपड़ों में मलसूस, जिनसे किम अंदाजा नहीं लगा सका कि वह शख्स क्या करता होगा। हां, जिस्म पर मौजूद चीजों से अंदाजा होता था कि वह धार्मिक इंसान है। बाज़ार में जूते बनाने वाला जो चीनी शख्स था, यह उसी की तरह लगता था। किम ने अपने दोस्तों से कहा कि देखो-देखो, यह आदमी कौन है। अब्दुल्लाह ने हैरानी से उसे देखते हुए मुंह में उंगली दबाई और कहा कि यह इंसान लगता है। किम ने जवाब दिया कि हां-हां, यकीनी तौर पर इंसान है, लेकिन इंडिया का तो नहीं लगता। मैंने तो पहले ऐसा शख्स नहीं देखा। छोटा लाल ने कहा कि देखो, वह अजायबघर के अंदर जा रहा है।

पुलिस वाले ने उस शख्स से पंजाबी में कहा कि मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सकता, फिर किम से कहा कि सारी दुनिया के छोटे दोस्त, तुम इससे पूछो कि यह क्या कहना चाहता है। तोप से नीचे छलांग लगाते हुए किम ने कहा, ठीक है, इसे मेरे पास भेजो। यह किसी दूसरे मुल्क से आया है और तुम बिल्कुल भैंसे की तरह हो। मजबूरी की हालत में वह शख्स लड़कों के पास आया। उसके जिस्म पर मौजूद चीजें बता रही थीं कि वह पहाड़ी इलाके से आया है।


LAHORE MUSEUM

बहुत अच्छी उर्दू बोलते हुए उसने पूछा, "बच्चों, यह बड़ी इमारत किस चीज़ की है?" किम, जो बड़ी उम्र के लोगों से बात शुरू करने से पहले लाला, मियां वगैरह लगाने का आदी था, उसने आदमी को कोई उपाधि दिए बिना कहा कि यह अजायबघर है। उसने पूछा कि क्या इसमें जा सकते हैं?

"हां, बाहर लिखा हुआ है कि हर शख्स को अंदर जाने की इजाजत है।"

"क्या बगैर पैसों के अंदर जाने की इजाजत है?"

किम ने कहा कि मैं तो बिल्कुल दौलतमंद नहीं हूं और अंदर जाता रहता हूं।

आदमी ने कहा, "मैं बूढ़ा शख्स हूं और मुझे इस बारे में ज्ञान नहीं है।"

किम ने उससे पूछा कि आपकी जात क्या है, आपका घर कहां है, क्या आप बहुत दूर से आए हैं?

उस शख्स ने कहा कि हां, मैं बहुत दूर और पहाड़ों के इलाके से आया हूं जहां हवा साफ और पानी ठंडा होता है।

बाज़ार में जूते बनाने वाले चीनी ने एक बार अब्दुल्लाह को जूतों पर थूक फेंकने पर बुरा-भला कहा था, इसीलिए उसने कहा कि यह तो चीनी है। छोटा लाल ने कहा कि यह पहाड़ी है, जिस पर उस शख्स ने जवाब दिया कि मैं पहाड़ी नहीं हूं। तिब्बत से मेरा ताल्लुक है, मैं दरअसल लामा हूं जिसे आपकी ज़बान में गुरु भी कहते हैं।

किम ने कहा, "तो आप तिब्बत से आए हुए गुरु हैं। आप जैसा इंसान मैंने जिंदगी में पहली बार देखा है। क्या वहां भी हिंदू होते हैं?" उस आदमी ने जवाब दिया कि हम दरमियानी रास्ते पर चलने वाले लोग होते हैं जो अमन से जिंदगी गुजारते हैं। मैं अपनी वफात से पहले चार पवित्र जगहों की यात्रा करने के लिए निकला हूं। उसने प्यार से बच्चों की तरफ देखा और कहा कि मैं बूढ़ा इंसान हूं और आप बहुत कम उम्र, तो क्या आपका ज्ञान मेरे जितना हो सकता है?

किम ने उससे पूछा कि क्या आपने खाना खाया है?

उसने मांगने का बर्तन (कश्कोल) दिखाया, जिसे सब लड़के जानते थे और कहा कि मुझे अभी भूख नहीं लगी। फिर कहा कि क्या लाहौर के इस अजायबघर के अंदर पवित्र हस्ती की तस्वीरें और मूर्तियां भी हैं? अब्दुल्लाह ने कहा, "हां यह सच है, तुम्हारे जैसे बुतपरस्त काफिरों के अंदर बहुत सारी मूर्तियां मौजूद हैं।" किम ने जवाब दिया कि इसकी बातों का बुरा न मानें। यह अजायबघर तो सरकार की मिल्कियत है, आप मेरे साथ चलें, मैं आपको अंदर से दिखाता हूं।

हिंदू छोटा लाल ने धीमी आवाज में कहा, "बच के रहो, अजनबी लोग बच्चों को अगवा कर लेते हैं।" और मुसलमान अब्दुल्लाह ने कहा कि यह अजनबी भी है और बुतपरस्त भी। जिस पर किम ने हंसते हुए कहा, "यह इस इलाके में नए हैं। तुम लोग अपनी अम्मी की गोद में चले जाओ, वही तुम्हारे लिए सुरक्षित जगह है।"

उस शख्स ने किम के पीछे चलना शुरू किया और बुद्ध की विशालकाय मूर्तियों को देखकर हैरान-परेशान खड़ा रहा। बहुत बड़ी संख्या में ये मूर्तियां वहां मौजूद थीं जो इस अजायबघर की शान थीं। हैरानी और सम्मान से वह लामा हर एक मूर्ति और तस्वीरों को देख रहा था, जिनमें बुद्ध और उनके अन्य करीबी साथियों की मूर्तियां भी मौजूद थीं। उनको देखता और अनायास ही मुंह से पवित्र शब्द निकलने लगते— कितना महान दिन है, मेरी पवित्र यात्राओं की शुरुआत बहुत अच्छी हुई है!

किम ने उसका परिचय अजायबघर के अंग्रेज संरक्षक अधिकारी से करवाया। दोनों ने प्रणाम/अभिवादन किया। अजायबघर के संरक्षक ने लामा का स्वागत किया और उसे अपने दफ्तर में ले गया। बूढ़ा लामा इस तरह कांप रहा था जैसे उसने खजाना खोज लिया हो। देर तक वह अजायबघर के संरक्षक से बातचीत करता रहा।



लामा के अजायबघर से लौटने के बाद, तोप के पास सिपाही के मना करने के बावजूद किम ने लामा को वहां आराम करवाया। पास के घरों से अच्छा खाना मांगकर लाया जो लामा ने खाया। लामा के सोने के बाद किम वहां से चला गया और अपना पहनावा बदल लिया। अब वह एक हिंदू बच्चे की तरह खुद को पूरी तरह बदल चुका था।

लामा ने जागने के बाद अपने चेले को वहां न देखा तो बेहद परेशान नजर आया और कहने लगा कि मेरा नया चेला मेरी मदद के लिए आया था। उसने मुझे रास्ता दिखाया, अजायबघर दिखाया और जब मैं भूखा था तो मेरे लिए खाना लाया। उसकी मदद से मुझे पवित्र नदी की खोज भी करनी थी, मगर वह न जाने कहां चला गया।

किम ने लामा से पूछा कि आपका चेला किस देश का, किस इलाके का था? मुसलमान, हिंदू, सिख या जैन था? ऊंची जात से था या नीची जात से?

लामा ने जवाब दिया कि हम दरमियानी रास्ते को मानते हैं, न कोई नीचा होता है और न ऊंचा।

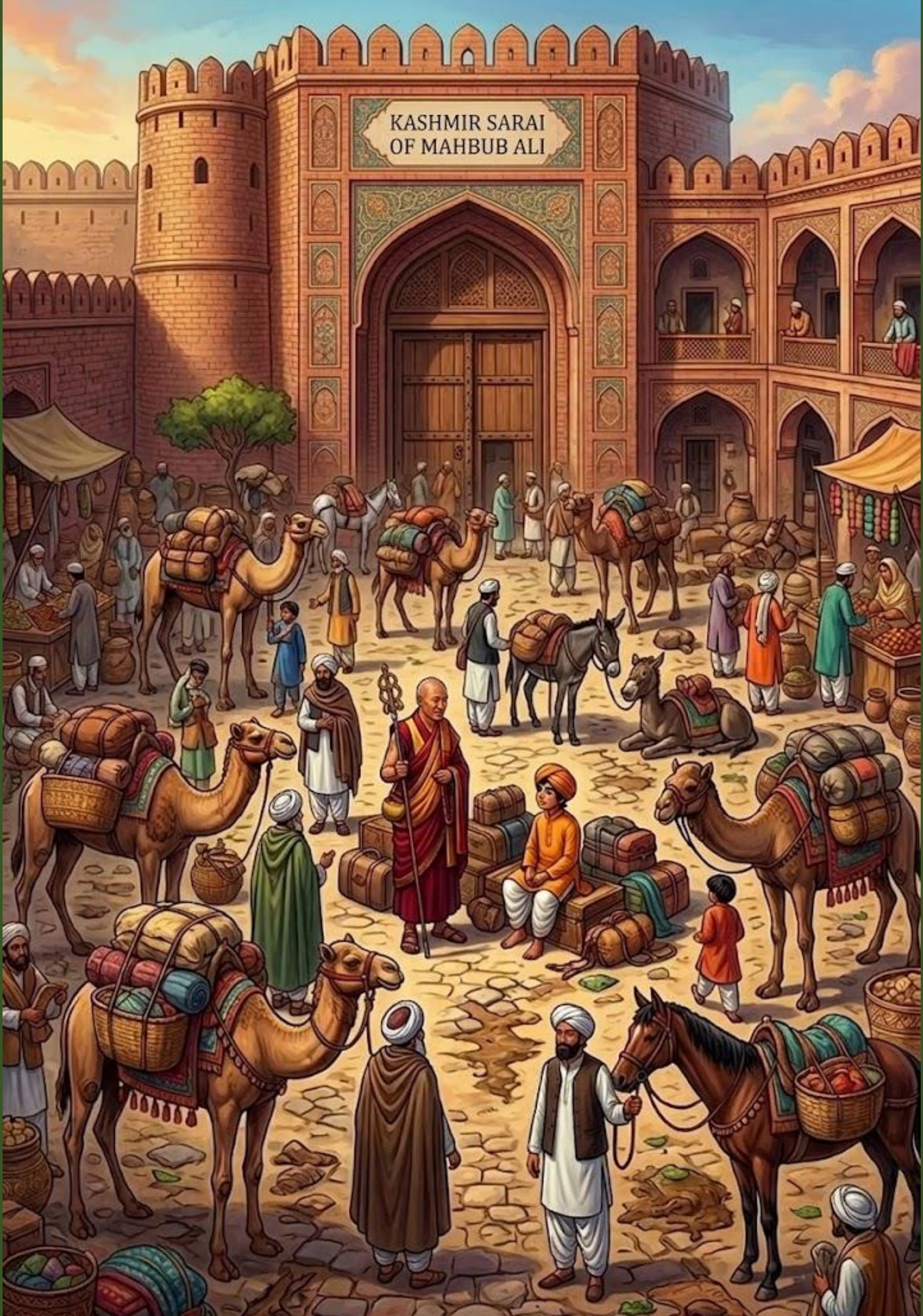
किम ने लामा की परेशानी दूर की और कहा कि मैं ही आपका चेला हूं। आप बहुत अच्छे इंसान हैं और मैं अब आपके साथ बनारस जाऊंगा और मिलकर पवित्र नदी की खोज करेंगे। दरअसल मुझे भी किसी चीज़ की तलाश है— एक हरे-भरे मैदान में लाल बैल की, जहां मेरी मदद की जाएगी। हम दोनों शायद अपने मकसद में कामयाब हो जाएं।


LAHORE MUSEUM

लामा ने जब उसी वक्त बनारस जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की, तो किम ने कहा कि रात में चोर भी होते हैं और दूसरे खतरे भी, हम कल सुबह सफर की शुरुआत करेंगे। लामा के पूछने पर कि रात कहां गुज़ारेंगे, किम ने जवाब दिया— कश्मीर सराय में, जो रेलवे स्टेशन के पास एक बड़ी और खुली जगह थी।

घोड़ों और ऊंटों के काफिले जब दूर-दराज़ मध्य एशिया के देशों (ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान वगैरह) से सफर करते हुए यहां आते, तो इसी जगह ठहरकर आराम करते थे। यहां हमेशा ऐसे मुसाफिरों की भीड़ रहती जो बहुत दूर उत्तर के पहाड़ों से लाहौर काफिलों की शक्ल में आते थे। लामा ने इतना बड़ा शहर और लोगों का हुजूम पहले कभी नहीं देखा था। बाज़ार रोशनियों से जगमगा रहे थे और हर रंग व नस्ल के लोग वहां मौजूद थे। लामा को यह सब कुछ किसी ख्वाब की तरह लग रहा था। यात्रियों से खचाखच भरी हुई ट्राम गाड़ी के बार-बार ब्रेक लगाने की आवाज़ से बुजुर्ग लामा परेशान हो चुके थे।

रेलवे स्टेशन के पास सराय बहुत बड़ी जगह थी। उत्तर के काफिलों के ऊंट, खच्चर और घोड़े पास ही बंधे हुए थे। कुछ पर सामान के गट्ठर लादे जा रहे थे, तो कुछ से उतारे जा रहे थे।


KASHMIR SARAI
OF MAHBUB ALI

सराय का मालिक महबूब अली खुद भी अफगानिस्तान से ताल्लुक रखता था और ढलती उम्र को छुपाने के लिए दाढ़ी को लाल रंग से रंगे रखता था। उसे किम की अहमियत मालूम थी जो अब तेरह साल का था और पिछले तीन साल से महबूब अली के लिए जासूसी और इसी तरह के दूसरे काम अंजाम दे रहा था। महबूब अली प्यार से किम को छोटा महबूब-ए-आलम कहता था, यानी ऐसा लड़का जिसकी पूरी दुनिया से दोस्ती थी। महबूब अली ने एक बार किम को एक आदमी का पीछा करने को कहा ताकि यह देख सके कि पूरे दिन उस आदमी ने क्या-क्या किया और किस-किस से मुलाकात की। किम ने उस शख्स की पूरे दिन जासूसी की और रात को महबूब अली ने बहुत गौर और तवज्जो से किम की एक-एक बात सुनी। किम को यह तो मालूम न था कि यह सब क्यों किया गया, लेकिन ऐसे काम करने पर सराय का मालिक महबूब अली किम को बेहतरीन खाना खिलाता और कभी-कभी पैसे भी दे देता था।



महबूब अली अपनी सराय में मौजूद था, आरामदायक बिस्तर पर हुक्का पीते हुए। किम उसके सामने नहीं आया और लामा को आगे कर दिया। महबूब अली ने उसे देखा तो हैरान होकर कहा, "अल्लाह! यह क्या! बहुत दूर पहाड़ों पर रहने वाला लामा लाहौर में? बूढ़े आदमी, तुम यहाँ कैसे आ गए?" जिस पर लामा ने भीख का कटोरा उसके आगे कर दिया।

महबूब अली ने कहा, "मेरे नौकरों के पास जाओ, उनमें से तुम्हें मानने वाला भी होगा और तुम्हारा ज़रूर ख्याल रखेगा, खाना भी देगा।"

अब किम महबूब अली के पास आया। हिंदू लड़के के लिबास में उसे देखकर महबूब अली ने कहा, "मेरे नौकरों में हिंदू भी हैं, उनके पास जाओ वे तुम्हें खाना दे देंगे।"

किम ने अपनी असली आवाज़ में बताया कि वह किम है और बूढ़े लामा के साथ उसका चेला बनकर बनारस जा रहा है।

महबूब अली ने कहा, "किम! तुमने कभी मुझसे झूठ नहीं बोला।" उसने लामा को बुलाया, उससे सवाल किए और किम की सच्चाई साबित हो गई।

महबूब अली कुछ देर सोचता रहा, फिर बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "तुम बनारस जा रहे हो, अंबाला रास्ते में पड़ता है। तुम्हें एक अंग्रेज़ अफ़सर को मेरा संदेश पहुँचाना है। दरअसल वह एक सफ़ेद घोड़े से संबंधित है। पिछले साल अंग्रेज़ अफ़सर ने उसे खरीदने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी।" महबूब अली ने किम को अंग्रेज़ अफ़सर का हुलिया और जगह के बारे में बताया और कहा कि "उसे संदेश देना कि सफ़ेद घोड़े की नस्ल अब पूरी तरह तैयार है। वह अफ़सर सबूत माँगेगा कि तुम्हें वाकई मैंने भेजा है, तो तुम बताना कि महबूब अली ने सबूत भी भेजा है जो मैं तुम्हें दूँगा।"

उसी समय एक साया उनके करीब से गुज़रा तो महबूब अली ने फ़ौरन बात बदलकर बुलंद आवाज़ में कहा, "अल्लाह! तुम दुनिया में अकेले यतीम तो नहीं जिसके माँ-बाप मर चुके हैं? तुम जैसे दूसरे बहुत से भिखारी भी हैं।" फिर किम को कुछ पकड़ाकर कहा, "दूसरे नौकर बच्चों के साथ लेट जाओ, कल मैं तुम्हें नौकरी दूँगा।"

जो रोटी महबूब अली ने किम को पकड़ाई थी उसके अंदर एक टिशू पेपर मौजूद था और चाँदी के तीन सिक्के जो उसका इनाम था। अपने गले में लटके हुए तावीज़ नुमा पर्स में किम ने ये चीज़ें रख लीं।

किम को घोड़ों के बारे में बताई हुई कहानी पर यक़ीन न था, मगर वह यह भी नहीं जानता था कि मामला बेहद गंभीर है और महबूब अली अपने घोड़ों के शानदार कारोबार के अलावा अंग्रेज़ सरकार के लिए जासूसी भी करता है। हालाँकि वह घोड़ों का व्यापार कर रहा होता, मगर दूर-दराज़ के पहाड़ी इलाकों में सफ़र के दौरान जायज़ा लेकर सरकार को रिपोर्ट देता जिसे देखकर अंग्रेज़ सरकार आगे के कदम उठाती। इंडियन सर्वे डिपार्टमेंट के गुप्त दस्तावेज़ों में "सी-25" (C-25) के नाम से वह पंजीकृत (रजिस्टर्ड) है।



पहाड़ी इलाके में सफर के दौरान महबूब अली के काफ़िले पर कुछ दिन पहले हमला किया गया। उसका ख्याल था कि यह उन पाँच हुक्मरानों ने करवाया है जो ब्रिटिश सरकार के खिलाफ थे और जिन्हें शक था कि महबूब अली के काफ़िले उनकी जासूसी करके जानकारियाँ भारत में मौजूद ब्रिटिश सरकार तक पहुँचाते हैं।

अब महबूब अली के पास एक ऐसी अहम खबर थी जिसे वह एक घंटा भी ज़ाया किए बिना अधिकारियों तक पहुँचाना चाहता था। यह खबर टिशू पेपर पर मौजूद बारीक छेदों के ज़रिए दी गई थी, यानी पाँच राजा सरकार के खिलाफ हैं। जिनकी मदद पेशावर में एक हिंदू बैंक और दक्षिण में एक मुसलमान शासक के अलावा बेल्जियम की हथियारों की एक कंपनी भी कर रही है।

महबूब अली के दुश्मन उस पर नज़र रखे हुए थे, इसलिए वह खुद अंबाला में मौजूद अंग्रेज़ अफ़सर तक यह अहम जानकारी लेकर नहीं जा सकता था। जब किम उसके पास आया तो उसने उसी के ज़रिए यह काम करवाने का सोचा, क्योंकि एक पहाड़ी लामा और भिखारी गरीब बच्चे पर कोई शक नहीं कर सकता था।



महबूब अली अपनी जिम्मेदारी अच्छे तरीके से पूरी करने के बाद तवाइफ़ों के इलाके में एक खूबसूरत औरत से मिलने गया, जिसका परिचय एक कश्मीरी पंडित ने उससे करवाया था। हालाँकि उसके धर्म में यह मना था, फिर भी औरत ने उसे खूब शराब पिलाई। नशे में वह बोलता रहा, फिर औरत ने उसे मदहोश करने के बाद उसकी तलाशी ली।



The Story of Kim Continued. In the Rich Lahore Room...

चाबियाँ महबूब अली की बेल्ट से निकालकर वहाँ मौजूद दिल्ली के एक शख्स के हवाले कर दीं।



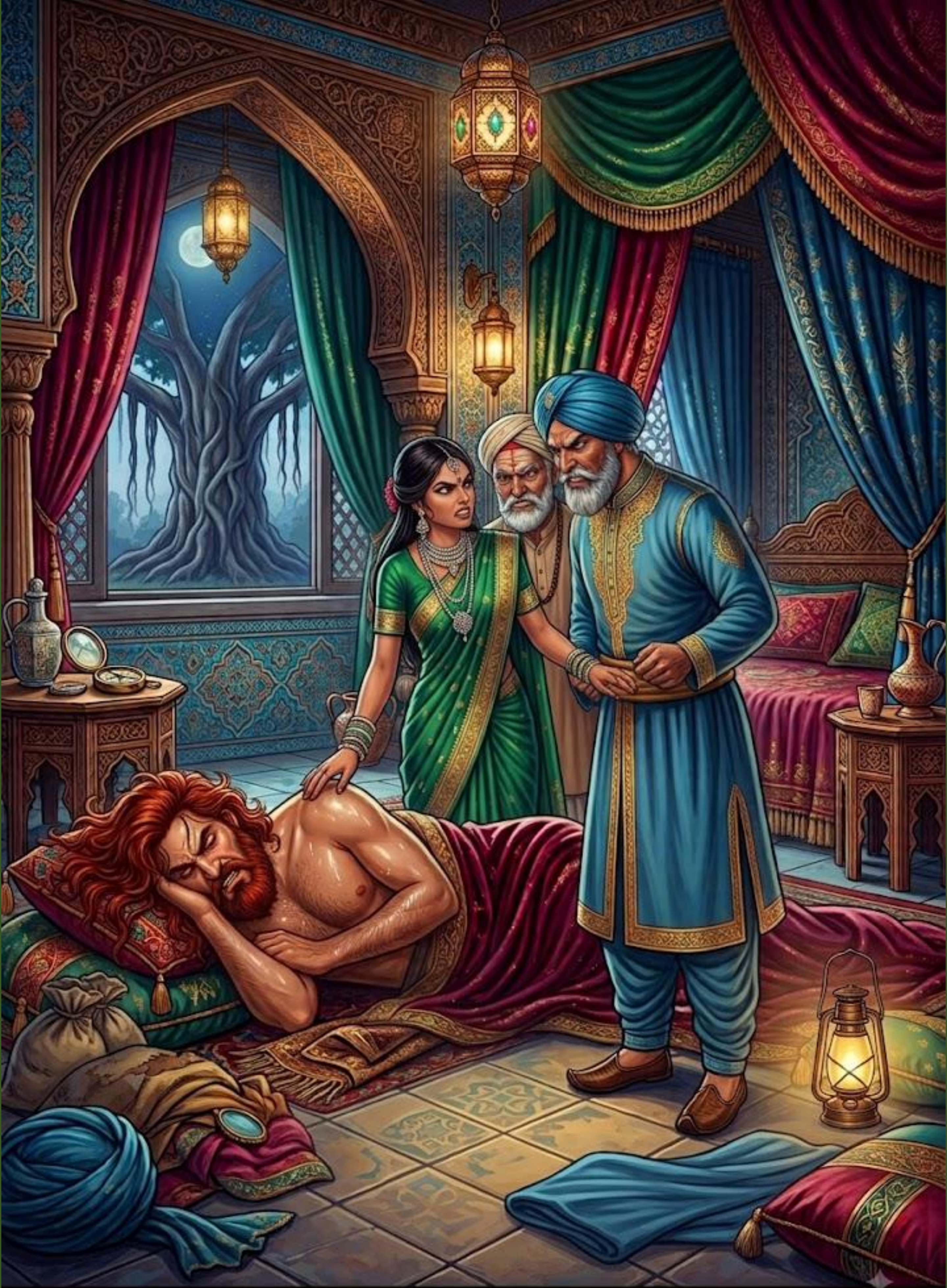
The Story of Kim Continued. In the Rich Lahore Room...

कुछ देर बाद किम ने महबूब अली के खाली कमरे में उसी शख्स को देखा जो चाबियों के साथ मौजूद था। उसने एक-एक चीज़ की तलाशी ली। महबूब अली के जूते भी देखे जिससे किम समझ गया कि यह आम चोर नहीं है, किसी खास चीज़ की तलाश में है। पहले सोचा कि सन्नाटे में चोर-चोर की आवाज़ बुलंद करके पूरी सराय को जगा दे। मगर फिर ज़हन ने कहा—नहीं, खामोश रहो। किम समझ चुका था कि वह शख्स जो कुछ तलाश कर रहा है, वह तो उसके पास महफ़ूज़ है और वह एक छेद से यह सब कुछ देखता रहा। मामले की गंभीरता का उसे अंदाज़ा हो गया और रात के अंधेरे में ही लामा को जगा कर कहा कि हमें अभी बनारस की तरफ सफ़र शुरू करना है।



The Story of Kim Continued. Night in the Sarai.

बाद में खूबसूरत औरत और कश्मीरी पंडित बातचीत कर रहे थे। बेहोशी में खर्राटे लेते हुए महबूब अली पर कोहनी रखकर खूबसूरत औरत कहने लगी कि इस बेगैरत घोड़ों के अफगान व्यापारी को घोड़ों और औरतों के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता। जब दिल्ली के आदमी ने बताया कि महबूब अली के कमरे से कुछ नहीं मिला, तो कश्मीरी पंडित ने सोचते हुए कहा कि घोड़ों का व्यापारी कहा गया था, किसी का नाम नहीं लिया गया था। खूबसूरत औरत बोली कि वहाँ तो उतने घोड़ों के व्यापारी जाते हैं जितने पराये कोट में पस्सू होते हैं। सिकंदर खान, नूर अली बेग, फर्रूख शाह, सब के ही काफ़िले जाते हैं। कश्मीरी पंडित ने कहा कि उनके काफ़िले आएँ तो उन पर भी नज़र रखना। खूबसूरत औरत ने महबूब अली का सिर नफ़रत से एक तरफ करते हुए कहा कि मेरा काम तो पैसे कमाना है। फर्रूख शाह तो पूरा रीछ है, अली बेग लापरवाह और फ़ज़ूल इंसान है, और बूढ़े सिकंदर खान पर लानत भेजो। खैर, अब सोना चाहिए क्योंकि यह बेगैरत तो सुबह से पहले नहीं जागेगा।



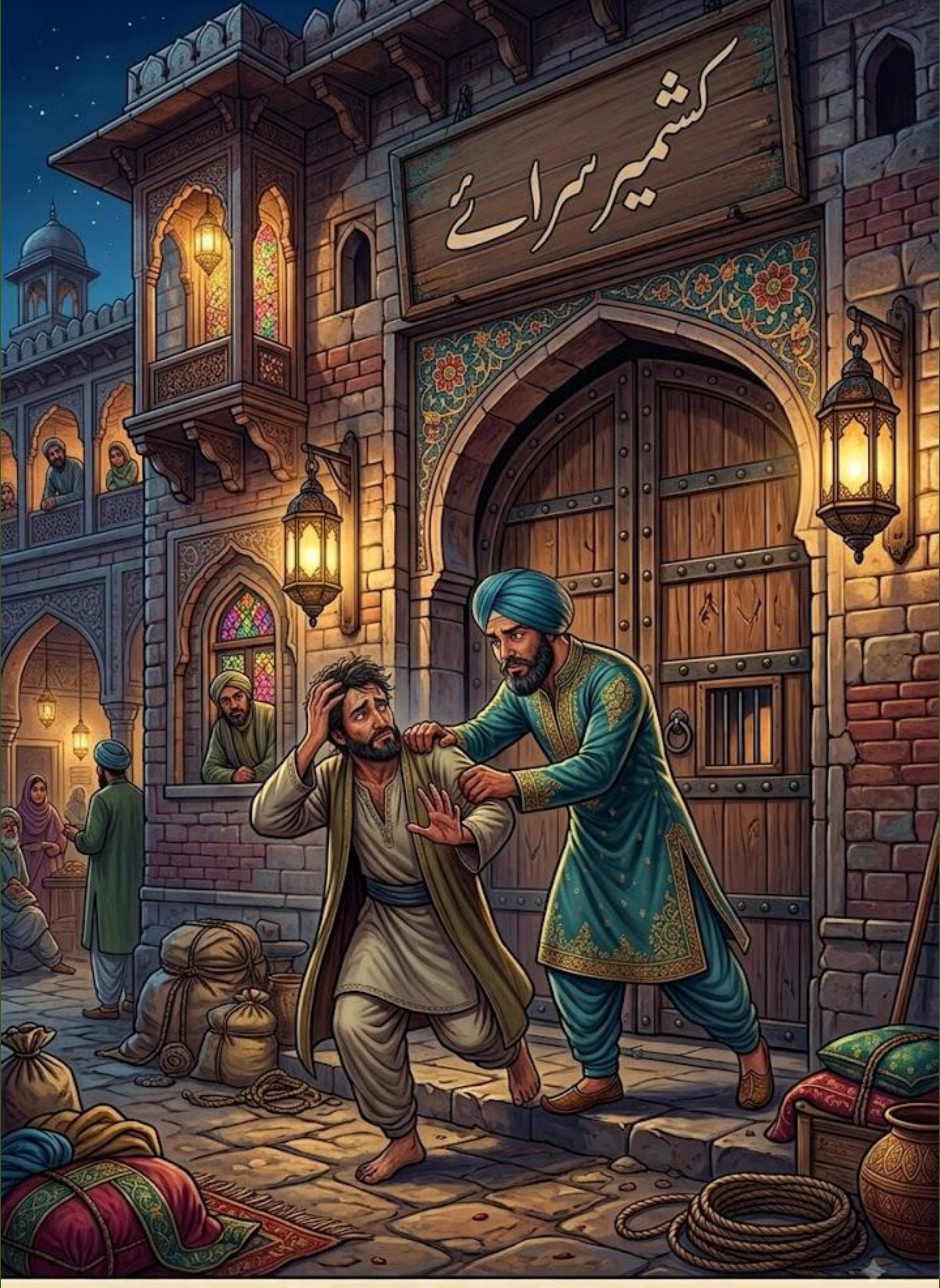
The Story of Kim Continued. In the Palace of Secrets.

सुबह महबूब अली की आँख खुली तो खूबसूरत औरत ने मासूमियत से कहा कि क्या आपको मालूम है शराब कितनी बुरी चीज़ है? तौबा-तौबा, आपने इसे छूकर गुनाह का काम किया है।



The Story of Kim Continued. In the Palace of Secrets.

सुबह महबूब अली ने तारों की रोशनी में सराय की तरफ सफ़र शुरू किया। किम और लामा नज़र न आए तो एक आदमी को जगाकर उनके बारे में पूछताछ की। उसने जवाब दिया कि पागल बूढ़ा रात को ही उठ गया और कहने लगा कि वह बनारस जा रहा है, और लड़का उसे अपने साथ ले गया। महबूब अली ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए दिल में कहा—तमाम काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत, और अपने कमरे में चला गया।

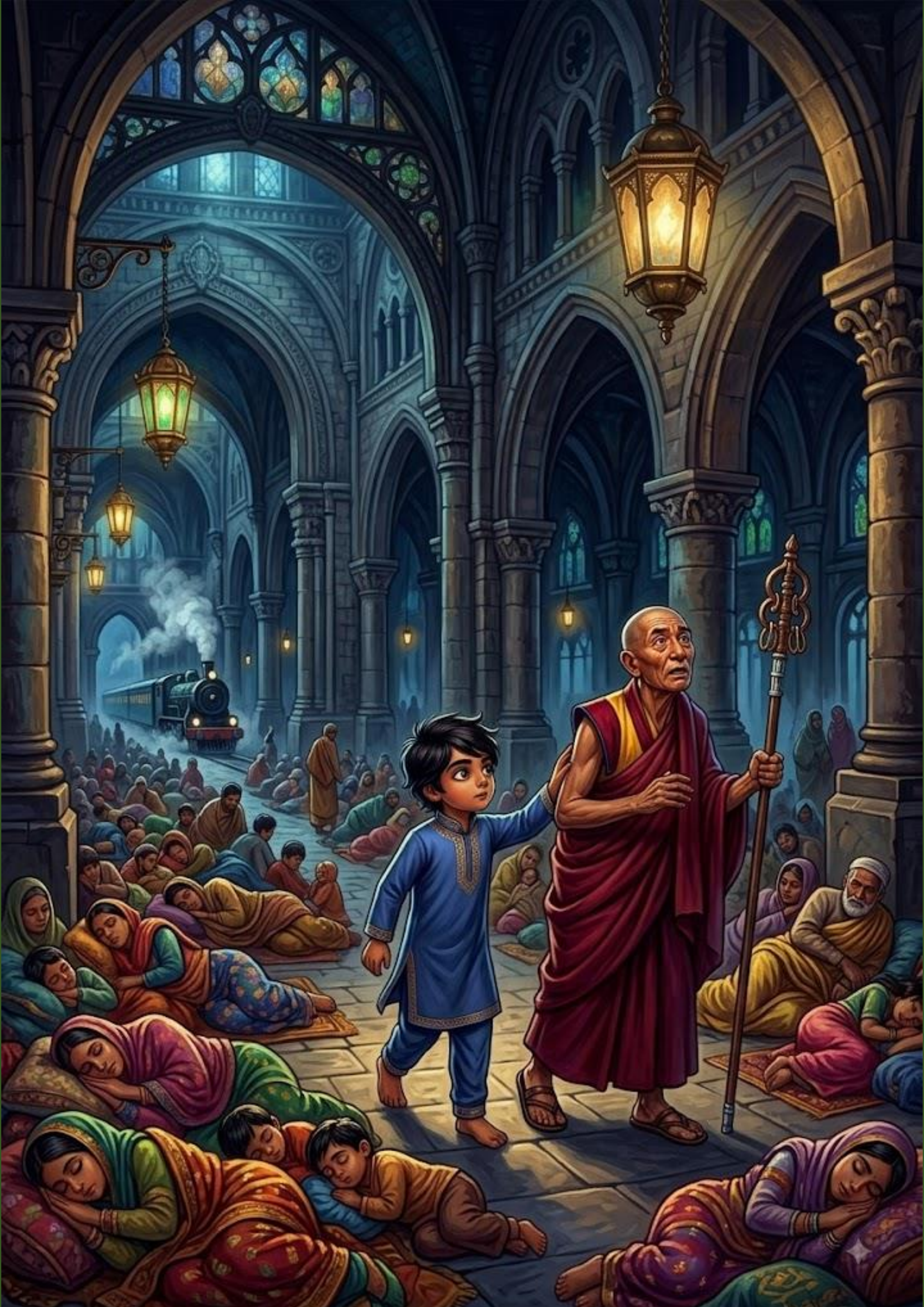


The Story of Kim Continued. In the Palace of Secrets.

किम और लामा रेलवे स्टेशन पहुँचे जो रात के अंधेरे में एक किले की तरह दिखाई दे रहा था। लामा उसे देखकर डर गया और बोला कि यह तो किसी शैतान का बनाया हुआ लगता है। रेलवे स्टेशन के थर्ड क्लास यात्री जगह-जगह लेटे हुए ट्रेन का इंतज़ार कर रहे थे। जब किम ने कहा कि अब हम अंबाला के टिकट लेंगे तो लामा ने कहा कि हमें तो बनारस जाना है। किम ने उसे तसल्ली दी। रात के वक्त ट्रेन आई तो सोए हुए यात्री जाग उठे और हर तरफ अफ़रा-तफ़री मच गई। लामा ने किम को टिकट के लिए बहुत सारे रुपये दिए तो उसकी सादगी और सच्चाई ने किम के दिल पर गहरा असर डाला।

किम ने अंबाला का टिकट माँगा तो टिकट वाले ने नींद की हालत में बड़बड़ाते हुए जो टिकट किम की तरफ फेंका वह सिर्फ छह मील दूर अगले स्टेशन का था। किम ने उससे कहा कि तुम गाँव से आए हुए लोगों को बेवकूफ बना सकते हो, लेकिन मैं तो लाहौर शहर का रहने वाला हूँ। बाबूजी, अंबाला का सही टिकट दो। जिस पर बाबू ने सही टिकट पकड़ाया तो उसने एक और टिकट अमृतसर का माँगा। दरअसल वह खुद पैसे बचाने के लिए पास का टिकट लेकर दूर का सफ़र तय करना चाहता था।

टिकट खरीदकर बाकी रकम उसने लामा को वापस कर दी, हाँ, थोड़ा-सा अपना कमीशन रखना वह नहीं भूला।



थर्ड क्लास रेल के भरे हुए डिब्बों को देखकर लामा फिर घबरा गया और बोला कि क्या हम पैदल सफ़र नहीं कर सकते? एक सेहतमंद सिख ने अपने दाढ़ी वाले चेहरे को आगे करते हुए कहा, "क्या आप डरे हुए हैं? हाँ, जब मैंने भी पहली बार सफ़र किया था तो डरा हुआ था। आप अंदर आ जाइए, यह तो सरकार ने बनाई है ताकि हम आसानी से सफ़र कर सकें।" किम ने एक यात्री से पूछा कि क्या दो लोगों के लिए यहाँ जगह है? एक औरत का जवाब आया कि इंसान तो क्या किसी चूहे की भी गुंजाइश नहीं है, मगर उस औरत के पति ने कहा कि मेरे बेटों की माँ, हमें जगह बनानी चाहिए क्योंकि इनके साथ लामा भी हैं—नेक इंसान! पत्नी उसकी बात सुनकर गुस्से में बोलती रही।

एक हिंदू साहूकार, जिसकी बगल में हिसाब-किताब का रजिस्टर था, कहने लगा कि हाँ-हाँ, अंदर आ जाएँ, गरीबों का ख्याल रखना हमारा फर्ज़ है। छुट्टियों पर जा रहे एक युवा डोगरा सिपाही ने हिंदू साहूकार के ब्याज/सूद के कारोबार का मज़ाक उड़ाया तो सब हँस पड़े।

अमृतसर की लड़की ने हैरानी से चीखते हुए कहा, "देखो-देखो, ये ट्रेन में पहली बार सफ़र कर रहे हैं!"

एक किसान यात्री ने अपने मज़बूत हाथों से लामा को अंदर आने में मदद की।

लामा ने कहा, "लेकिन बेंच पर बैठना हमारी शिक्षाओं के खिलाफ है और मुझे तकलीफ भी होती है, इसलिए मैं फ़र्श पर बैठूँगा।"

हिंदू साहूकार बोला कि ट्रेन के अपने नियम होते हैं, मिसाल के तौर पर हर धर्म और जाति के लोग एक साथ बैठते हैं।

अमृतसर की लड़की एक युवा सिपाही के साथ आँखों ही आँखों में बातचीत करने में व्यस्त थी, तो वहाँ मौजूद औरत ने गुस्से से कहा कि यहाँ पर बेहद बेशर्म लोग भी मौजूद हैं।

किम ने एक औरत की दरियादिली/सखावत की तारीफ करते हुए उससे खाना हासिल कर लिया।

युवा सिपाही ने कहा कि बूढ़े लामा को वक्त गुज़ारने के लिए कुछ कमाल दिखाना चाहिए, जिस पर किम ने थोड़े गुस्से से कहा कि बाबा जी आध्यात्मिक ज्ञान रखने वाले महान व्यक्ति हैं और आपकी सोच से कहीं ऊँचे मामलों पर विचार करते हैं। जवाब आया कि यकीनन ऐसा ही होगा, हम तो दरअसल लुधियाना सिख सेना वाले योद्धा लोग होते हैं, अपने दिमाग को ज़्यादा तकलीफ नहीं देते।

सिखों और डोगरा के बारे में बातचीत शुरू हुई कि वे अलग होते हैं, तो अमृतसर की लड़की ने कहा कि मुझे तो वे सब एक जैसे ही लगते हैं।



टिकट चेकर आया और टिकट चेक करने लगा। उसे मालूम था कि काम बहुत आहिस्ता-आहिस्ता करना है क्योंकि भारत में लोग अजीब-व-गरीब जगहों पर टिकट छुपाकर रखते हैं। टिकट चेकर ने किम का टिकट चेक करने के बाद उसे रेल से उतरने को कहा, तो उसने मिन्नत करते हुए कहा कि मैंने अपने लामा बुजुर्ग के साथ अंबाला जाना है क्योंकि मैं उनका चेला हूँ। जवाब आया कि तुम मेरी तरफ से जहन्नुम में जाओ, मगर इस रेल से उतर जाओ। किम रोते हुए कहने लगा कि यह लामा ही मेरी माँ हैं, मेरे बाप हैं। मेरे बिना यह लामा मर जाएँगे। तमाम यात्री किम और लामा के पक्ष में बोल रहे थे, मगर टिकट चेकर ने उसे रेल से उतार दिया, तो किम ने रोते हुए अदाकारी शुरू की और तमाम यात्रियों से कहा कि मैं गरीब हूँ, मेरी माँ मर चुकी है, बाप मर चुका है, मुझ पर तरस खाओ।

लामा ने हैरान होते हुए कहा कि यह सब क्या हो रहा है? यह मेरा चेला है और मेरे साथ ही जाएगा। अगर पैसों का मसला है तो मैं दूँगा। किम ने उनसे आहिस्ता से कहा कि खामोश रहें, क्या हम बादशाह हैं कि अपनी रकम खर्च करेंगे? अमृतसर की लड़की को बाहर देखा तो उसकी तरफ ध्यान दिया, क्योंकि उसे मालूम था कि ऐसी लड़कियाँ रहमदिल होती हैं। जब उसे 'सखी दिल लड़की' (दयालु दिल वाली लड़की) कहकर पुकारा गया तो वह हँस पड़ी, किम को टिकट के पैसे दिए और कहा कि लामा से कहना कि मेरे लिए दुआ करें।

किम ने उसे दुआएँ दीं कि आप पर दस हज़ार बार रहमतों की बारिश हो। पवित्र लामा! देखिए, एक लड़की ने हम पर एहसान किया और मुझे टिकट के पैसे दे दिए, अब मैं आपके साथ सफ़र कर सकता हूँ। लामा ने कहा कि वह यकीनन बेहद पाकीज़ा औरत थी, किस कदर ज़्यादा उसने नेकियाँ कमाई हैं! जबकि लड़की के जाने पर किसान की पत्नी ने हकारत (नफ़रत) से कहा, "जलवे दिखाकर चली गई! अमृतसर में तो कम से कम ऐसी दस हज़ार पाकीज़ा औरतें होंगी।"

बैंक में काम करने वाले ने आवाज़ दी, "बाबा जी! जल्दी आ जाइए वरना ट्रेन छूट जाएगी।"

रेलगाड़ी में बैठने के बाद किम ने कहा, "पवित्र लामा! टिकट का तो बंदोबस्त हो गया, अब ये सखी दिल (दयालु लोग) हमें ज़रूर खाना भी खिला देंगे।"



सुबह सूरज ने अपनी सुनहरी किरणें बिखेरीं तो रेल की खिड़की के बाहर पंजाब की शानदार उपजाऊ जमीनों में फसलें लहलहा रही थीं। यात्रियों ने अपने दस्तरखान खोलकर नाश्ता करना शुरू किया, जिसके बाद किसान, बैंक में काम करने वाला और सिपाही तंबाकू का मज़ा लेने लगे, जबकि सिख और किसान की पत्नी ने पान खाना शुरू किया। लामा अपनी मोतियों की तसबीह (माला) घुमा रहे थे, जबकि किम पेट भरकर नाश्ता करने के बाद बहुत संतुष्ट था।

लामा ने सबसे सवाल किया कि क्या किसी को ऐसे पवित्र दरिया (नदी) के बारे में मालूम है जिसकी उन्हें तलाश है? सब का एक ही जवाब था कि पवित्र नदी तो यहाँ सिर्फ गंगा ही मौजूद है।

लामा ने अपने अकीदे (विश्वास) और भगवान बुद्ध के बारे में बताया। बात उर्दू में शुरू की, मगर जल्द ही सोचों में खोकर अपनी मातृभाषा में बताने लगे, लेकिन फिर भी सब सम्मान के साथ उन्हें सुनते रहे। दरअसल वे लोग अच्छे और खुशमिज़ाज थे। उन सभी को मालूम था कि भारत में विभिन्न धर्मों के लोग अलग-अलग भाषाओं में जोश-ओ-खरोश के साथ अपनी शिक्षाओं के बारे में बताते रहते हैं। वे जानते थे कि ऐसा हमेशा से होता आ रहा है और हमेशा जारी रहेगा।

जैसे ही लामा को ख्याल आया कि वह तो एक अजनबी सरज़मीन पर हैं, तो दोबारा उर्दू बोलने लगे और कहा, "हिंद के लोगो! मैं पवित्र नदी की तलाश में जा रहा हूँ। भगवान बुद्ध ने तीरंदाजी की एक प्रतियोगिता में तीर छोड़ा तो उनकी ताकत से वह लक्ष्य से भी बहुत दूर गया और जहाँ गिरा, वहाँ से एक पवित्र नदी निकली, जहाँ स्नान करने के बाद इंसान ज्ञान की रोशनी हासिल करते हुए पापों से मुक्त हो जाएगा। अगर आपको मालूम हो तो इस नदी के बारे में बताएँ।" आवाज़ें बुलंद हुईं कि सिर्फ गंगा में नहाने से ही पाप धुल सकते हैं।

लुधियाना के सिख सिपाही ने बताना शुरू किया कि हमारे पास ही मुसलमानों की एक रेजीमेंट थी, जिसके मौलवी साहब की कभी-कभी अजीब-ओ-गरीब हालत हो जाती थी और वे भविष्यवाणियाँ करने लगते थे। लेकिन ईश्वर तो ऐसे लोगों का भी

रखवाला होता है। मैंने ध्यान दिया कि उनके अफ़सर भी उन्हें हर संभव तरीके से बर्दाश्त करते रहे।

किसान की पत्नी ने बाहर हरी-भरी फसलों को देखते हुए कहा कि देखो हमारे ईश्वर ने हम पर कितनी कृपा की हुई है! जबकि उसके पति ने कहा कि पंजाब बहुत बड़ा है और यहाँ की हर नदी को देखना बहुत ही मुश्किल है।

सिख ने पूरे यकीन के साथ कहा कि आखिरी महान इंसान जो यहाँ आया था, वह सिकंदर महान था। उसने जालंधर में शानदार सड़कों का निर्माण करवाया और अंबाला में भी ऐसे काम किए जो आज तक नज़र आते हैं।

लामा को परेशान देखकर किम ने पान की पीक ज़मीन पर फेंकते हुए कहा कि घबराएँ नहीं, हम पवित्र नदी को ढूंढ ही लेंगे। लामा ने कहा कि रेल की रफ्तार बहुत तेज़ है और मुझे लग रहा है कि कहीं हम अपनी नदी को पीछे न छोड़ आए हों। किम ने जवाब दिया कि फिक्र न करें, आप कह रहे थे कि वह नदी बनारस के पास है और वह इलाका तो अभी बहुत आगे है।



रात गए जब वे अंबाला पहुँचे तो बहुत थक चुके थे।

एक हिंदू पति-पत्नी ने उन्हें अपने घर में रात बिताने की पेशकश की ताकि वे उनसे दुआएँ हासिल कर सकें।



लामा को उनके घर छोड़ने के बाद किम बहाना बनाकर अंग्रेज़ अफ़सर को संदेश पहुँचाने निकला। जल्द ही उसकी रिहाइशगाह पहुँचकर अफ़सर से कहा कि महबूब अली ने संदेश भिजवाया है।

"क्या संदेश है?" जवाब आया।

"घोड़ों की नस्ल बिल्कुल तैयार है," किम ने कहा।

अफ़सर ने पूछा, "अच्छा, सबूत क्या है?"

किम ने वह टिशू पेपर उसकी तरफ फेंका कि यह सबूत है।

अफ़सर ने इनाम के तौर पर उसकी तरफ रुपये का सिक्का फेंका। किम ने सिक्का तो उठा लिया मगर वहीं घास पर ही लेटा रहा।

वह देखना चाहता था कि असल मामला क्या है। वह अंग्रेज़ अफ़सर एक कमरे में चला गया और तेल से जलते हुए लैम्प में बहुत गौर से संदेश देखने लगा। औरत की आवाज़ आई कि "मेहमान आने वाले हैं, डियर!"



फिर वहाँ मेहमान आ गए, मगर सब का ध्यान महबूब अली के भेजे हुए संदेश की तरफ ही था। एक ने कहा, "यह अब हफ़्तों का नहीं दिनों बल्कि घंटों का मामला है। बड़े अफ़सर भी आज यहाँ आ रहे हैं, तो उनसे इस मसले पर आज ही बात होगी। सर्वोच्च अधिकारियों को भी फ़ौरन सूचित कर देना चाहिए। फ़ौरन कार्रवाई करनी पड़ेगी। आठ हज़ार आदमियों की ज़रूरत होगी, सैन्य साज़ो-सामान के बारे में भी अफ़सर फ़ैसला करेंगे।"

दूसरे अफ़सर ने कहा, "इसका मतलब है जंग।"

जवाब आया, "जंग नहीं, सज़ा! टेलीग्राम फ़ौरन कर दिया जाए, मगर नए कोड के साथ। अब हमें महिलाओं को ज़्यादा इंतज़ार नहीं करवाना चाहिए, बाद में सिगार पीते समय इस विषय पर बाकी बात करेंगे।"

वहाँ बड़ी पार्टी हो रही थी जिसमें कमांडर-इन-चीफ़ भी आ रहा था। किम वापस घर आ गया, जो जानकारी वह हासिल करना चाहता था वह उसे मिल चुकी थी। लामा अभी भी सो रहा था।

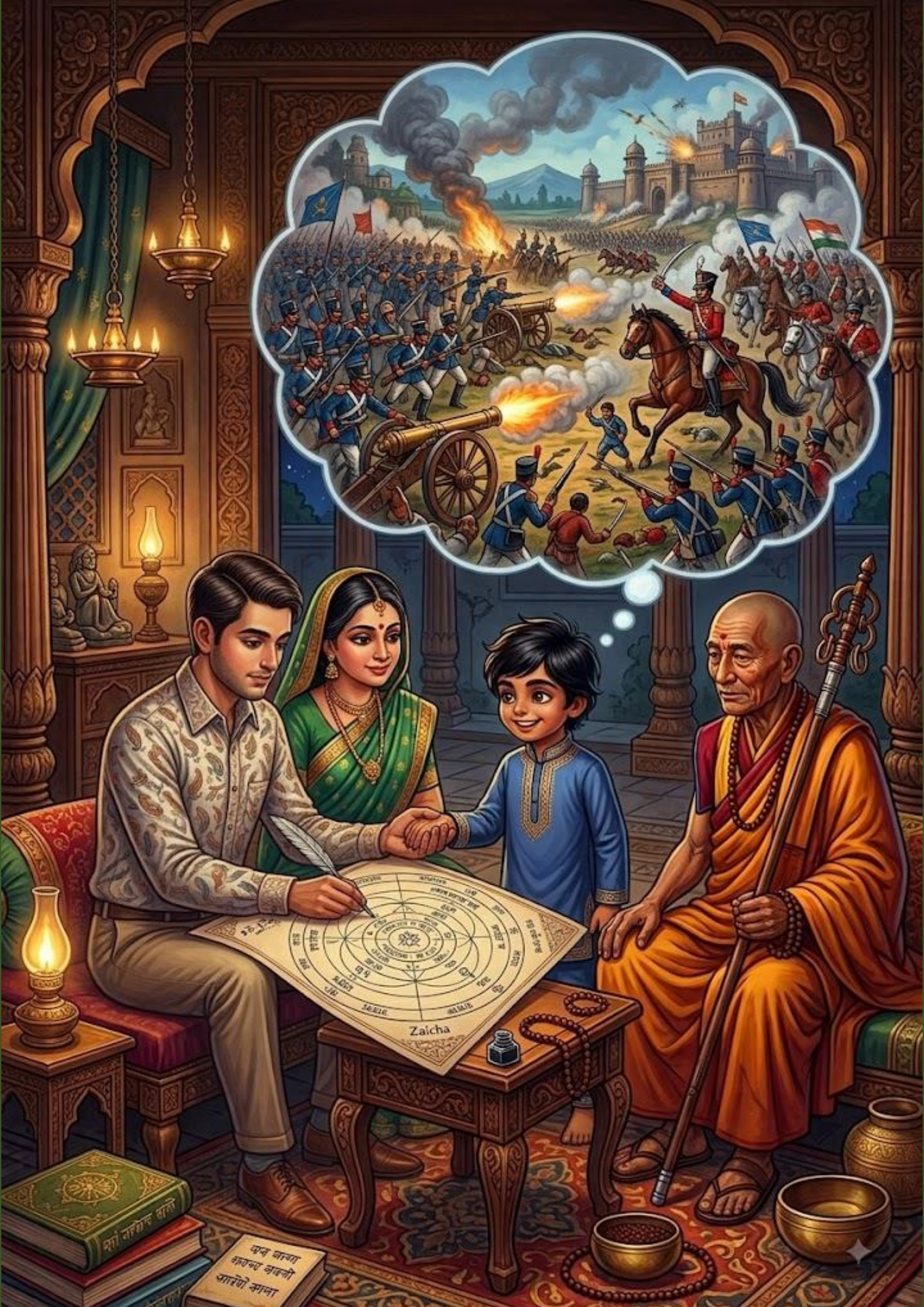


बाद में किम ने अपने मेज़बान से इच्छा ज़ाहिर की कि सितारों के ज्ञान (ज्योतिष) के ज़रिए उसके भविष्य के बारे में बताया जाए। किम ने बताया कि वह उस समय पैदा हुआ था जब कश्मीर में भीषण भूकंप आया था। यह बहुत प्रसिद्ध समय था।

कुछ देर हिसाब-किताब लगाने के बाद मेज़बान ने कहा कि तीन दिन के बाद दो आदमी तुम्हारे लिए कुछ अहम करेंगे। "मगर मुझे तो सशस्त्र (हथियारबंद) आदमी और जंग भी नज़र आ रही है। यह सब कुछ बहुत जल्द होने वाला है, होशियार रहना।"

लामा ने कहा कि हम तो शांतिप्रिय लोग हैं और सिर्फ अपनी पवित्र नदी की तलाश में हैं। मगर किम इसलिए मुस्कुरा रहा था क्योंकि उसने अपना संदेश देने के बाद अफ़सरों से जंग की बातें सुन ली थीं।

लामा ने मेज़बान से अपनी पवित्र नदी के बारे में भी पूछा, मगर वह कुछ नहीं बता सका। उन लोगों ने रुकने के लिए बहुत आग्रह किया, लेकिन लामा ने हिंदू परिवार का शुक्रिया अदा करके किम के साथ सफ़र शुरू किया। उन्हें बहुत सारा खाना और कुछ रकम भी दी गई। दोनों तरफ की दुआओं के बाद किम और लामा वहाँ से विदा हुए।

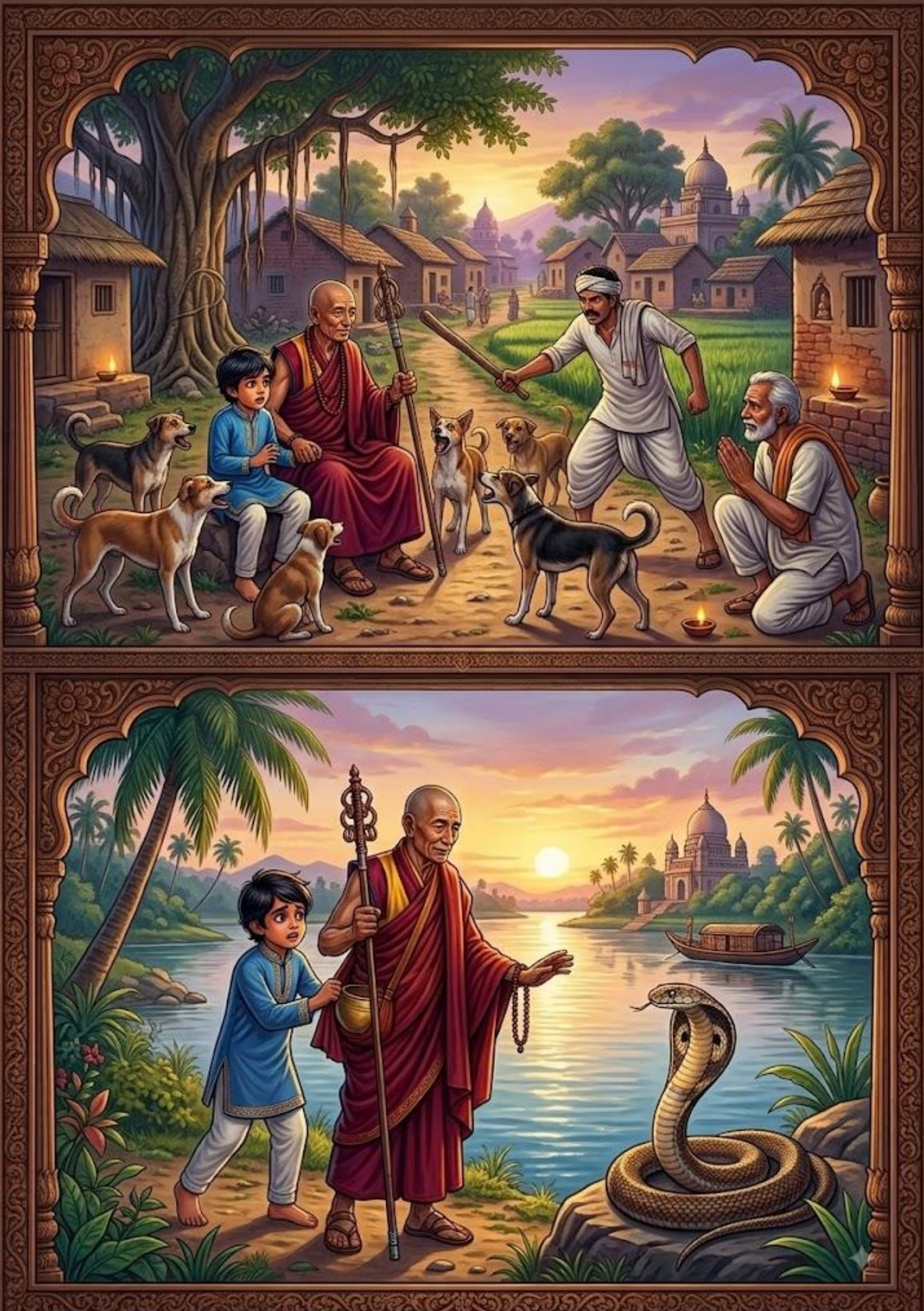

Zaicha

एक गाँव में उन्हें देखकर बहुत से कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। किसान आवाज़ सुनकर बाहर आया और गुस्से में बोला, "भिखारियों! मेरे खेत से बाहर निकल जाओ!"

किम ने उससे कहा कि ये भिखारी नहीं, बुजुर्ग हैं। बदतमीजी करने की सूरत में तुम्हारी फसल खराब भी हो सकती है। यह सुनकर किसान का रवैया बदल गया और वह डरकर कहने लगा कि उसे बद्दुआ न दी जाए, बल्कि अगर ज़रूरत हो तो उन्हें खाना और दूध वगैरह भी मिल सकता है।

लामा ने कहा कि गुस्से की हालत में इंसान अपने बस में नहीं रहता और गुस्सा सोचने-समझने की क्षमता खत्म कर देता है। फिर किसान को अच्छी फसल की दुआएँ देकर उन्होंने सफ़र शुरू किया।

वे एक छोटी नहर पर पहुँचे जहाँ एक बड़ा साँप नज़र आया। किम उसे देखकर डर गया और बोला कि इसे मार डालना चाहिए, मगर लामा ने कहा कि इसे कुछ न कहा जाए, इसे भी जीने का अधिकार है। किम ने पहली बार ऐसा इंसान देखा था जो साँप के करीब खड़ा होकर भी बिल्कुल डरा हुआ नहीं था।



उन्होंने दोबारा सफ़र शुरू किया, फसलों के बीच से गुज़रते रहे और अपनी पवित्र नदी की तलाश जारी रखी।

वे दोनों एक गाँव में पहुँचे। गाँव के नंबरदार और पुजारी ने उन्हें खाना और आराम करने के लिए जगह दी। लामा ने जब उन्हें पवित्र नदी के बारे में बताया, तो बुढ़ापे की वजह से उन्होंने उनकी मानसिक हालत पर शक किया। किम ने भी उन्हें अपनी सफलता की भविष्यवाणी के बारे में बताया।

एक बूढ़े आदमी ने, जो 1857 के विद्रोह (बगावत) के समय सेना में शामिल था, कहा कि यह बात सच है क्योंकि सीमाओं पर युद्ध होते रहते हैं। इस बूढ़े व्यक्ति को उसकी सेवाओं के बदले इस गाँव में ज़मीन दी गई थी और उसके तीन बेटे भी अब सेना में अफ़सर थे। जब किम ने बताया कि आठ हज़ार सैनिक इस युद्ध में हिस्सा लेंगे, तो वह बोला कि उसके बेटों ने तो किसी इतनी बड़ी जंग का ज़िक्र नहीं किया।

रात को किम ने लामा से उनकी रकम हिफ़ाज़त के लिए अपने पास रख ली। सुबह जब लामा ने कहा कि रात को नींद बहुत गहरी आई थी, तो किम का शक यक़ीन में बदल गया कि रकम हड़पने के लिए लामा को दूध में नशा मिलाकर दिया गया था।




जब उन्होंने सफ़र शुरू किया, तो बूढ़ा सैनिक उन्हें रास्ता दिखाने के लिए कुछ दूर तक उनके साथ गया। आम के पेड़ों के बीच फसलें उगी हुई थीं और खेतों में काम करते किसानों की आवाज़ें आ रही थीं। लामा को इस बात का अफ़सोस था कि उन्हें मंदिर में चंदा देना चाहिए था, जबकि बूढ़ा सैनिक बता रहा था कि किस तरह सैनिक पागलपन में 1857 के विद्रोह (बगावत) के दौरान अपने ही अफ़सरों के खिलाफ हो गए थे। 680 सैनिकों में से सिर्फ तीन इस विद्रोह में शामिल नहीं हुए थे, और बूढ़ा सैनिक भी उन्हीं में से एक था।

तमाम लोग, उसके रिश्तेदार, भाई और दोस्त उसे बुरा-भला कहने लगे कि अंग्रेज़ों का साथ क्यों दिया? कोई भी यह समझने को तैयार नहीं था कि मैं कर्तव्यनिष्ठा और योग्यता के बल पर अपने फर्ज़ निभा रहा हूँ। लोग मुझसे कहते कि अंग्रेज़ों का साथ देना बंद करो, क्योंकि भारत में उनका वक्त पूरा हो चुका है। मैंने एक अंग्रेज़ मेम साहब और उनके बच्चे की जान बचाने के लिए घोड़े पर 70 मील का सफ़र तय किया था।

"मैं अंग्रेज़ों का वफ़ादार रहा और भारतीयों को जुनूनी बनने से रोकने की कोशिश भी की। उनमें से कुछ अफ़सर अब जनरल बन चुके हैं, मगर आज भी मुझे याद रखते हैं। मेरी वफ़ादारी का ख्याल रखा गया। महारानी ने जश्न के मौके पर मुझे 'ऑर्डर ऑफ ब्रिटिश इंडिया' का सम्मान दिया, जिसे मैं हमेशा अपने गले में पहनकर रखता हूँ, और इनाम के तौर पर मुझे जागीर भी दी गई। उस दौर के कुछ बड़े लोग, जो कमिशनर वगैरह बन गए, मुझसे मिलने आते रहे। हम जंग और जान कुर्बान करने वालों के बारे में बातें करते।"

लामा ने पूछा, "फिर उसके आगे?"

जवाब आया, "फिर वे चले जाते, मगर उससे पहले पूरा गाँव उन बड़े लोगों को देख चुका होता।"

लामा ने सवाल किया, "आखिर आपका अंजाम क्या होगा?"

जवाब आया, "मौत।"

लामा ने पूछा, "फिर उसके बाद?"

जवाब आया, "फिर ईश्वर की मर्ज़ी! वह मुझे कोई ठंडी जगह देगा जहाँ मैं अपने बेटों का इंतज़ार करूँगा, जो खुद भी सेना में मेजर हैं।"

लामा ने कहा कि वे भी एक जीवन से दूसरे जीवन के चक्र (पहिए) में सफ़र करते रहेंगे—एक कठिन और कष्टदायक सफ़र। दरअसल हमारी ताकत ही हमारी असली कमजोरी है। जीवन का उद्देश्य कुछ और है और हम किसी और दिशा में सफ़र कर रहे हैं।

बातें करते-करते थककर, भीषण गर्मी के मौसम में आम के पेड़ों की छाँव तले बूढ़ा सैनिक और लामा सो गए। किम को चिंता थी कि कहीं आसपास साँप न हों, इसलिए वह सावधानी बरतता रहा।





जागने के बाद उन्होंने मुख्य सड़क यानी जी.टी. रोड तक एक साथ सफ़र किया। यह विशाल सड़क भारत के एक बड़े हिस्से में फैली हुई थी। रेल आने से पहले इसका बहुत अधिक महत्व था, लेकिन अब भी हर रंग, नस्ल और धर्म के लोग अपनी-अपनी सवारियों पर यहाँ से गुज़रते थे।

बूढ़े सैनिक के विदा होने के बाद लामा और किम ने 1500 मील में फैली ग्रैंड ट्रंक रोड पर अपना सफ़र जारी रखा। पूरी दुनिया में यह अपनी तरह की अनूठी सड़क थी।

लामा अपने ही विचारों में खोए रहे और सड़क पर मौजूद लोगों की तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। दूसरी ओर, जी.टी. रोड पर किम को मानो पूरा भारत एक ही जगह नज़र आ गया था, और इस शानदार नज़ारे ने उसे सातवें आसमान पर पहुँचा दिया।

किम और लामा खामोशी से सफ़र करते रहे। आखिरकार किम ने कहा, "यह कितनी खूबसूरत जगह है! दक्षिण बहुत सुंदर है। यहाँ की जलवायु और पानी भी बहुत अच्छा है।"

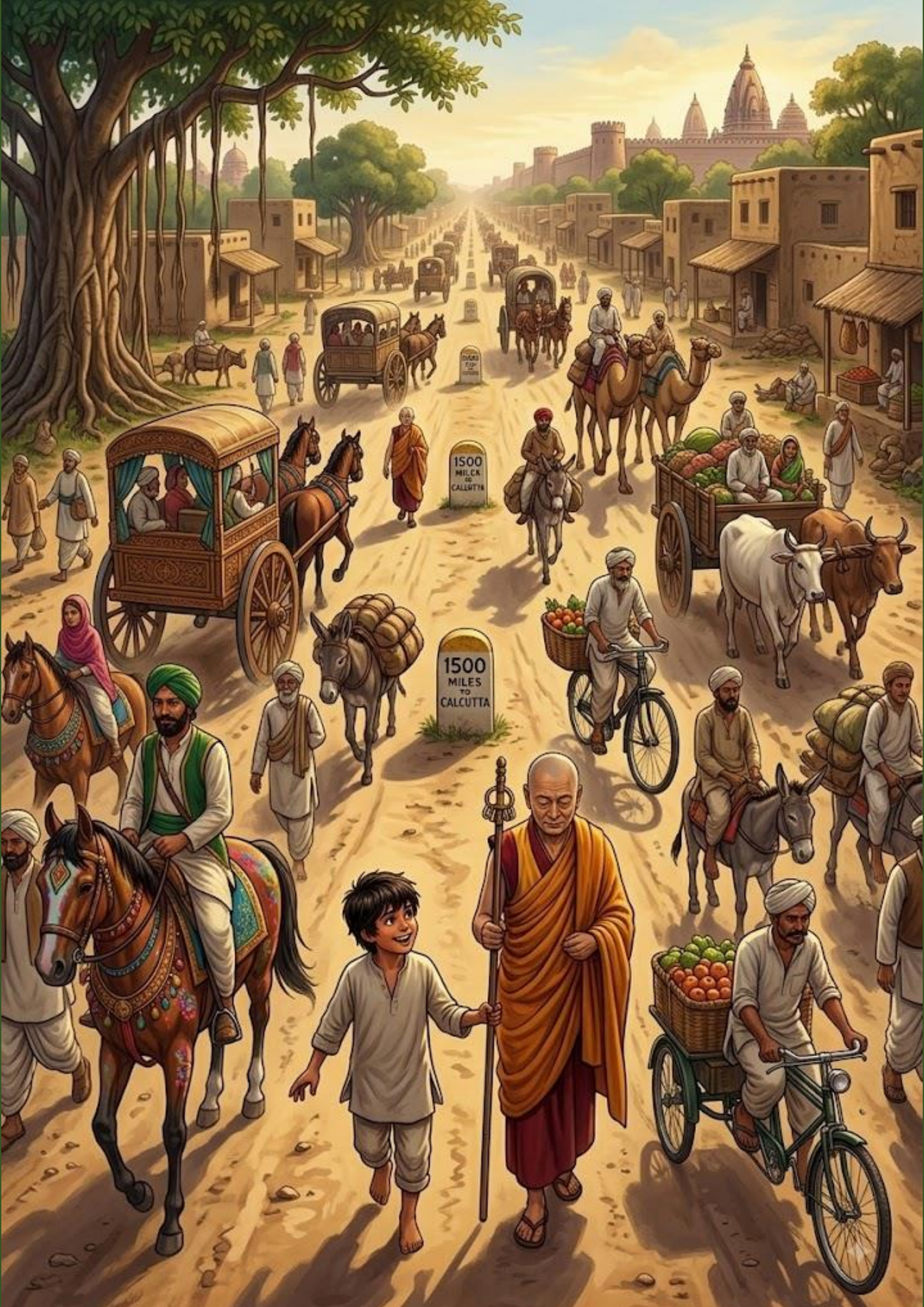
लामा ने जवाब दिया, "असल में यह एक जीवन से दूसरे जीवन का सफ़र है—जीवन के पहिए में चक्कर लगाते हुए।"

किम ने कहा, "हमने बहुत लंबा सफ़र तय कर लिया है और थकावट हो गई है। सूरज भी ढलने वाला है, क्यों न इन पेड़ों की छाँव में आराम करें?"

लामा ने पूछा, "आज रात खाना कहाँ से खाएँगे?"

किम बोला, "दुनिया अच्छे लोगों से भरी पड़ी है," और फिर आहिस्ते से कहा, "और वैसे भी हमारे पास रकम मौजूद है।"

रात ढल रही थी और दूर से लकड़ियों की आग पर रोटियाँ पकने की खुशबू आ रही थी।


1500
MILES
TO
CALCUTTA

वहाँ एक बैलगाड़ी आई जिसे आरामदायक सफ़र के लिए खूबसूरत नए पर्दों से सजाया गया था। आठ रक्षक उसकी सुरक्षा में तैनात थे, जिनमें से दो के हाथों में तलवारें थीं। यह शान-ओ-शौकत साफ़ बता रही थी कि कोई अमीर व्यक्ति सफ़र कर रहा है।

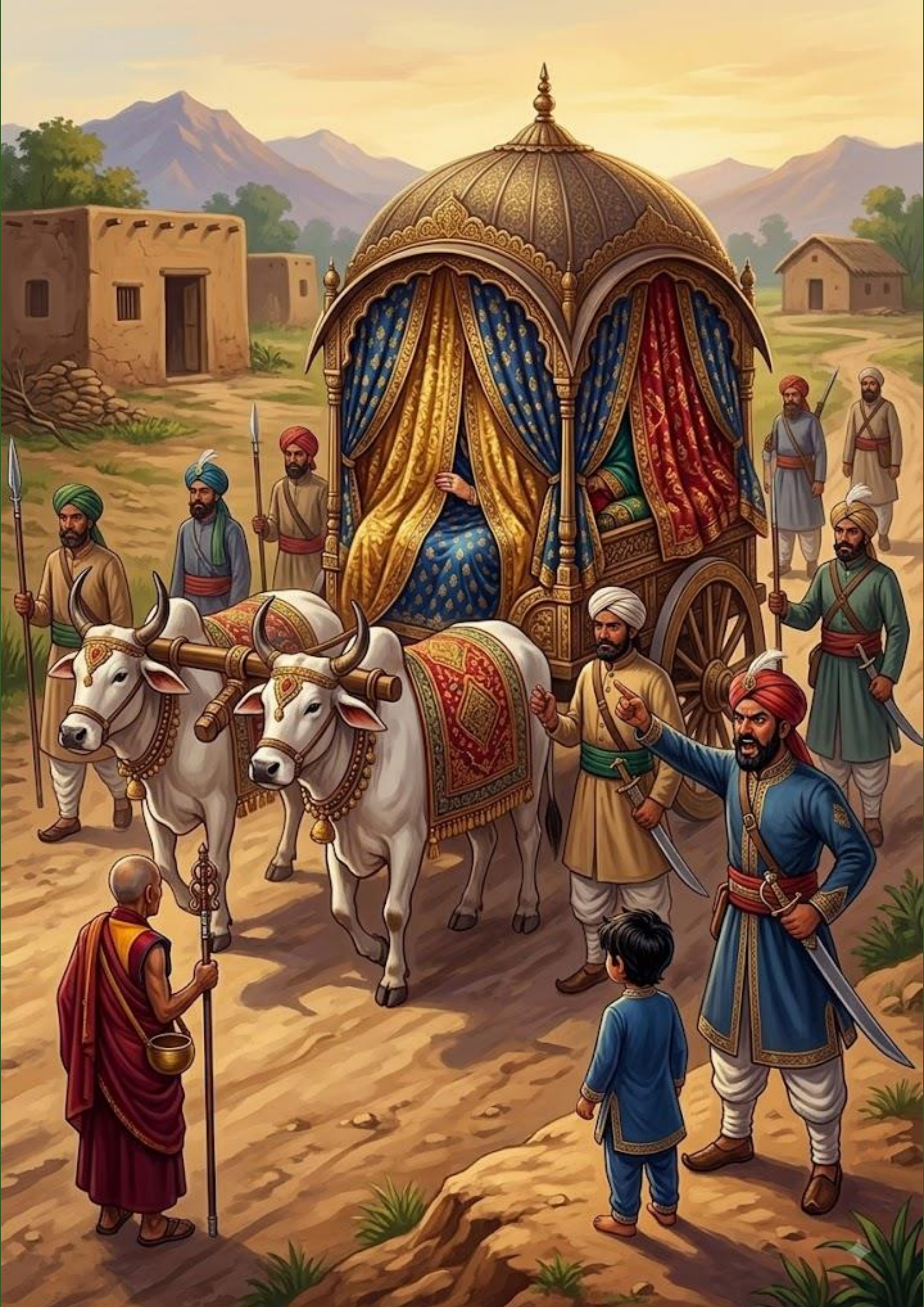
किम ने एक बूढ़ी औरत की कड़कदार आवाज़ सुनी, जो गुस्से में अपने नौकरों को हुक्म दे रही थी। उसके नौकरों में से आधे किम के इलाके (मैदानी) के थे और आधे पहाड़ी थे। किम ने जान-बूझकर उसी जगह के पास रुकने का फ़ैसला किया और वहाँ आग जला ली।

जब एक पहाड़ी नौकर ने किम से कहा, "भिखारी! यहाँ से भाग जा," तो लामा ने पूछा कि यहाँ क्या हो रहा है? उस पहाड़ी नौकर ने किम के साथ लामा को देखा तो घबरा गया और बोला, "मुझसे भूल से पाप होने वाला था!"

उधर बूढ़ी औरत ने गुस्से से चिल्लाकर कहा, "भिखारियों को भगा क्यों नहीं रहे?"

पहाड़ी नौकर ने जब बूढ़ी औरत को लामा के बारे में बताया, तो उसने तुरंत लामा के लिए आदर-सम्मान के साथ खाना और कंबल भिजवाए। किम और लामा एक-दूसरे का यह साथ और लगाव बहुत पसंद कर रहे थे।

बाद में, बूढ़ी औरत की इच्छा पर लामा उससे मिलने गए। देर तक धार्मिक विषयों पर चर्चा होती रही और बूढ़ी औरत ने यह इच्छा ज़ाहिर की कि लामा उसके साथ सफ़र करें और दुआ करें कि उसकी बेटी के यहाँ दूसरे बेटे का जन्म हो।



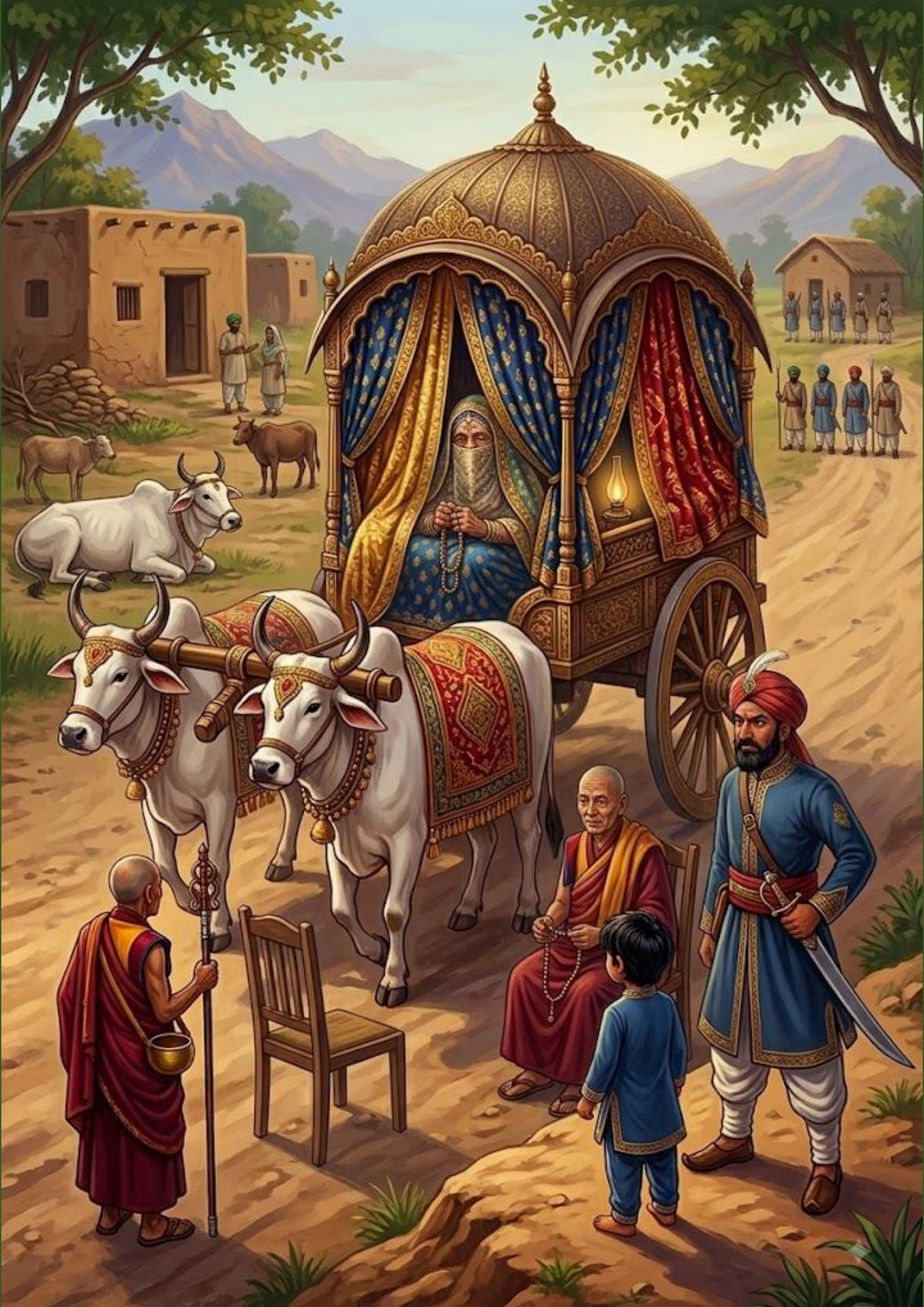
दूसरी सुबह उनके साथ मानो पूरा भारत जाग उठा। इंसानों, परिंदों और जानवरों की आवाज़ें आने लगीं। आग पर खाना पकना शुरू हो गया। किम को यह सब बहुत अच्छा लग रहा था। बूढ़ी औरत अपने नौकरों को चीख-चीखकर हुक्म दे रही थी।

सफ़र शुरू हुआ। किम और लामा अब उसी काफ़िले के साथ चल रहे थे। औरत पूरे रास्ते धार्मिक बातें करती रही। कभी-कभी उसका चेहरा नज़र आ जाता, मगर वह घूंघट से ढका होता।

रात को बहुत बढ़िया खाना तैयार किया गया। बूढ़ी औरत यह जानना चाहती थी कि उसकी बेटी के कितने बेटे पैदा होंगे। उसने अपने शानदार पहाड़ी इलाके और वहाँ के खराब मौसम के बारे में बात की, और तंबाकू के खराब हो जाने की शिकायत भी की।

धीमी रफ्तार से काफ़िला सफ़र तय करता रहा। एक जगह काफ़िला रुका तो लामा ने किम से कहा, "यह औरत समझदार है, मगर..."

किम ने उनकी बात काटते हुए कहा, "तमाम औरतें ऐसी ही होती हैं।"



किम ने दूर से चार आदमियों को एक साथ चलते हुए देखा और कहा, "वे सैनिक हैं—गोरे सैनिक।"

उन सैनिकों का झंडा भी दिखाई दिया, जहाँ एक हरे मैदान में लाल रंग का बैल बना हुआ था। किम ने तेज़ी से कहा, "भविष्यवाणी यही तो की गई थी!"

वह हैरान और परेशान होकर तेज़ी-तेज़ी से साँस ले रहा था। उसने लामा को पीछे ही खड़ा किया और खुद सैनिकों के कैंप के करीब रेंगते हुए आगे बढ़ गया।



पादरी बेनेट अचानक तंबू (खैमे) से बाहर निकले तो किम को ज़मीन पर लेटे हुए देखा और उसे पकड़ लिया। किम ने खुद को छुड़ाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसे तंबू के अंदर ले जाया गया और पूछा गया कि "तुम कौन हो? क्या चोर हो?"

किम ने दोबारा भागने की कोशिश की। मिस्टर बेनेट ने उसे पकड़ने का प्रयास किया, तो उसके गले में पड़ा बड़ा तावीज़ जैसा पर्स उनके हाथ में टूटकर आ गया।

किम तेज़ी से अंग्रेज़ी में बोलने लगा, "मैं चोर नहीं हूँ! यह मेरा है, मुझे दे दो।"

मिस्टर बेनेट और फादर विक्टर यह देखकर हैरान रह गए कि एक चोर जैसा बच्चा फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोल रहा है और उसके गले में एक महत्वपूर्ण तावीज़ भी है। किम ने फिर से तावीज़ माँगा, तो उससे कहा गया कि पहले इसे खोलकर देखा जाएगा।

तावीज़ के अंदर से किम के जन्म का प्रमाणपत्र (बर्थ सर्टिफिकेट) निकला, जिस पर उसके पिता ने अपनी रेजीमेंट का नंबर और अपना नाम लिखा था और यह हिदायत दी थी कि इस लड़के का बहुत ख्याल रखा जाए।

फादर विक्टर ने हैरानी के आलम में कहा, "यह तो किमबॉल ओ'हारा का बेटा है! मेरे सामने ही उसकी शादी एनी शोट से हुई थी... और देखो, कमीज़ के नीचे से इसकी त्वचा का रंग गोरा (सफ़ेद) है!"

किम तेज़ी से बोला, "यह मुझे वापस दो और मुझे जाने दो! मैं चोर नहीं हूँ, मैं एक नेक इंसान (लामा) का चेला हूँ।"


Birth Certificate
KIMBALL O'HARA

वे सभी लोग लामा के पास आए। किम ने कहा, "मुझे मेरी मंज़िल मिल तो गई, मगर हालात न जाने कहाँ ले जाएँ! ये गधे मेरे साथ न जाने क्या सलूक करें।"

अंग्रेज़ों ने किम से कहा कि अपने लामा को अपनी भाषा में बताओ कि चूँकि तुम अंग्रेज़ की औलाद हो, इसलिए साहब हो, लिहाज़ा अब तुम्हें स्कूल में दाखिला दिलाया जाएगा। यह बात बताने के बाद किम ने लामा से कहा, "पहले भी स्कूल में दाखिले का कहा गया था, मगर मैं भागकर दोबारा आपके पास आ जाऊँगा।"

लामा के चेहरे पर उदासी देखकर अंग्रेज़ों ने भगवान बुद्ध और पवित्र नदी के बारे में पूछा। फिर उन्होंने कहा कि यह रेजीमेंट किम की पढ़ाई का खर्च उठाएगी। किम ने लामा से कहा, "ये लोग अभी मुझे नहीं छोड़ेंगे। यही भविष्यवाणी भी थी। आप नेक बूढ़ी औरत के पास जाएँ, मैं बाद में फ़रार होकर आपके पास आ जाऊँगा।"

अंग्रेज़ सोच रहे थे कि किम की शिक्षा बेहद ज़रूरी है, लामा अब अकेला रह जाएगा, मगर कुछ और किया भी नहीं जा सकता था।

लंबे सन्नाटे के बाद लामा ने कहा, "किम! जब तुम मुझे मिले तो मैंने सोचा कि तुम्हें मेरी मदद के लिए भेजा गया है, जबकि अपना सफ़र तो हमें खुद ही पूरा करना होता है।"

फादर विक्टर को बात पूरी तरह समझ तो नहीं आई, मगर उसमें छिपा हुआ दर्द महसूस कर लिया। जब लामा को मालूम हुआ कि पढ़ाई के बाद किम को सैनिक बनाया जाएगा, तो उन्होंने पूछा कि किस शहर में शिक्षा दी जाएगी और अच्छी शिक्षा व भोजन के लिए कितनी रकम की ज़रूरत होगी?

फादर विक्टर ने कहा, "तुम्हें आर्मी के अनाथालय में पढ़ाए जाएगा, मगर भारत में सबसे बेहतरीन शिक्षा तो लखनऊ के सेंट जेवियर में दी जाती है। वहाँ तो दो-तीन सौ रुपये सालाना का खर्च आता है—जो बहुत बड़ी रकम है।"

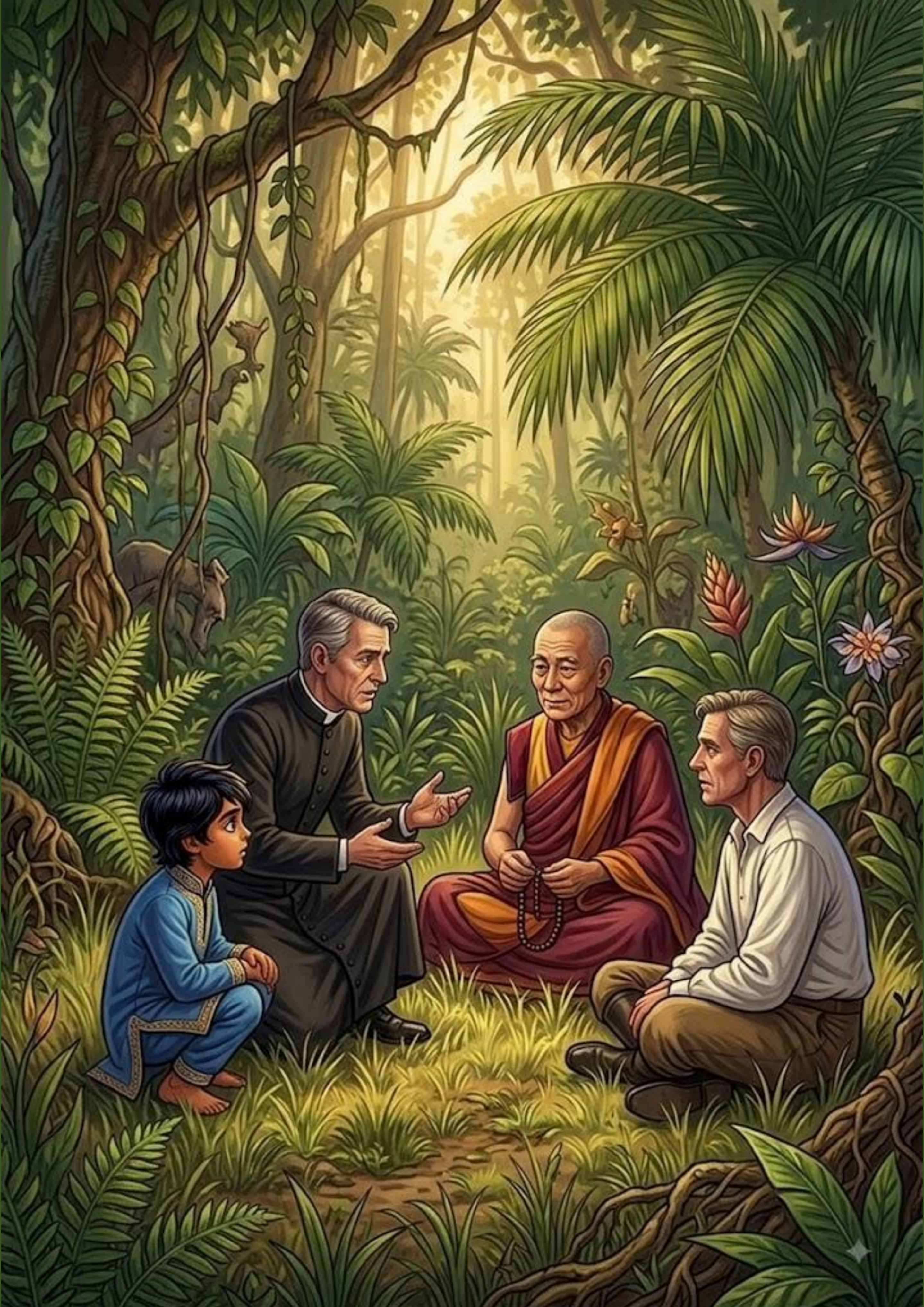
लामा ने कहा कि फादर विक्टर अपना नाम और पता उन्हें लिखकर दे दें। जैसे ही उन्हें लिखकर दिया गया, वे तेज़ी से उठे और यह कहकर वहाँ से चले गए कि वे अपनी पवित्र नदी की तलाश जारी रखेंगे।

लामा के जाने के बाद किम को एक दूसरे सैनिक के हवाले कर दिया गया, जिसने सख्ती से हिदायत दी कि किम वहाँ से भागने की कोशिश हरगिज़ न करे और लाल बैल की रेजीमेंट का आभारी रहे जिसने उसकी मदद की है। उसने कहा, "सनावर स्कूल में तुम्हें एक अच्छा इंसान बना दिया जाएगा।"

किम ने जवाब दिया, "आप लोग वहाँ नहीं, बल्कि जंग के लिए जाएँगे—आठ हज़ार सैनिक और भारी हथियार।"

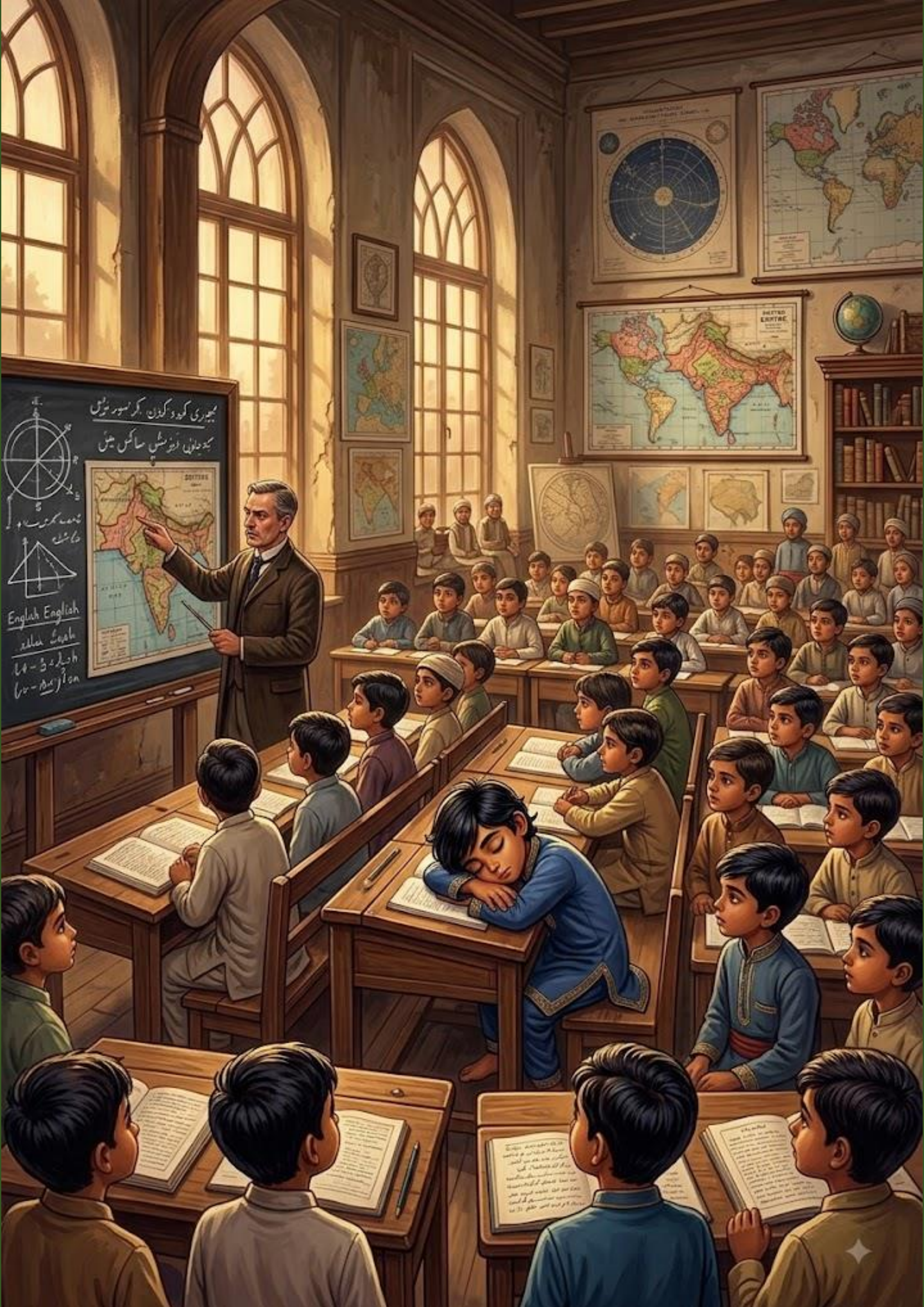
उसकी बात को मज़ाक समझकर सब लोग हँसने लगे। वहाँ फादर विक्टर और मिस्टर बेनेट भी उस पर नज़र रखे हुए थे। शाम को जब सचमुच युद्ध में जाने की खबर मिली, तो फादर विक्टर ने हैरानी से किम से पूछा, "तुम्हें यह बात पहले से ही कैसे पता थी?"

किम ने अपनी जीत महसूस की, मुस्कुराया मगर कोई जवाब नहीं दिया।



बीमारों, औरतों और बच्चों के अलावा सब युद्ध पर चले गए, तो दूसरे लड़कों को किम की निगरानी पर लगा दिया गया। एक आदमी ने गुस्से से उसे बताया कि वह स्कूल मास्टर है। किम ने भी पलटकर गुस्से में जवाब दिया, तो वह उसे कान से पकड़कर एक दूसरे कमरे में ले गया जहाँ बहुत से बच्चे अपना सबक पढ़ रहे थे। किम वहीं बैठ गया और सो गया।

क्लास खत्म होने पर वह सबसे पहले बाहर भागा, मगर निगरानी करने वाले ने उसे रोक लिया। किम ने उससे इजाज़त ली और एक खत लिखने वाले (कातिब) को बुलवाया। उसने महबूब अली के नाम खत में पूरी बात लिखी और कहा कि वह उसे यहाँ से निकाले। इसके बाद किम ने तीन दिन बड़ी तकलीफ में गुज़ारे।


English English

फिर महबूब अली किम को अपने घोड़े पर बैठाकर वहाँ से भगाकर ले जा रहा था।



मगर एक अंग्रेज़ ने उसे देख लिया और घोड़ा खरीदने की इच्छा ज़ाहिर की। किम के बारे में पूछा गया तो उसे बताया गया कि इसके पिता भी सैनिक थे, मगर यह यहाँ नहीं रहना चाहता। यह आम लोगों के बीच आम तरीके से ज़िंदगी बिताने का ख्वाहिशमंद है। वे इसे एक अच्छा सैनिक बनाना चाहते हैं, मगर यह एक अच्छा कासिद (संदेशवाहक) तो कम से कम बन ही जाएगा। "मैंने इसके हाथ घोड़ों के बारे में एक संदेश भी आपको भिजवाया था।"

किम को यह सुनकर अपनी बेइज्जती महसूस हुई और सख्त गुस्सा आया, मगर वह कुछ न बोला। दरअसल महबूब अली भी यही बता रहा था कि यह लड़का गुस्सा बर्दाश्त करना जानता है।

फादर विक्टर को वहाँ देखकर किम ने आवाज़ दी। कर्नल क्रेटन ने फादर विक्टर से किम के बारे में विस्तार से जानकारी ली।

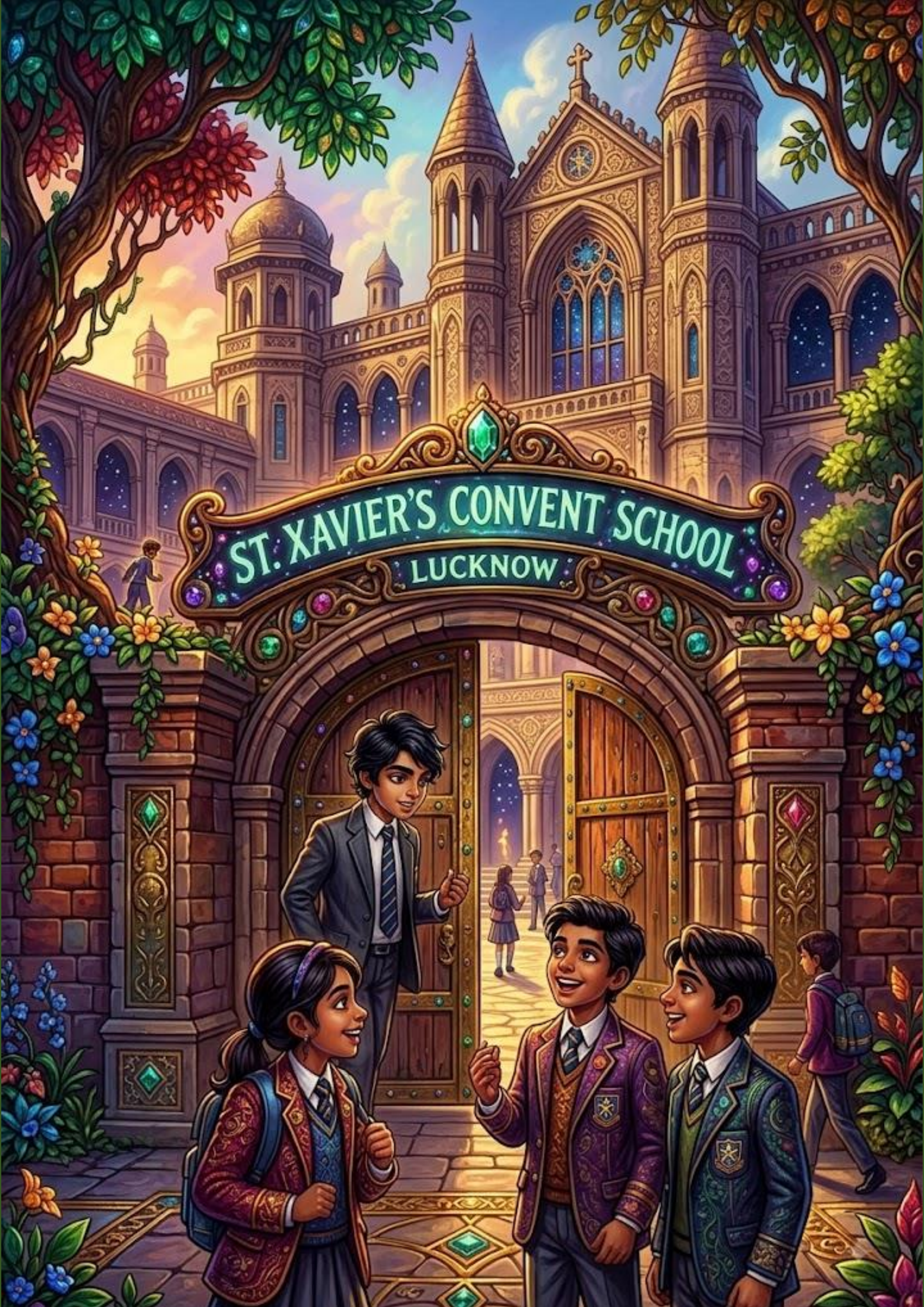
महबूब अली ने किम से कहा कि ये सब लोग तुम्हारे दोस्त हैं और तुम्हारा भला चाहते हैं। मगर किम को इस बात पर गुस्सा था कि उसे भागने क्यों नहीं दिया गया।

फादर विक्टर ने यह बताकर सबको हैरान कर दिया कि लामा ने किम की पढ़ाई के खर्च के लिए 300 रुपये भिजवाए हैं ताकि वह लखनऊ के सबसे अच्छे स्कूल में शिक्षा हासिल कर सके। फादर विक्टर खुद भी हैरान थे कि एक लामा के पास इतनी बड़ी रकम कहाँ से आई और उन्होंने एक अंग्रेज़ लड़के पर कितना बड़ा अहसान किया है!

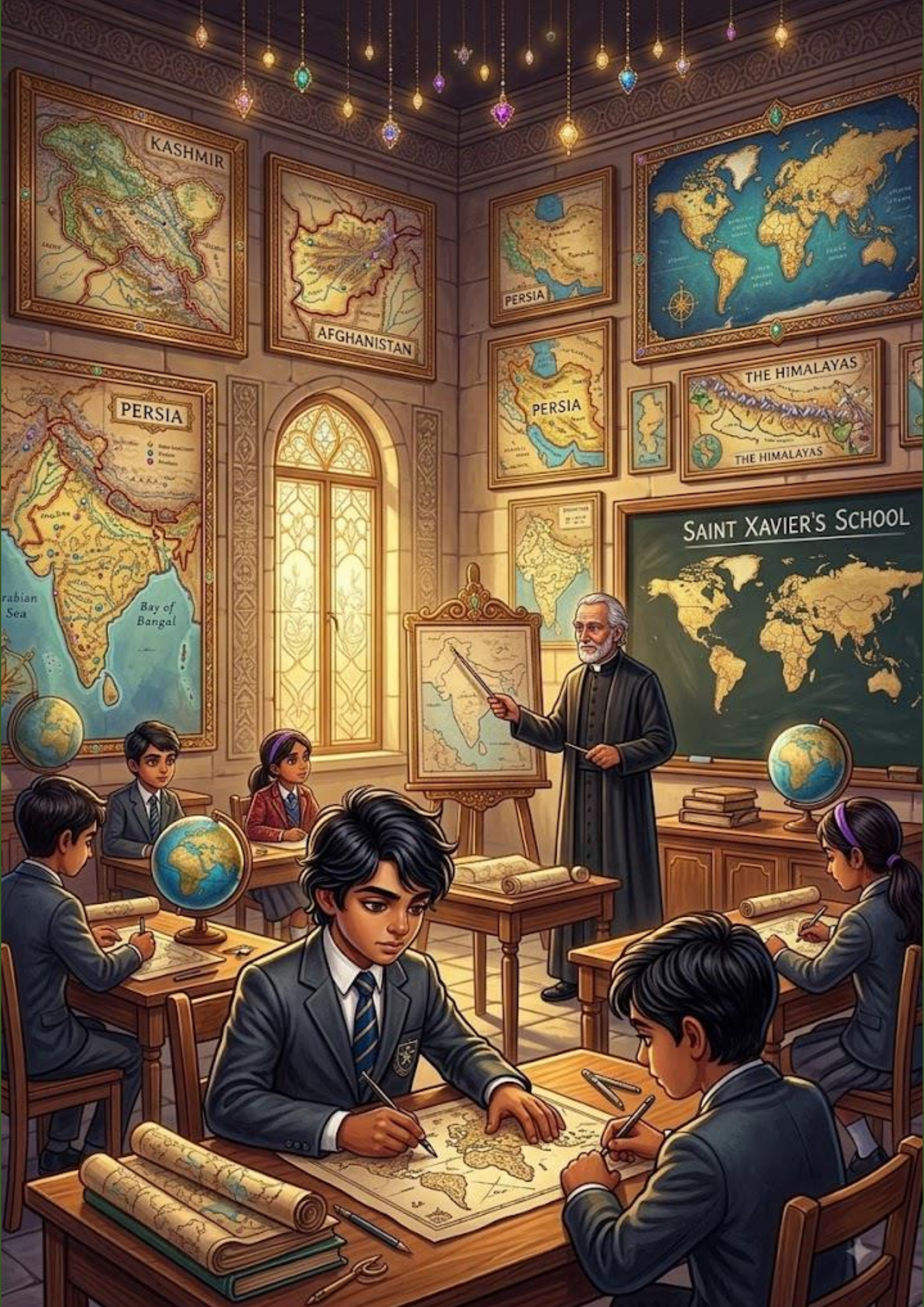
कर्नल क्रेटन ने कहा कि वे अगले हफ्ते किम को अपने साथ ले जाकर लखनऊ के बेहतरीन स्कूल में दाखिला करवा देंगे। किम भले ही खुश नहीं था, मगर महबूब अली और बाकी सबको मालूम था कि किम के उज्ज्वल भविष्य के लिए ही यह सब किया जा रहा है।



लखनऊ में भारत के बेहतरीन स्कूल **St. Xavier's Convent School** में किम का दाखिला करवा दिया गया। यहाँ सभी एंग्लो-इंडियन बच्चे पढ़ रहे थे और स्कूल का माहौल भी बहुत बढ़िया और अनुशासित था।


ST. XAVIER'S CONVENT SCHOOL
LUCKNOW

किम को नक्शे तैयार करने (मानचित्रकला) की शिक्षा दी जाने लगी। ब्रिटिश सरकार के लिए जो लोग बतौर गुप्तचर (सीक्रेट एजेंट) काम करते थे और दूर-दराज़ के अज्ञात क्षेत्रों में जाते थे, उनके लिए सही नक्शा तैयार करना बेहद ज़रूरी होता था।


KASHMIR
AFGHANISTAN
PERSIA
PERSIA
PERSIA
THE HIMALAYAS
THE HIMALAYAS
rabian Sea
Bay of Bangal
SAINT XAVIER'S SCHOOL

एक साल बीत गया। जब छुट्टियाँ हुईं, तो किम की इच्छा हुई कि वह आज़ादी से घूमे-फिरे। वह भागकर महबूब अली के पास चला गया, जो उसे अपने साथ शिमला के पहाड़ी इलाके में ले गया। वहाँ कर्नल क्रेटन का संदेश महबूब अली को मिला, तो उसने किम से पूछा, "क्या तुम स्कूल से भागकर आए हो?" किम ने जवाब दिया, "नहीं, मैं तो गर्मियों की छुट्टियाँ बिता रहा हूँ।"

इसके बाद किम लुर्गन साहब (Lurgan Sahib) की जादू और रहस्यमयी चीज़ों से भरी दुकान पर गया। वहाँ लुर्गन साहब ने पूछा, "क्या तुम डरे हुए हो?" किम ने जवाब दिया, "डरा हुआ? मगर क्यों? बिल्कुल नहीं।"

इस पर लुर्गन साहब ने कहा, "जब तक लखनऊ में तुम्हारा स्कूल नहीं खुलता, तब तक तुम मेरे पास ही रहोगे और इसी कमरे में सोया करोगे—यह हुक्म है।"

जिस कमरे में सोने के लिए इशारा किया गया था, वहाँ बिल्कुल अँधेरा था। जब लुर्गन साहब ने लालटेन ऊपर की, तो किम ने देखा कि कमरे की दीवारों पर बहुत से मुखौटे (मास्क), तलवारें और खंजर वगैरह लटके हुए थे। लाहौर के अजायाबघर (संग्रहालय) में किम ऐसी चीज़ें पहले भी देख चुका था।

मेज़ के नीचे एक लड़का बैठा हुआ था। किम ने सोचा कि लुर्गन साहब और शायद यह लड़का भी मुझे डराना चाहते हैं। फिर उसने बुलंद आवाज़ में कहा, "यह जगह तो म्यूजियम की तरह है, मेरा बिस्तर कहाँ है जहाँ मुझे सोना है?"

किम ने महसूस कर लिया कि लुर्गन साहब तो उसकी सोच भी पढ़ सकते हैं। लुर्गन साहब ने कहा, "इस लड़के ने एक बार मुझे ज़हर देकर मारने की कोशिश की थी और शायद तुम्हें भी मारने की कोशिश करे। शायद यह तुमसे जलता (ईर्ष्या करता) है।" ज़हर जैसी गंभीर बात भी वे इतने आराम से कह रहे थे जैसे कोई मामूली बात हो। "शायद यह मुझसे लगाव रखता है और चाहता है कि तुम यहाँ न रहो।"


LURGAN SAHIB'S ARCANUM

"खैर, पानी पीओगे?"—उन्होंने बहुत दूर रखे हुए गिलास की तरफ हाथ बढ़ाया और उनका हाथ लंबा होकर गिलास तक पहुँच गया। फिर वह गिलास किम तक पहुँच गया, जबकि लुर्गन साहब अपनी जगह पर ही बैठे रहे।

पंद्रह फीट दूर हाथ कैसे पहुँच गया? किम हैरान-परेशान सोच रहा था। फिर बोला, "यह तो कमाल हो गया!"

लुर्गन साहब को अपनी तारीफ अच्छी लगी। वे बोले, "अब इसे वापस दूर फेंक दो।"

किम ने कहा, "मगर यह टूट जाएगा।"

वे कहने लगे, "टूट जाने दो, फेंको!"

किम ने फेंका तो गिलास ज़मीन पर गिरा और टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया।

लुर्गन साहब किम के पास आए, आहिस्ते से उसे पकड़ा और कहा, "सबसे बड़े टुकड़े को देखो। गिलास के तमाम टुकड़े एक साथ जुड़ रहे हैं।"

किम को महसूस हुआ कि वाकई टुकड़े जुड़ रहे हैं। उसी वक्त किम ने अपने दिमाग को भटकने से बचाने और ध्यान हटाने के लिए अंग्रेज़ी में पहाड़े (multiplication tables) पढ़ना शुरू कर दिया। ध्यान गिलास के टुकड़ों से हट गया, और जब लुर्गन साहब ने पूछा, "क्या गिलास दोबारा जुड़ चुका है?" तो किम ने कहा, "नहीं, यह तो टूटा हुआ है। क्या यही जादू था?"

लुर्गन साहब ने जवाब दिया, "नहीं, यह जादू नहीं था, यह तुम्हारा इम्तिहान था। तुम कामयाब हुए, मुझे बहुत अच्छा लगा।"

दूसरे लड़के ने यह देखा तो जलन (हसद) के मारे रोने लगा और बोला, "किम को वापस भिजवा दो।"

लुर्गन साहब ने जवाब दिया, "नहीं! जब स्कूल खुलेगा, तब यह जाएगा। अब तुम किम के उस्ताद हो, इसे अलग-अलग चीज़ें सिखाओ।"


LURGAN SAHIB'S ARCANUM

फिर उन्होंने उस लड़के से कहा कि वह अलग-अलग रंगों के पत्थर लेकर आए और किम के साथ एक खेल खेले। लड़के ने कई तरह के रंग-बिरंगे पत्थर सामने रखे। हर बार देखने के बाद लड़के ने उनके बारे में बारीकी से सब कुछ बता दिया। जबकि किम वैसा नहीं कर सका।

लुर्गन साहब ने किम से पूछा, "क्या यह लड़का जीत गया?"

किम ने 'हाँ' में जवाब दिया, तो लुर्गन साहब ने कहा, "ठीक है, फिर यही तुम्हारा उस्ताद है जो तुम्हें ट्रेनिंग देगा।"

अगले दस दिनों तक कभी रंग-बिरंगे पत्थरों, कभी तस्वीरों और कभी दूसरी चीज़ों के साथ किम और वह लड़का यही खेल खेलते रहे। दुकान में जो भी नया आदमी आता, रात को उसके चेहरे, बातचीत के अंदाज़ और उसकी शख्सियत के बारे में वे दोनों पूरे विस्तार से बताते थे।



दुकान में भारत के हर इलाके के पहनावे और लिबास मौजूद थे, जिन्हें वे पहनकर देखते थे। लुर्गन साहब उनका हुलिया भी बिल्कुल उसी इलाके के लोगों जैसा बना देते थे, क्योंकि वे भेष बदलने और मेकअप में भी माहिर थे—और इस तरह की चीज़ें तो किम को बहुत पसंद थीं।

एक दिन किम ने भिखारियों जैसे कपड़े पहने; पहले उसने एक भारतीय और फिर एक अंग्रेज़ से भीख माँगी और दोनों बार कामयाब रहा, क्योंकि वे उसे पहचान नहीं सके। यह देखकर लुर्गन साहब बहुत हँसे और काफी खुश हुए।




GURDWARA SAMIB
BOUTIQUE



एक आदमी, हरी चंदर मुखर्जी, दुकान में आया तो किम ने उससे भी भीख माँगी। इस पर हरी चंदर मुखर्जी ने कहा, "इस लड़के ने बहुत ही शानदार अदाकारी की है, इसे पूरी ट्रेनिंग मिलनी चाहिए।"

लुर्गन साहब ने बताया, "लखनऊ में किम को इसी चीज़ की शिक्षा दी जा रही है।"

हरी चंदर मुखर्जी, जो काफी भारी-भरकम और मोटे-ताज़े थे, के जाने के बाद लुर्गन साहब ने किम से कहा, "जासूस तो बहुत से हैं, मगर जो दस सबसे बेहतरीन हैं, उनमें से एक यह भी शामिल है—बहादुर बंगाली!"



किम ने लखनऊ के अपने स्कूल का सफ़र हरी चंदर मुखर्जी (हरी बाबू) के साथ तय किया। किम मन ही मन हैरान था कि इतना भारी-भरकम और मोटा-ताज़ा इंसान भला जासूसी कैसे करता होगा!

हरी बाबू ने किम से कहा, "किम, खूब मन लगाकर पढ़ाई करो और मेहनत करो... शायद एक दिन हम दोनों एक साथ मिलकर काम कर रहे हों!"

किम ने स्कूल वापस लौटकर बहुत लगन से मेहनत की।



साल बीतते रहे, मगर किम गर्मियों की छुट्टियों में हमेशा महबूब अली के साथ रहने को तरजीह देता। महबूब अली का मानना था कि ईश्वर ने किम को जन्मजात अक्ल दी है और स्कूल की किताबी तालीम उसे जंग लगा देगी, जिससे वह 'ग्रेट गेम' (जासूसी के खेल) का हिस्सा नहीं बन पाएगा। हरी बाबू ने भी इस बात का समर्थन किया।

नतीजतन, कर्नल क्रेटन ने न चाहते हुए भी आखिरकार किम से काम लेने का फैसला कर ही लिया। किम यह जानकर बेहद खुश था कि उसे नक्शे तैयार करने की नौकरी मिल गई है।

वह लखनऊ रेलवे स्टेशन पर महबूब अली से मिला। वहाँ महबूब अली ने उसे विस्तार से समझाया कि 'ग्रेट गेम' के पीछे क्या-क्या चल रहा है और हालात कैसे हैं। किम के पास अब अपनी खुद की पिस्तौल भी थी।


LUCKNOW
RAILWAY STATION —
O & R RLY

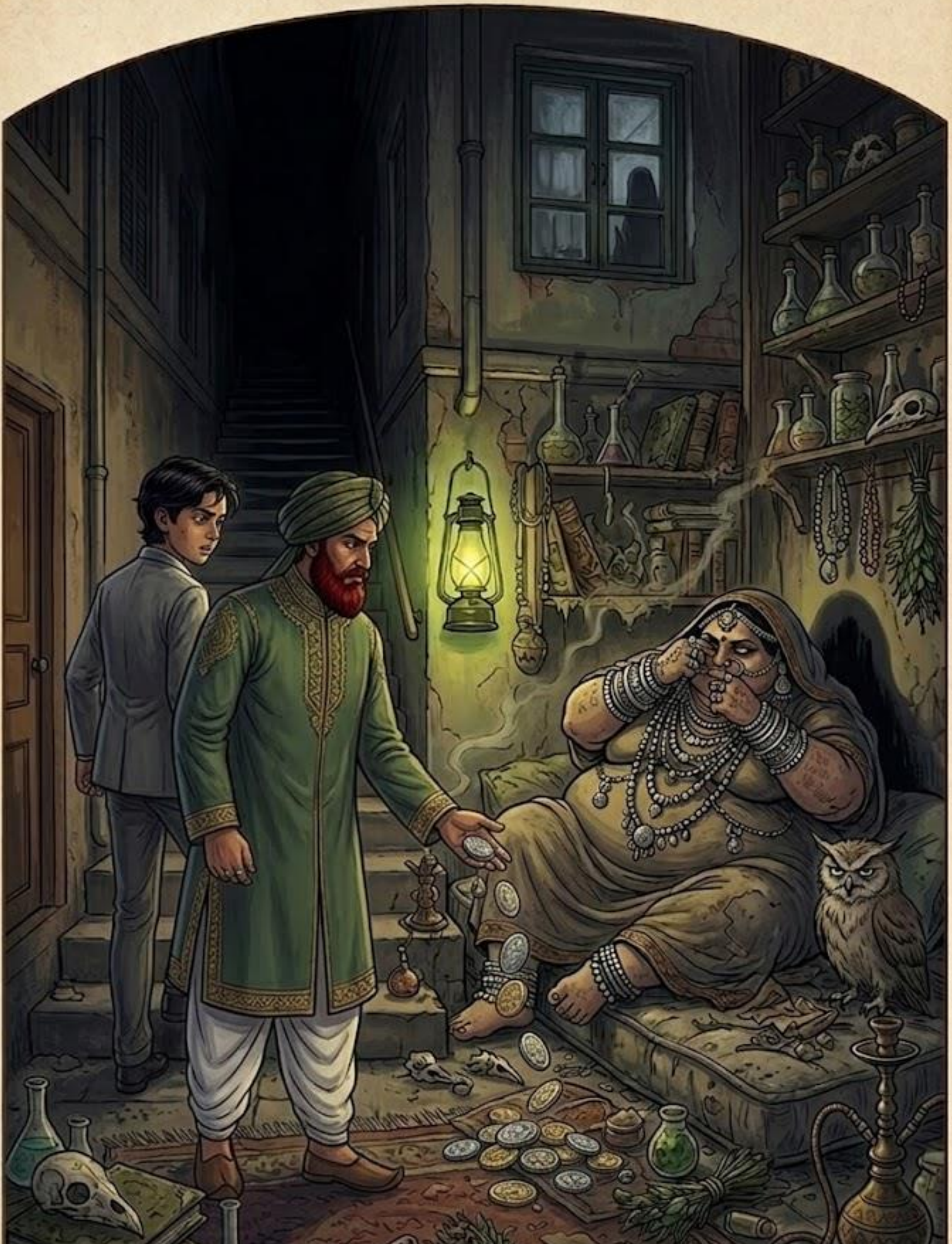
महबूब अली ने गुस्से में कहा, "बाज़ारों में चिराग (लैंप) जल चुके हैं, तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा... आओ मेरे साथ!"

वे अज़ीमुल्लाह की पान की दुकान के पास से गुज़रते हुए पुरानी और गंदी सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ने लगे।


عظیم اللہ پان کی دکان
lucknow special

वे एक अँधेरे कमरे में पहुँच गए। कमरे में भी गंदगी थी और बिखरा हुआ सामान बेहद पुराना था, जहाँ हुक्के और तंबाकू की बदबू फैली हुई थी।

कोने में एक मोटी औरत लेटी हुई थी, जो औरत से ज़्यादा कपड़ों की गटरी लग रही थी। उसके पूरे शरीर पर—नाक, कान, गले, कलाई और बाज़ुओं में—जगह-जगह स्थानीय ज़ेवर सजे हुए थे, जिन्होंने उसके ज़रा सा हिलते ही तेज़ छनछनाहट की आवाज़ पैदा की।



महबूब अली ने किम से कहा, "जिस रास्ते पर तुम चल पड़े हो, वहाँ बहुत खतरे हैं। तुम्हारी सुरक्षा के लिए तुम्हें हनीफ़ा के पास लाया गया है। यह भेष बदलने और रंग-रूप बदलने में माहिर है, और इसके किए का कोई तोड़ भी नहीं है। तुम मुझे अपने बेटे की तरह अज़ीज़ हो, इसलिए मैं तुम्हारी मुकम्मल सुरक्षा का बंदोबस्त करना चाहता हूँ। अपना सारा सामान एक तरफ रख दो, और हनीफ़ा, तुम अपना काम शुरू करो।"

जब उस औरत ने अपने दोनों हाथ किम की तरफ फैलाए, तब किम को पता चला कि यह तो अंधी (नाबीना) है।

वह कहने लगी, "हाँ, मैं जिन लोगों पर यह अमल करती हूँ, वे हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाते हैं।"

जब औरत एक अँधेरे कमरे में चली गई, तो किम समझ गया कि यहाँ जादू-टोना हो रहा है और वह थोड़ा परेशान हो गया। इस पर महबूब अली ने उसे दिलासा दिया, "मेरे बेटे, परेशान मत हो... मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारा रखवाला।"

औरत दूसरे कमरे में थी। किम को वह दिखाई तो नहीं दे रही थी, मगर उसके ज़ेवरों के बर्तनों से टकराने की आवाज़ लगातार आ रही थी और वह बुदबुदाते हुए कुछ पढ़ रही थी।



दिया सलाई जलाई गई और धुएँ से पूरा कमरा भरने लगा, जिसकी खुशबू और तासीर मदहोश करने वाली थी। किम धीरे-धीरे नींद और बेहोशी की हालत में जा रहा था और उसके कानों में उस औरत के शब्द गूँज रहे थे, जो शैतान और उसके चेलों को मदद के लिए बुला रही थी। उसकी आवाज़ किम को ऐसे सुनाई दे रही थी जैसे बहुत दूर से आ रही हो। फिर अपनी बहुत नर्म मगर खौफनाक उंगलियों से उसने किम को छुआ।

महबूब अली ने उस वक्त तक किम को मजबूती से पकड़े रखा जब तक वह एक ठंडी आह भरकर पूरी तरह बेहोश न हो गया। महबूब अली ने कहा, "अल्लाह! इसमें कितनी ताकत थी, शायद अंग्रेज़ होने की वजह से। अगर नशा फैलाने वाला यह धुआँ न होता, तो यह कभी बेहोश न होता। खैर हनीफ़ा, तुम अपनी दावत और उन्हें बुलाने का काम जारी रखो।"

वह औरत दर्दनाक आवाज़ में अपनी बेनूर आँखों को पश्चिम (मगरिब) की दिशा में करते हुए कहने लगी, "तुम जो सुनने वाले हो, जो अपने कानों से सुनते हो... मेरी आवाज़ सुनो और यहाँ हाजिर हो जाओ!"

अँधेरे कमरे में उसकी रहस्यमयी आवाज़ गूँज रही थी।

तभी बाहर से हरी बाबू के घबराहट में खाँसने की आवाज़ आई, तो औरत ने कहा, "दोस्त! जादू का अमल चल रहा है, इसमें रुकावट बर्दाश्त नहीं की जाती।" उसने अपना अनुष्ठान जारी रखा और ऐसा लगा जैसे छत से उसकी बातों का जवाब दिया जा रहा हो।

दरअसल, हरी बाबू भी वहाँ पहुँच चुके थे और खिड़की से यह सब कुछ देख रहे थे।

अपने विचारों में खोई हुई वह औरत तंत्र-मंत्र करते हुए दाएँ-बाएँ झूम रही थी, जबकि किम बेहोशी की हालत में उसके सामने पड़ा था। बहुत प्राचीन जादू की रस्मों के मुताबिक वह एक के बाद दूसरे शैतान को पुकार रही थी कि वे इस लड़के की हिफाज़त करें। ऐसा लग रहा था जैसे कोई अनदेखी ताकत उसे जवाब भी दे रही हो।

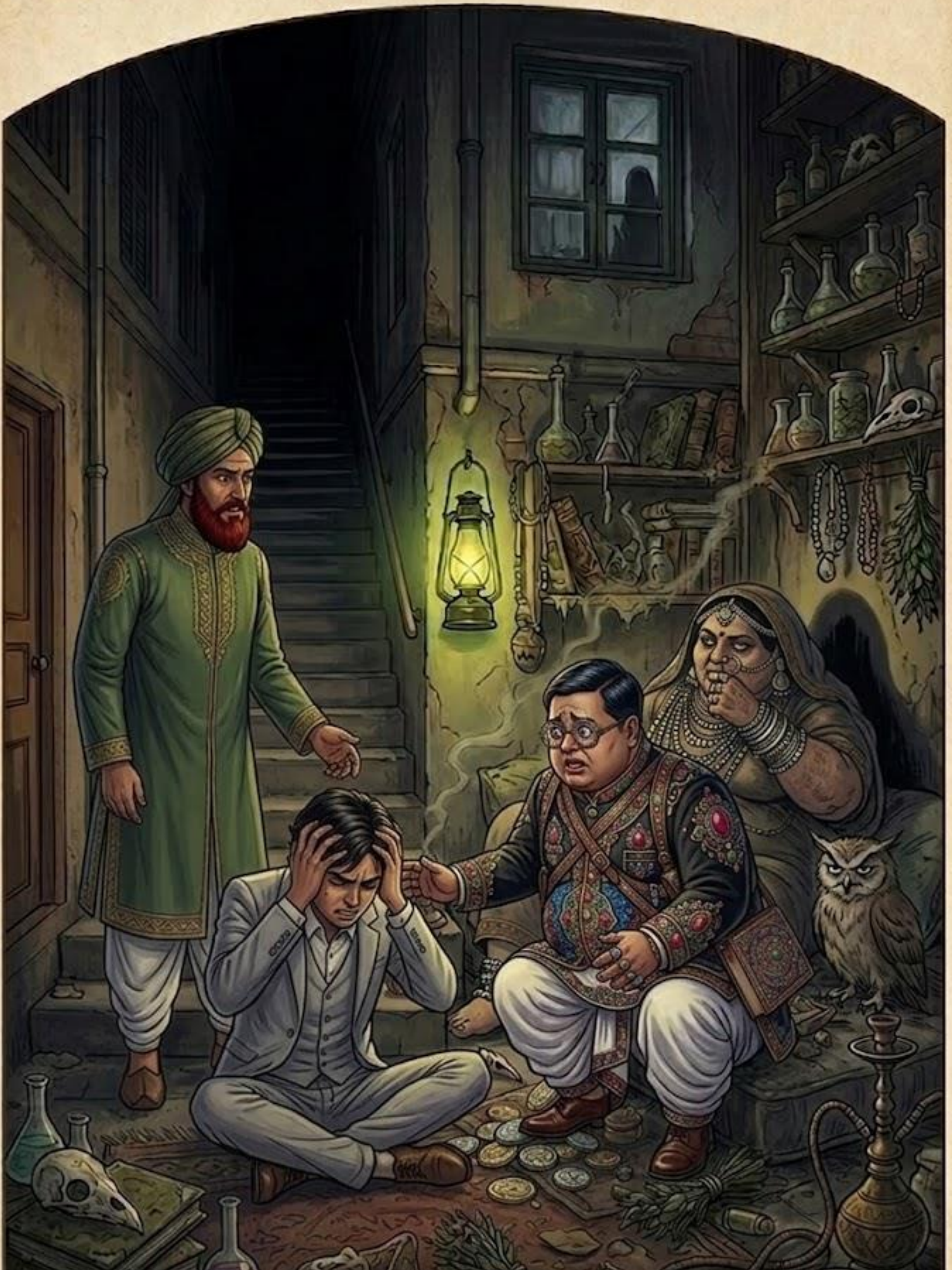


कुछ देर के बाद हनीफ़ा भी बेहोश होकर किम के पास ही बेधड़क और बेहिस-ओ-हरकत गिर पड़ी, और पूरे कमरे में गहरा सन्नाटा और खामोशी छा गई।



हरी बाबू को परेशान देखकर महबूब अली ने कहा, "किम की हिफाज़त के लिए यह बेहद ज़रूरी था और हनीफ़ा ऐसे कामों में बहुत महारत रखती है। आपको भी बिल्कुल खौफज़दा होने की ज़रूरत नहीं है।"

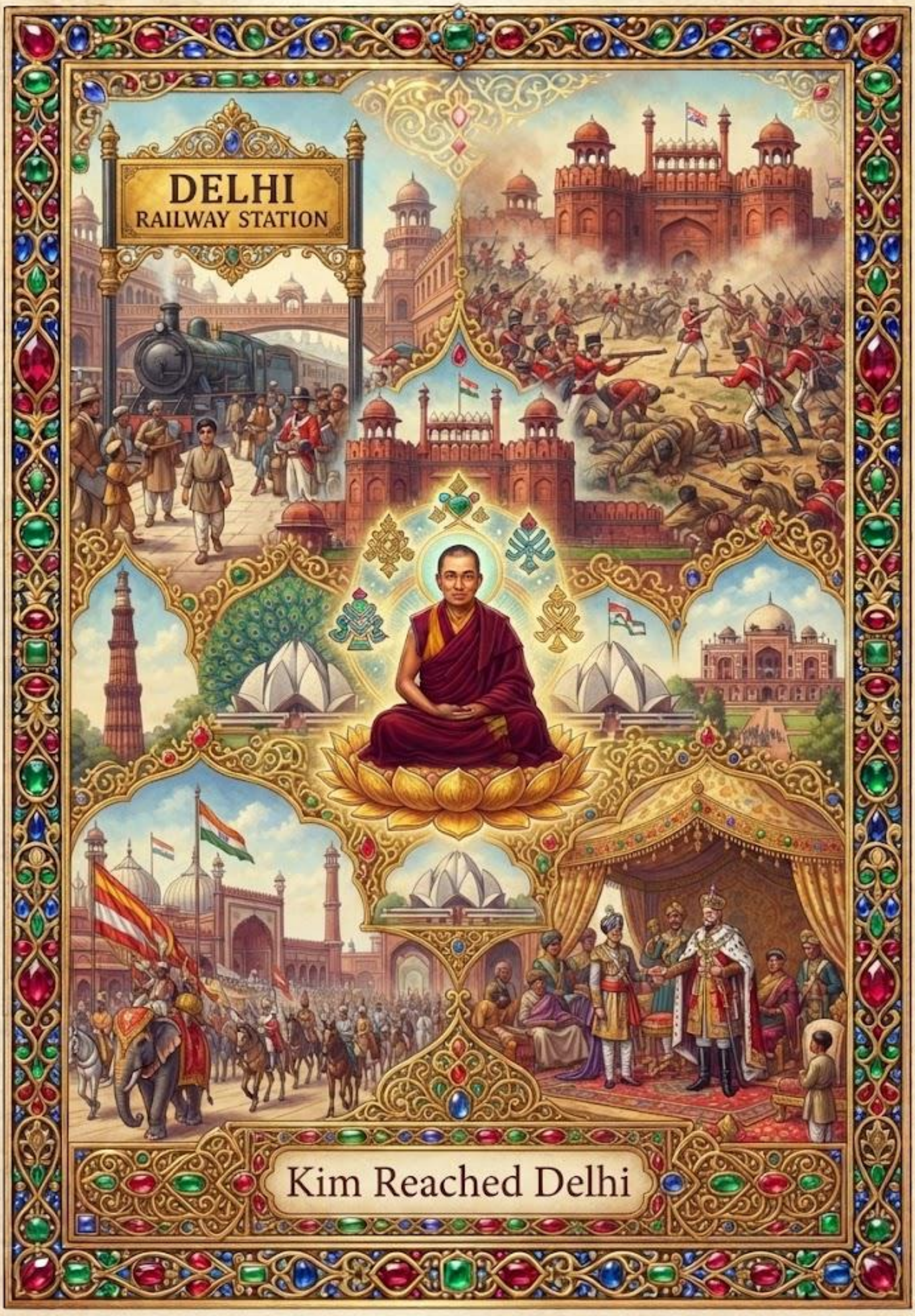
हरी बाबू ने खुद को तसल्ली देने के लिए अंग्रेज़ी में कहा, "खौफ तो उन चीज़ों से होता है जो दिखाई देती हैं। एक तरफ हम जादू को बुरा बताते हुए उसकी छानबीन करते हैं—तो उसी जादू से डरना कितनी अजीब बात है! और दूसरी तरफ, अंधकार की ताकतों पर यकीन रखते हुए 'रॉयल सोसाइटी' के लिए किस्से-कहानियाँ भी जुटाते हैं।"



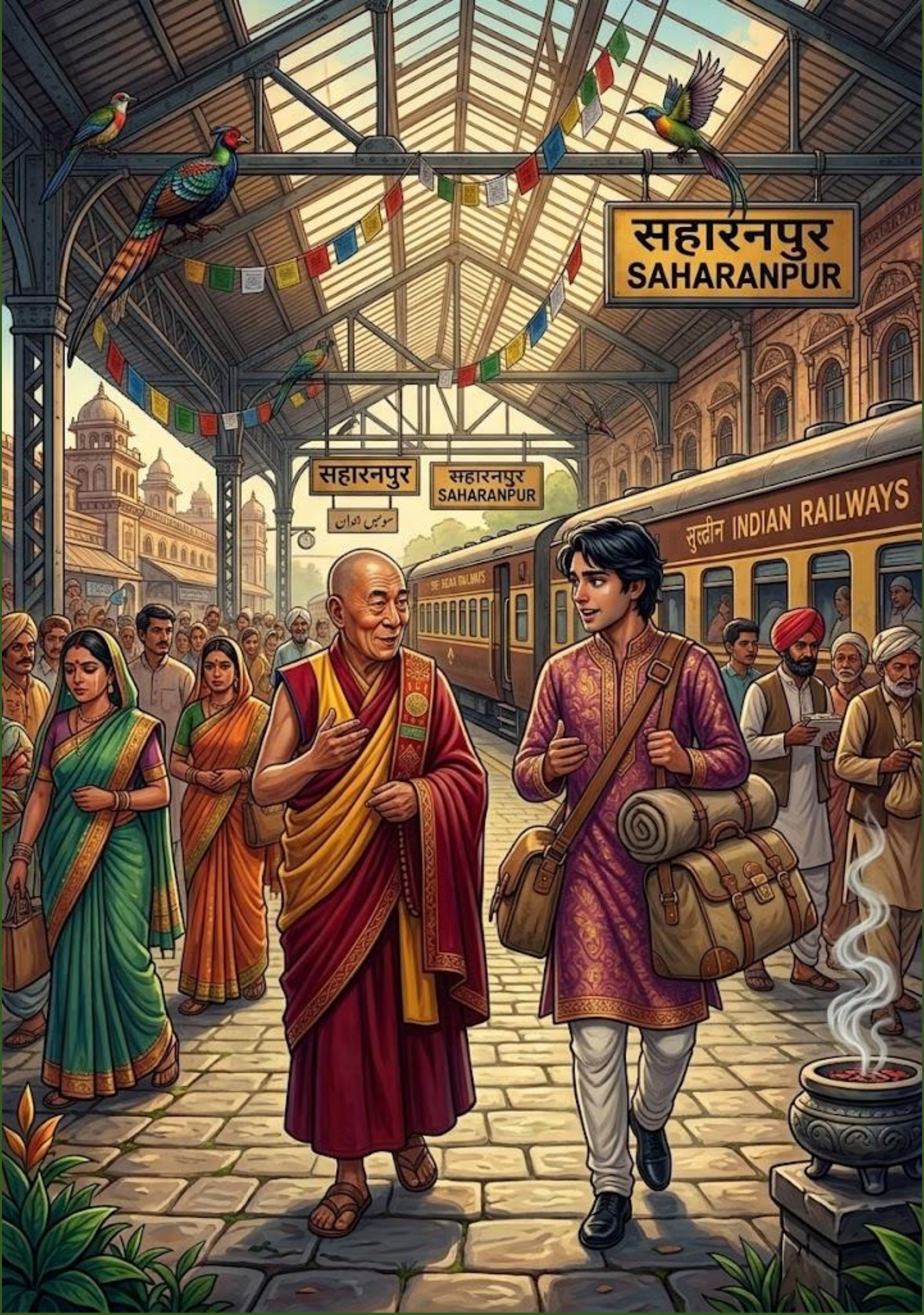
फिर किम रेलगाड़ी से बनारस गया, जहाँ उसकी मुलाकात लामा से हुई। किम उनके कदमों में गिर पड़ा और बोला, "मैंने तीन साल स्कूल में पढ़ाई की है, जो सिर्फ आपकी वजह से ही संभव हो सकी।"

लामा ने उससे कहा कि अब उन्हें उत्तर की ओर पहाड़ी इलाकों का सफर करना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि जो नेक और सखी दिल वाली बूढ़ी औरत उन्हें काफिले के साथ मिली थी, सहारनपुर जाकर उससे भी मुलाकात करनी चाहिए।

इसके बाद दोनों ने दिल्ली की ट्रेन पकड़ी—और दिल्ली शहर तो वाकई कमाल का था!


DELHI
RAILWAY STATION
Kim Reached Delhi

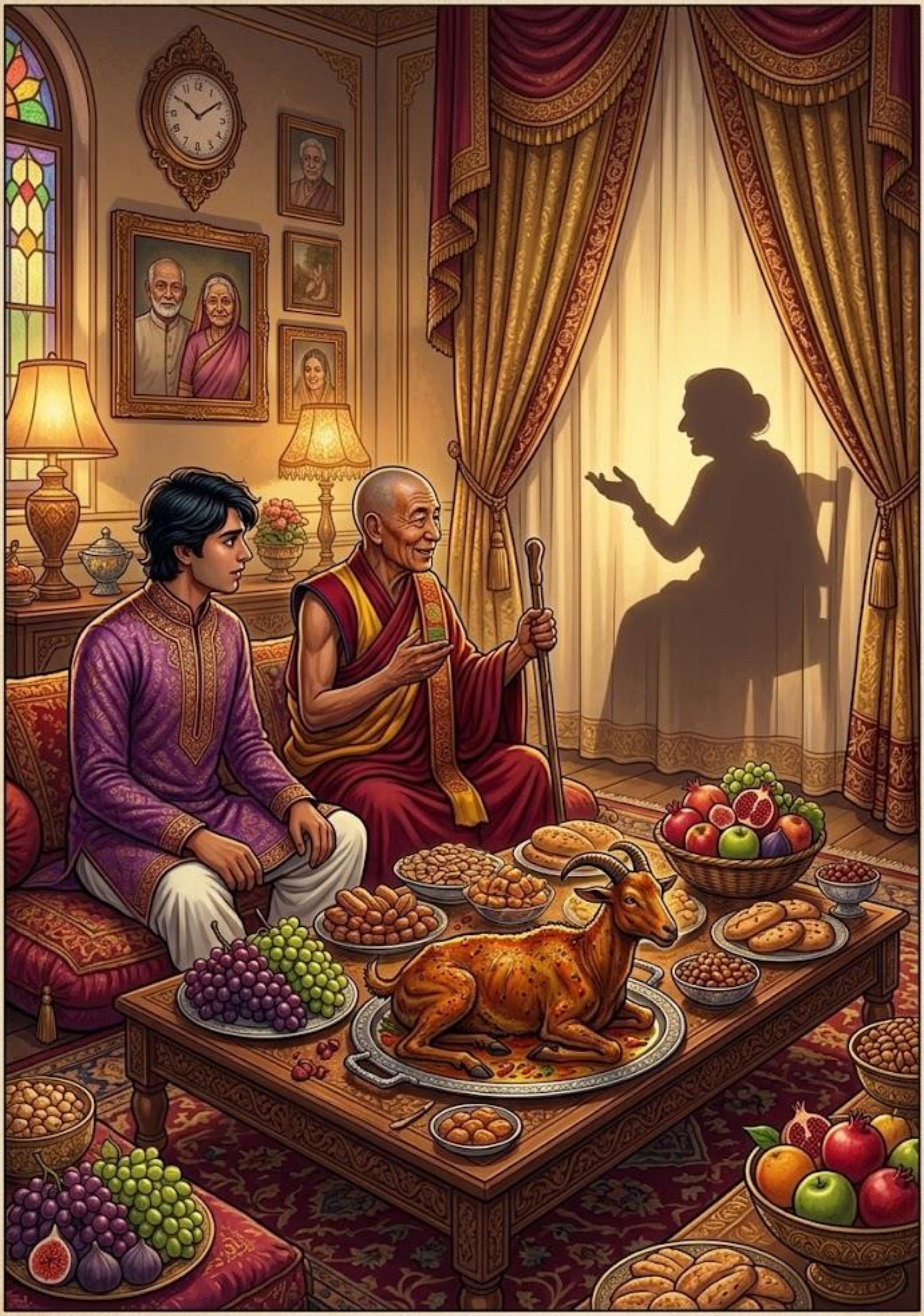
और फिर वे दिल्ली से सहारनपुर पहुँच गए।


सहारनपुर
SAHARANPUR
सहारनपुर
सहारनपुर
SAHARANPUR
INDIAN RAILWAYS

फिर उन्होंने पैदल सफ़र शुरू किया। रात को लोग उन्हें खाना खिलाते और लामा किम को बुद्ध के दर्शन (फ़िलॉसफ़ी) के बारे में समझाते कि इंसान किस तरह जन्म लेते हैं, मरते हैं और फिर उन्हें नया जीवन मिलता है—ज़िंदगी का पहिया इसी तरह लगातार चलता रहता है।

अपने फलों के बागों के बीच उस बूढ़ी औरत को लामा के आने की खबर मिली। उसने तुरंत अपने नौकर को काबुल के अंगूरों और दूसरे फलों के साथ लामा के पास भेजा और उन्हें अपने घर आने का न्योता दिया।

लामा और किम जब उस औरत के पास पहुँचे, तो वह बेहद खुश हुई और उसने अपने पोते-नवासियों के बारे में बताया। उसने लामा से दुआ और तावीज़ की गुज़ारिश की और यह भी बताया कि एक हकीम भी वहाँ मौजूद है, जो बीमार बच्चे को दवा दे रहा है।



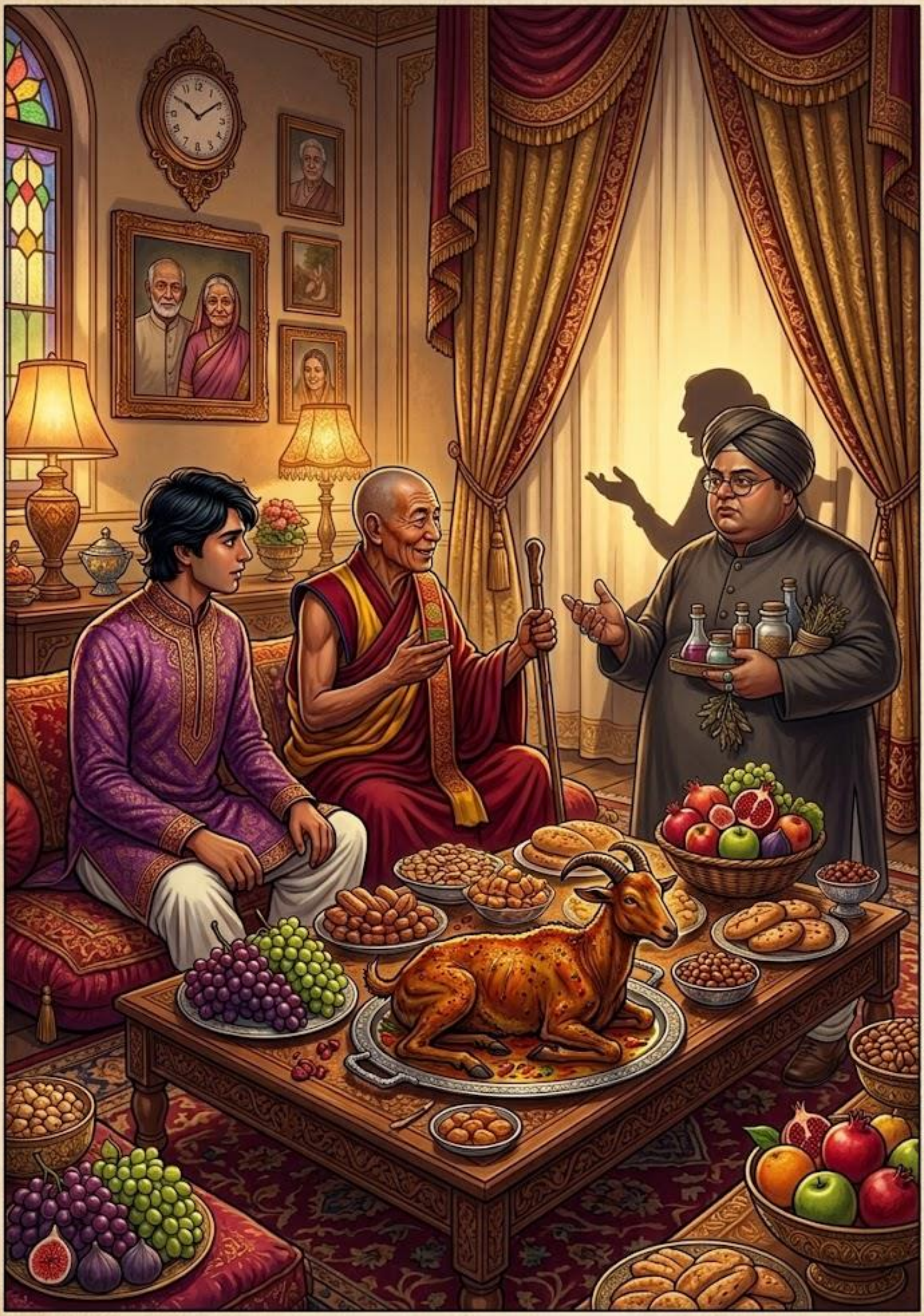
"महारानी साहिबा, वह हकीम कौन है?" किम ने पूछा।

बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "हालाँकि वह तुम्हारी तरह सफ़र में ही रहता है, मगर है अच्छा हकीम। सफ़र के दौरान कीमती दवाएँ बेचता है। मेरे पेट का दर्द तो उसकी एक ही गोली से ठीक हो गया।"

नौकर ने बताया कि वह हकीम खाने के बाद पीछे वाले क्वार्टर में सो रहा है। किम ने कहा, "उससे मिलना और बातचीत करना काफी मजेदार रहेगा।"

जब हकीमों के इलाज और उनकी दवाओं की बुराई होने लगी, तो औरत ने लामा से कहा, "ठीक है, तो आप ही मुझे दुआ और तावीज़ दे दीजिए।"

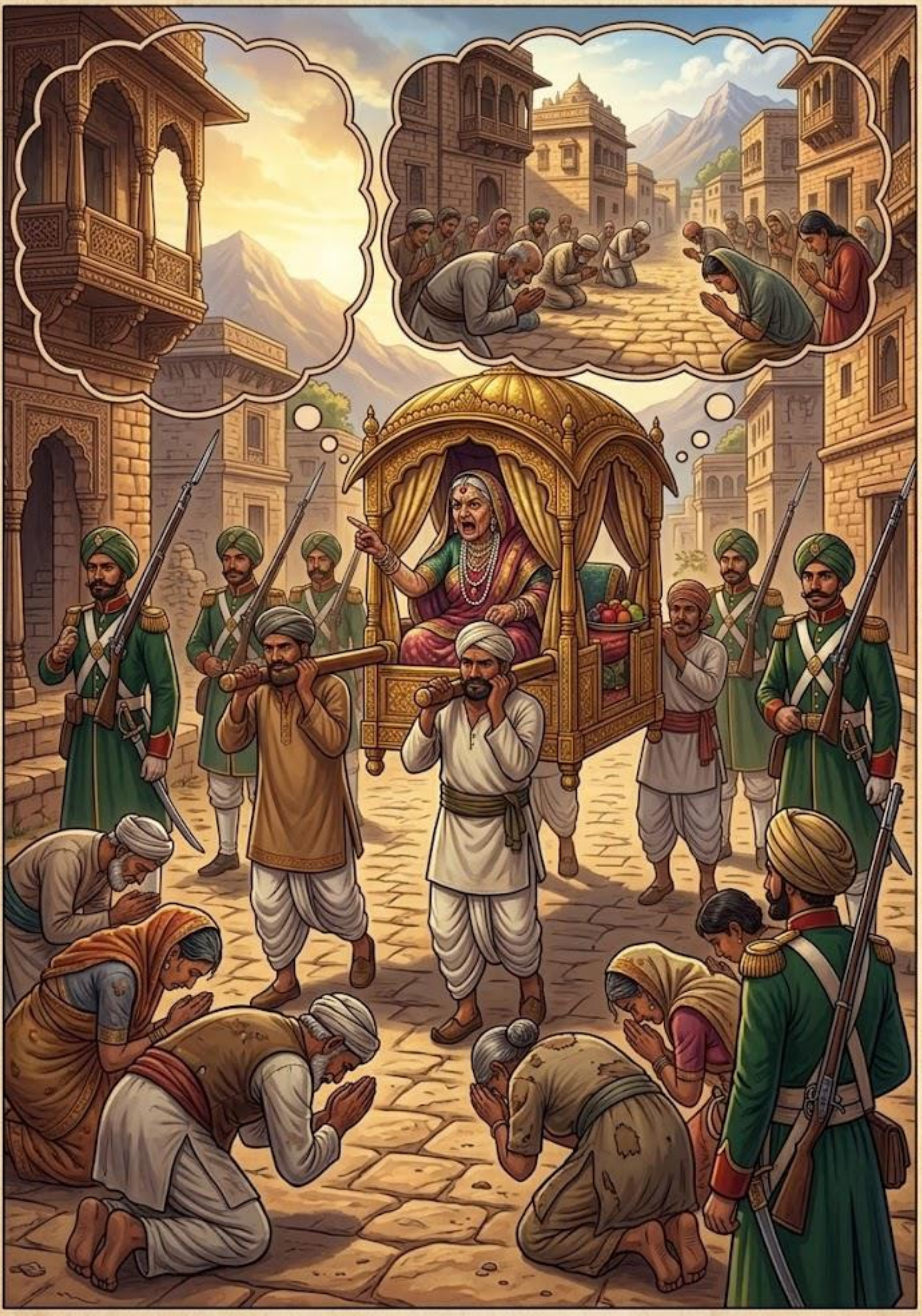
तभी एक भारी-भरकम आदमी अंदर दाखिल हुआ और बोला, "आप लोगों को दवाओं की अहमियत का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है!"



बूढ़ी औरत ने खुद को इस बहस से अलग करते हुए कहा, "मुझे अपनी जमीनों की देखभाल करने जाना है, क्योंकि बच्चों का बाप दूसरे शहर में है। हकीम साहब और छोटे लामा को ही यह फैसला करने दीजिए कि इनमें से कौन सी चीज़ बेहतर है।"

यह औरत, जिसे आसपास के बीस गाँवों के लोग अच्छी तरह जानते थे और बेहद इज़्ज़त करते थे, वहाँ से चली गई। इलाके के लोग उसकी ज़बान की सख्ती और उसकी दरियादिली—दोनों से अच्छी तरह वाकिफ़ थे। उसकी धाक ऐसी थी कि उस पूरे इलाके में चोरी-चकारी का नामो-निशान तक न था।

जब वह अपनी पालकी में सवार होकर रवाना हुई, तो उसके पीछे नौकरों-चाकरों का एक बड़ा काफिला था। उसने पूरे इलाके का मुआयना बड़े सख्त अंदाज़ में किया, और उसकी कड़कदार आवाज़ दूर-दूर तक सुनी जा सकती थी।



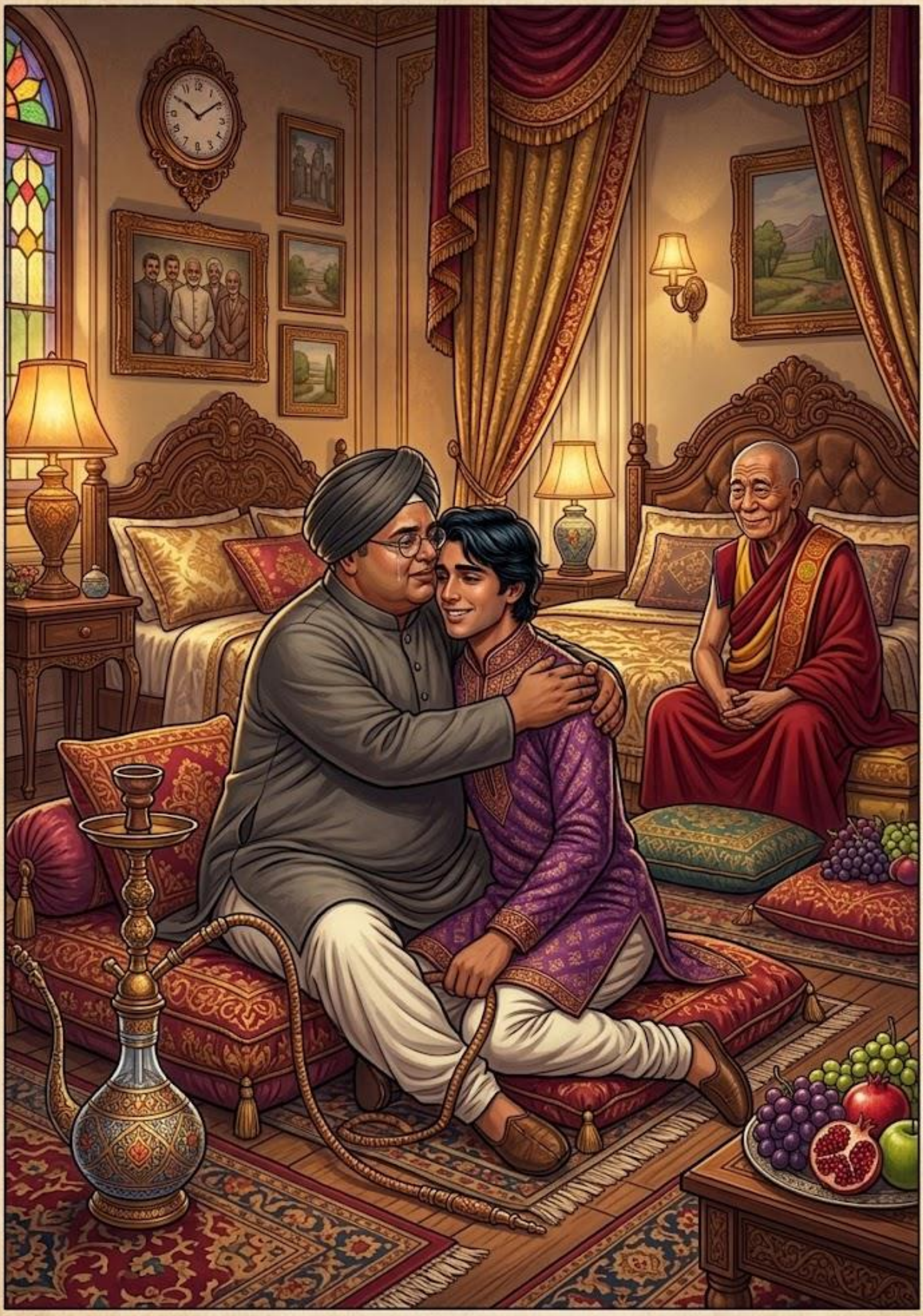
औरत के जाने के बाद जब हुक्के का दौर शुरू हुआ, तो हकीम ने आहिस्ता से कहा, "आपका क्या हाल है, मिस्टर ओ'हारा (Mr. O'Hara)? आपको देखकर बेहद खुशी हुई।"

किम अपना असली नाम सुनकर हैरान-परेशान वहीं बैठा रह गया। दरअसल, वह हकीम के भेष में आए हरी बाबू को पहचान ही नहीं पाया था।

हुक्का पीते और इलायची चबाते हुए हरी बाबू बोले, "मैंने कहा था न कि एक दिन जब हम दोबारा मिलेंगे, तो तुम मुझे पहचान नहीं पाओगे!"

किम ने हैरानी से पूछा, "बाबू जी, आप यहाँ कैसे?"

जवाब आया, "हाँ, 'दैट इज़ द क्वेश्चन' (That is the question)... शेक्सपियर ने भी तो कुछ ऐसी ही बात कही थी! दरअसल, मुझे आपकी शानदार तरीके से तालीम मुकम्मल करने और ग्रेजुएट होने की खबर मिली, तो मेरे समेत पूरा महकमा और आपके तमाम पुराने साथी बेहद खुश हुए। मैं बस आपको बधाई (मुक़ाम-ए-मसर्रत) देने आया हूँ।"



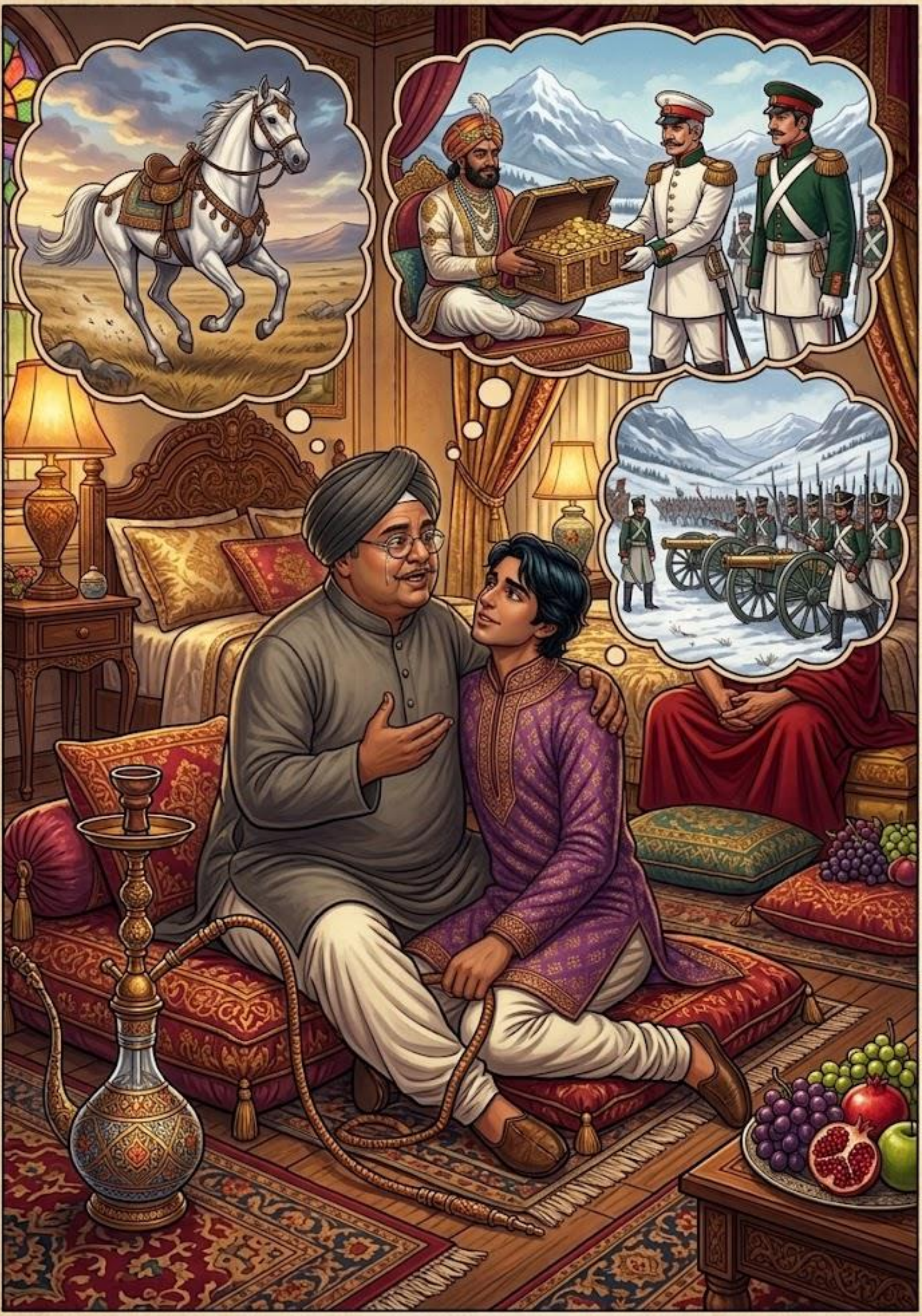
किम ने जब अपनी तारीफ सुनी कि पुराने साथी उस पर फक्र कर रहे हैं, तो उसे बेहद खुशी हुई। मगर उसने सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा, "बाबू जी! असल बात बताइए, और ज़रा हिंदी में बताइए... सिर्फ मुबारकबाद देने इतनी दूर तो कोई भी नहीं आता!"

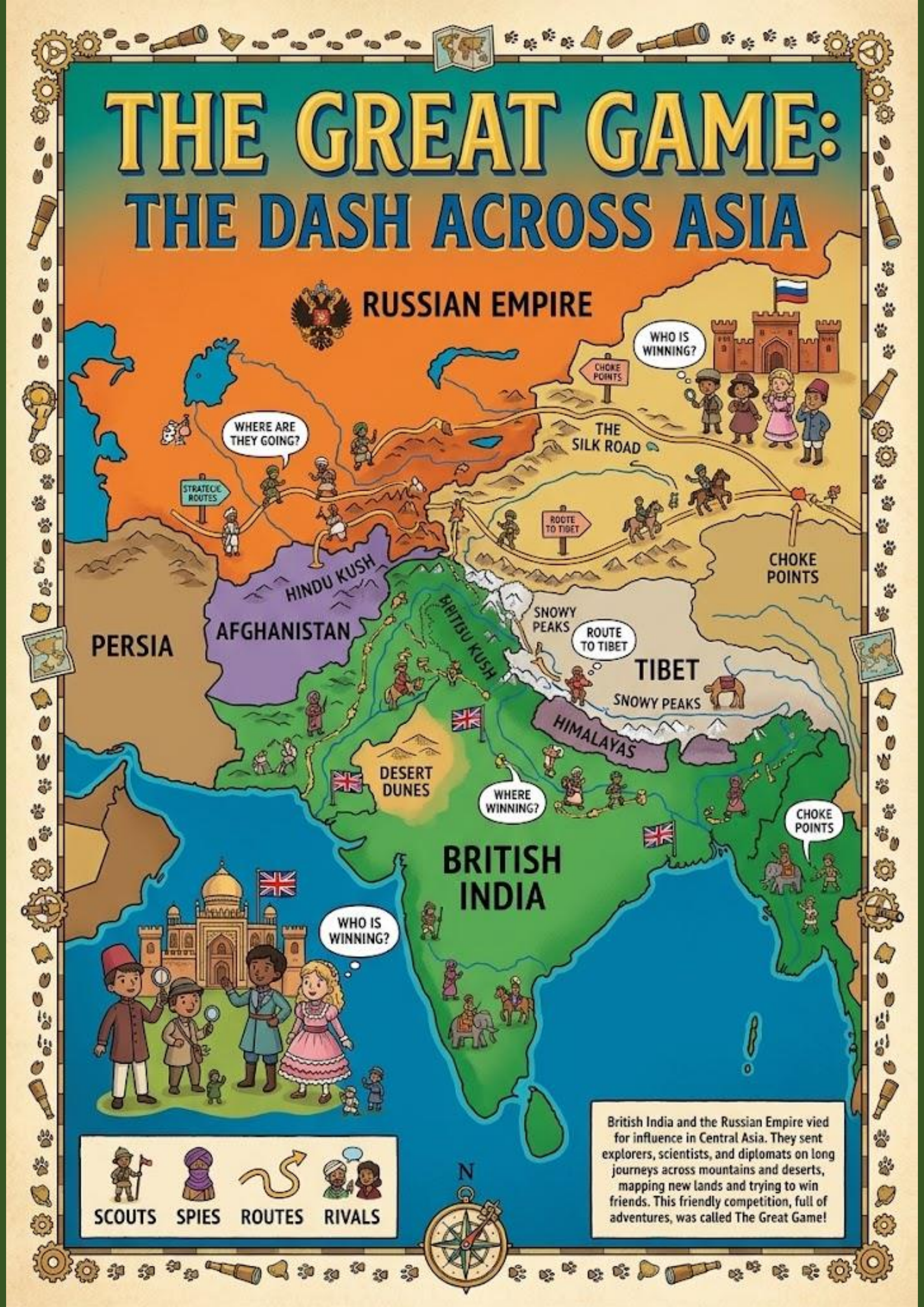
हरी बाबू ने मुस्कुराते हुए कहा, "मिस्टर ओ'हारा, दरअसल मुझे आपकी ही तलाश थी। रास्ते के लोगों से मुझे लामा जी और आपके बारे में पता चला। मुझे यह भी मालूम था कि यह बूढ़ी महारानी लामा जी से मुलाकात करने ज़रूर आएँगी। चूँकि मैं एक अच्छा डॉक्टर भी हूँ, इसलिए इलाज करने के बहाने यहाँ रुककर आप ही का इंतज़ार कर रहा था।"

हरी बाबू ने बताया कि वह 'ग्रेट गेम' के सिलसिले में ही वहाँ मौजूद हैं। उन्होंने आगे कहा, "महबूब अली की जो इत्तला तुमने घोड़ों की सांकेतिक भाषा (कोड) में पहुँचाई थी, उस पर तुरंत कार्रवाई हुई। सेना भेजी गई, मगर बिना किसी जंग के ही मकसद हल हो गया। हालाँकि, भारी खर्चों के चलते आखिरकार सेना को वापस बुलाना पड़ा।

मगर सेना की वापसी के बाद भी 'ग्रेट गेम' रुका नहीं, वह अब भी जारी है। इलाके के दो राजाओं ने सरकार से पैसों के बदले उस क्षेत्र की निगरानी की ज़िम्मेदारी ली थी। सरकार को वहाँ सड़कें खुद बनवानी थीं, और मैं भी वहीं तैनात था। तभी मैंने भाँप लिया कि असल में वहाँ के राजा तो रूसियों से रिश्वत लेकर उनसे जा मिले हैं! मैंने तुरंत यह खबर सरकार को दी और महबूब अली ने भी इसकी पुष्टि की।

मुझे आज भी याद है, वहाँ कड़ाके की ठंड थी! इसके बाद मुझे दक्षिण में बुलाकर इस खबर की पूरी तरह से तस्दीक (पुष्टि) की गई।"




THE GREAT GAME:
THE DASH ACROSS ASIA
RUSSIAN EMPIRE
WHO IS WINNING?
CHOKE POINTS
WHERE ARE THEY GOING?
STRATEGIC ROUTES
THE SILK ROAD
ROUTE TO TIBET
CHOKE POINTS
HINDU KUSH
BRITISU KUSH
SNOWY PEAKS
ROUTE TO TIBET
PERSIA
AFGHANISTAN
TIBET
SNOWY PEAKS
HIMALAYAS
DESERT DUNES
WHERE WINNING?
CHOKE POINTS
BRITISH INDIA
WHO IS WINNING?
SCOUTS
SPIES
ROUTES
RIVALS
N
British India and the Russian Empire vied for influence in Central Asia. They sent explorers, scientists, and diplomats on long journeys across mountains and deserts, mapping new lands and trying to win friends. This friendly competition, full of adventures, was called The Great Game!

हरी बाबू ने आगे का प्लान समझाते हुए किम से कहा, "मगर अब वहाँ दो संदिग्ध आदमी दोबारा देखे गए हैं। वे शिकारियों के भेष में घूम रहे हैं, लेकिन असल में वे रूसी जासूस हैं! उनमें से एक रूसी है और दूसरा फ्रांसीसी, जो वहाँ के स्थानीय राजाओं और सरदारों को रूस के पक्ष में करने की कोशिश में लगे हैं। वे उन्हें कीमती तोहफे दे रहे हैं और गुप्त समझौते (अहद-ओ-पैमान) कर रहे हैं। उनके पास जासूसी के आधुनिक सामान भी देखे गए हैं।

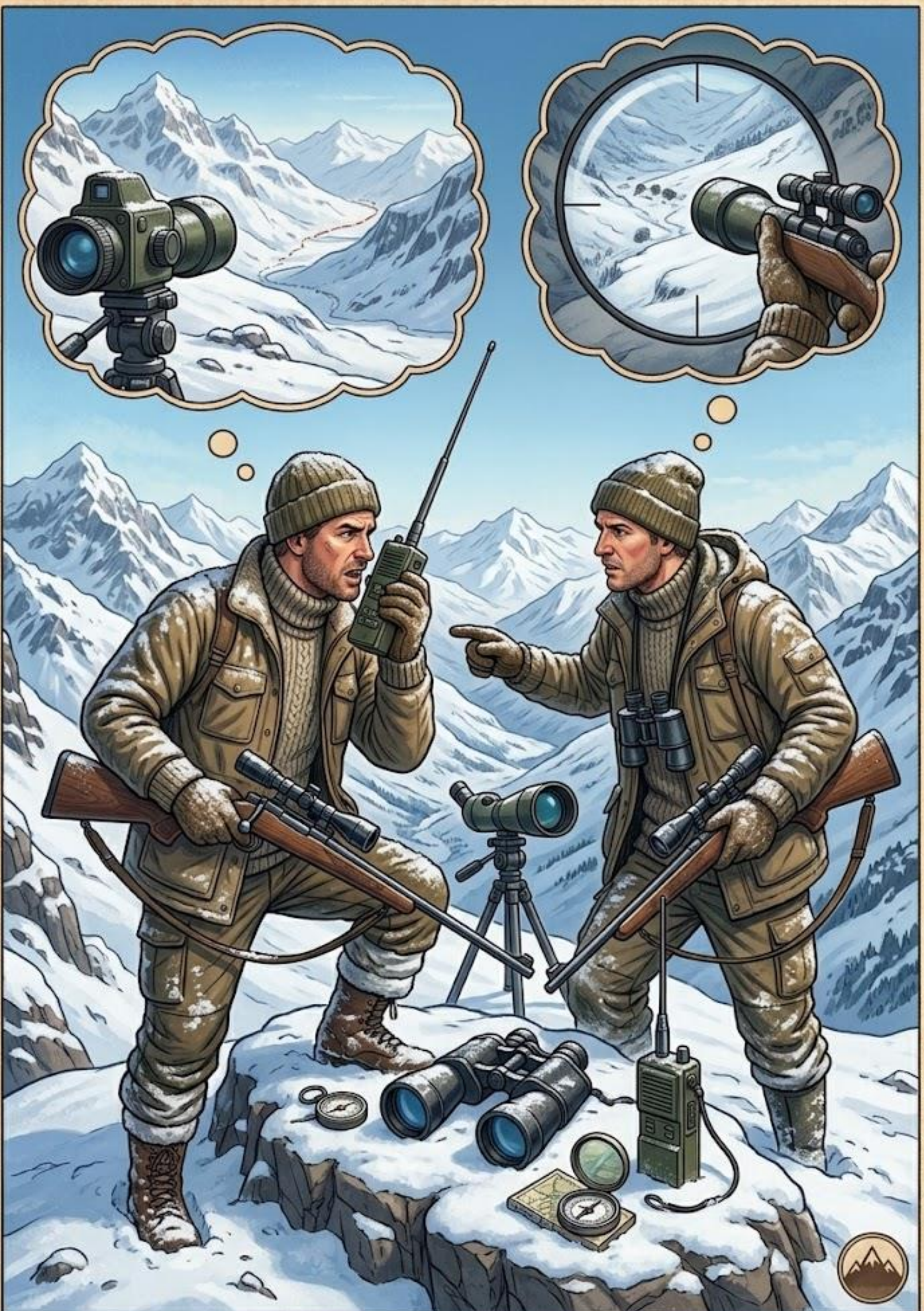
राजा लगातार उनके संपर्क में हैं और उनसे मिल चुके हैं। इसीलिए मुझे हुक्म मिला है कि मैं दोबारा वहाँ जाकर उन दोनों से खुफिया जानकारियाँ हासिल करूँ। जब वे खालें और शिकार का सामान बेचने के लिए करीब आएँगे, तो मैं उनके साथ घुल-मिल जाऊँगा और उनका सच पता लगा लूँगा।

मगर किम! मुझे इस मिशन में तुम्हारी ज़रूरत है। तुम चाहो तो मना भी कर सकते हो, लेकिन अगर तुम लामा जी के साथ उत्तर की पहाड़ियों की तरफ मेरे साथ चलो, तो मुझे बेहद खुशी और इत्मीनान होगा।"

किम ने मुस्कुराकर कहा, "लामा जी तो पहाड़ियों पर जाने की बात सुनकर ही बहुत खुश हो जाएँगे!"

हरी बाबू बोले, "ठीक है, मैं पहले रवाना हो जाऊँगा और सफर में तुमसे कुछ मील आगे-आगे चलूँगा।"

उस पूरी रात किम इसी बारे में सोचता रहा, क्योंकि 'ग्रेट गेम' का सक्रिय हिस्सा बनना तो उसका अपना भी सपना था। वह मन ही मन सोच रहा था, *"लामा जी ने मुझ पर बहुत एहसान किए हैं, महबूब अली और कर्नल क्रेटन ने भी... मगर लामा जी के एहसान सबसे बढ़कर हैं। मैं उन दोनों विदेशी जासूसों को उनके जासूसी सामान के साथ पकड़ते हुए ज़रूर देखूँगा!"*



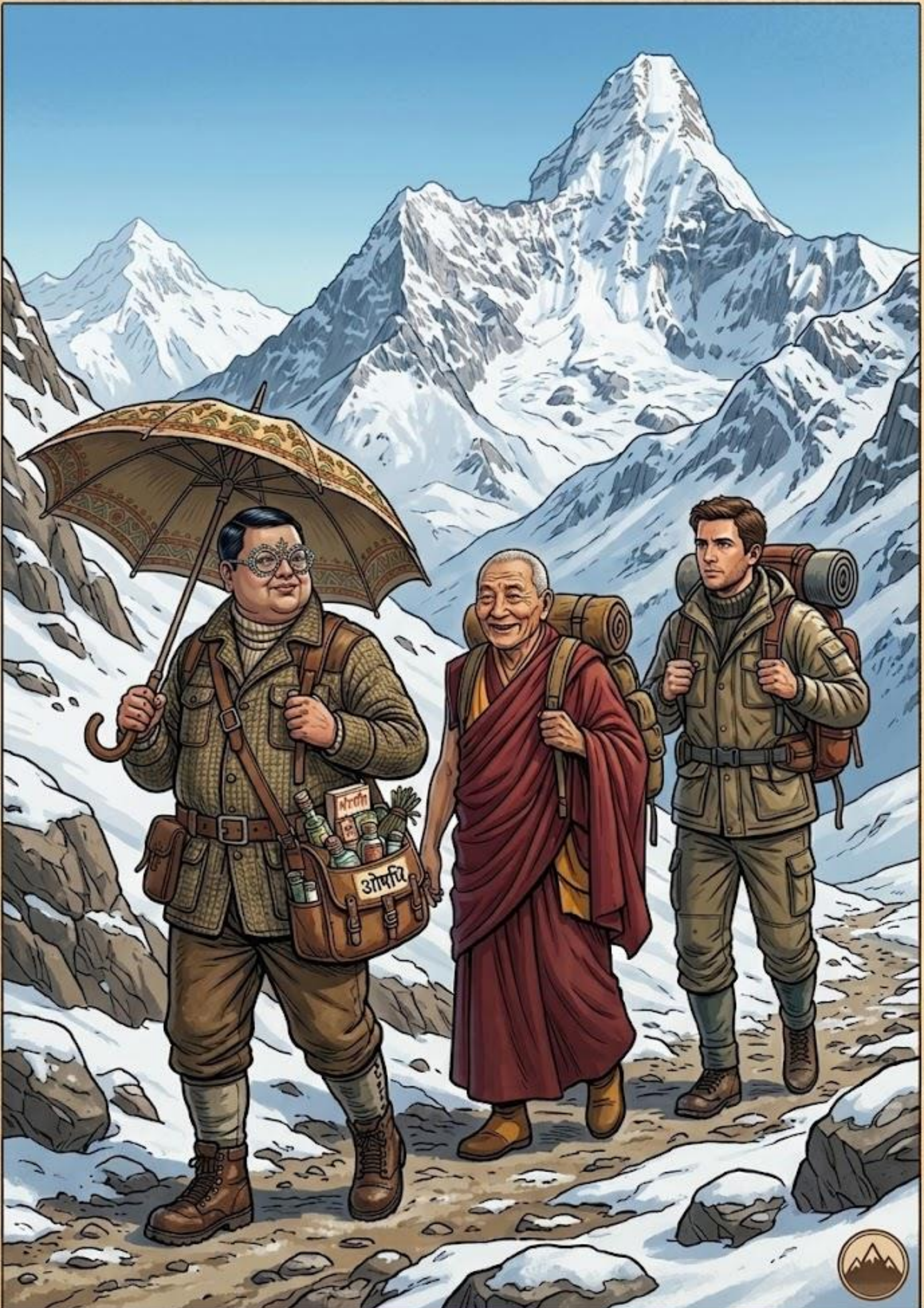
दूसरे दिन किम ने लामा के सामने पहाड़ियों की खूबसूरती, वहाँ की बर्फ और ठंडी हवाओं की तारीफ की। हरी बाबू ने भी लामा जी को सलाह दी कि पहाड़ियों की खुली हवा में जाने से उनकी सेहत पूरी तरह सुधर जाएगी, जिसके बाद लामा वहाँ जाने के लिए राजी हो गए।

हरी बाबू अपनी दवाओं के थैले और छतरी के साथ पहाड़ियों की तरफ पहले ही रवाना हो गए। जब लामा ने भी उत्तर की पहाड़ियों पर जाने की इच्छा जताई, तो बूढ़ी महारानी ने उनके सफर के लिए बहुत सारा सामान और खाने-पीने की चीज़ें तैयार करवा दीं।

लामा ने किम से कहा, "ज़रूर यह औरत बहुत ज़्यादा बोलती है, मगर बेहद नेक और मेहमाननवाज़ है। इसकी तीमारदारी से मैं काफी बेहतर महसूस कर रहा हूँ और पहाड़ियों पर जाकर पूरी तरह तंदुरुस्त हो जाऊँगा... हकीम ने भी मुझे यही बताया है। सारे जहान के दोस्त किम! तुम भी तो मेरे साथ हो, मुझे मेरी पवित्र नदी (Sacred River) भी ज़रूर मिल जाएगी।"

लामा ने बड़े इत्मीनान से पहाड़ियों की ओर देखा और उस तरफ कदम बढ़ा दिए। पहाड़ियों के बीच पहुँचते ही लामा—जिनका अपना मूल निवास वही पहाड़ी इलाका था—एक नई ताकत और ऊर्जा महसूस करने लगे और उनकी चलने की रफ्तार तेज़ हो गई।

दूसरी ओर किम, जो मैदानी इलाकों का आदी था, पहाड़ियों पर चढ़ते-चढ़ते बुरी तरह थक चुका था। एक तरफ ऊँचे पहाड़ थे तो दूसरी तरफ घने पेड़ों के जंगल, और जैसे-जैसे वे ऊँचाई पर बढ़ रहे थे, ठंड भी लगातार बढ़ती जा रही थी।


ओपधि

जब एक पहाड़ी आदमी ने किम को एक मोटा मगर सस्ता कोट तोहफे में दिया, तो किम ने बहुत राहत और खुशी महसूस की, क्योंकि उसे सख्त ठंड में इसकी सख्त ज़रूरत थी।

दूसरी तरफ लामा यह देखकर हैरान थे कि किम को कोट की इतनी ज़रूरत क्यों महसूस हो रही है। वे बोले, "जब हम असली ऊँचे पहाड़ों पर पहुँचेंगे, असली ठंड तो वहाँ होगी!"

किम ने कहा, "यहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं, हवा एकदम ताज़ी है और पानी भी शानदार है... मगर खाने में वह मज़ा नहीं है। और रात के वक्त तो ठंड बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है।"

लामा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "लेकिन रात की ठंड के बाद, अगले दिन की धूप और उसकी गर्माहट कितना आनंद देती है!"

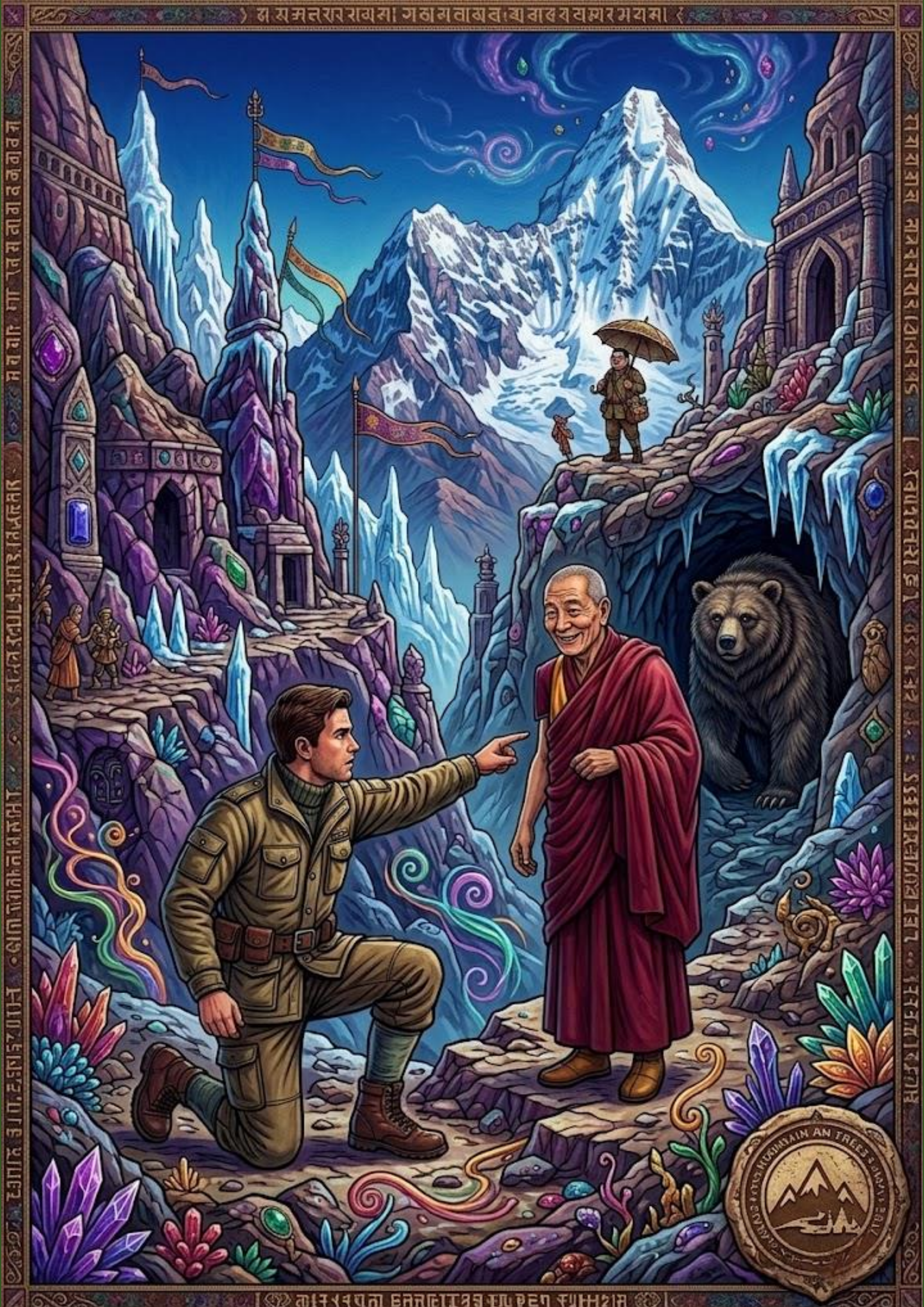


पूरे रास्ते बहुत कम लोग नज़र आए। कभी-कभार आसमान में चील या उकाब उड़ता दिखाई दे जाता, तो कभी दूर पहाड़ों पर कोई रीछ (भालू) नज़र आ जाता।

सफ़र के दौरान उनकी मुलाकात हकीम साहब (हरी बाबू) से भी होती रही, जो रास्ते में आने-जाने वाले लोगों का इलाज भी करते जा रहे थे। किम अक्सर हकीम के साथ जंगलों में जाकर जड़ी-बूटियाँ तलाश करने में उनकी मदद करता और उनसे गुप्त बातें भी करता।

हरी बाबू ने किम से कहा, "मिस्टर ओ'हारा, मुझे नहीं मालूम कि उन दो जासूसों से मेरी मुलाकात कब और कहाँ होगी, मगर तुम मेरी इस छतरी पर हमेशा नज़र रखना, जो तुम्हें दूर से ही चमकती हुई दिखाई दे जाएगी। मुझे तो बस यह फिक्र सता रही है कि कहीं वे अपने खुफिया कागज़ात पहले ही रूस न भेज चुके हों!"

इसके बाद वे दोनों फिर से अलग-अलग चलने लगे, मगर हरी बाबू की वह छतरी किम को दूर पहाड़ी रास्तों पर लगातार नज़र आती रहती थी।



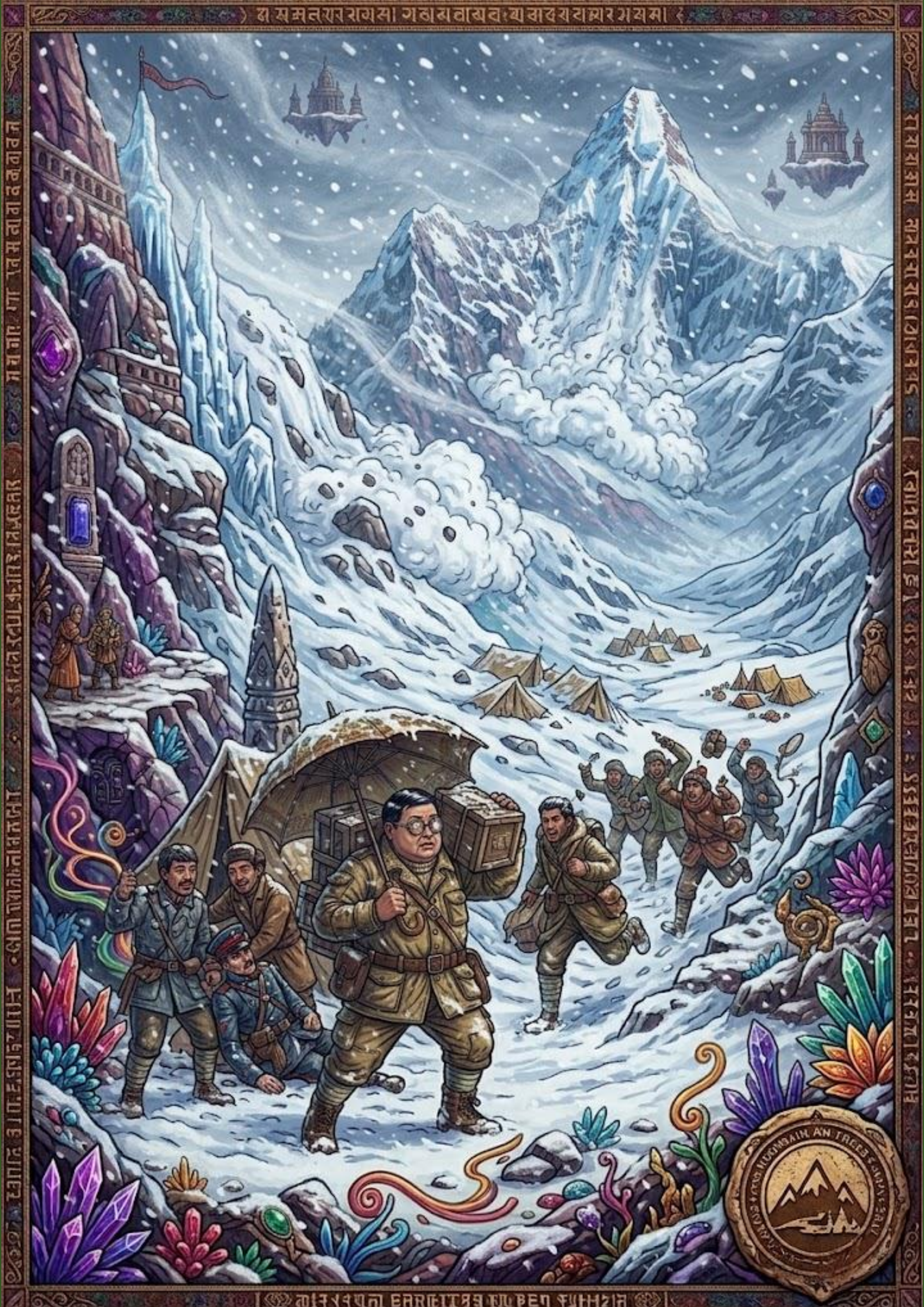
सफ़र करते-करते वे बहुत ऊँचाई पर—असली बर्फीले पहाड़ों के बीच पहुँच गए। लामा ने चारों तरफ देखकर कहा, "चेला! यह जगह तो बिल्कुल मेरे घर जैसी है।"

वहाँ साल के बारह महीने बर्फ़ जमी रहती थी। पहाड़ से नीचे देखने पर मीलों दूर तक फैला सरसब्ज़ और हरा-भरा जंगल दिखाई दे रहा था, जिसके पार बसे एक छोटे से गाँव में लहलहाती फसलें और मवेशी नज़र आ रहे थे।

हरी बाबू किम और लामा के पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे। उन्होंने अपनी दूरबीन से इलाके का मुआयना किया, तो दूर ढलानों पर उन अजनबियों के कैंप छोटे-छोटे धब्बों की तरह दिखाई दे गए।



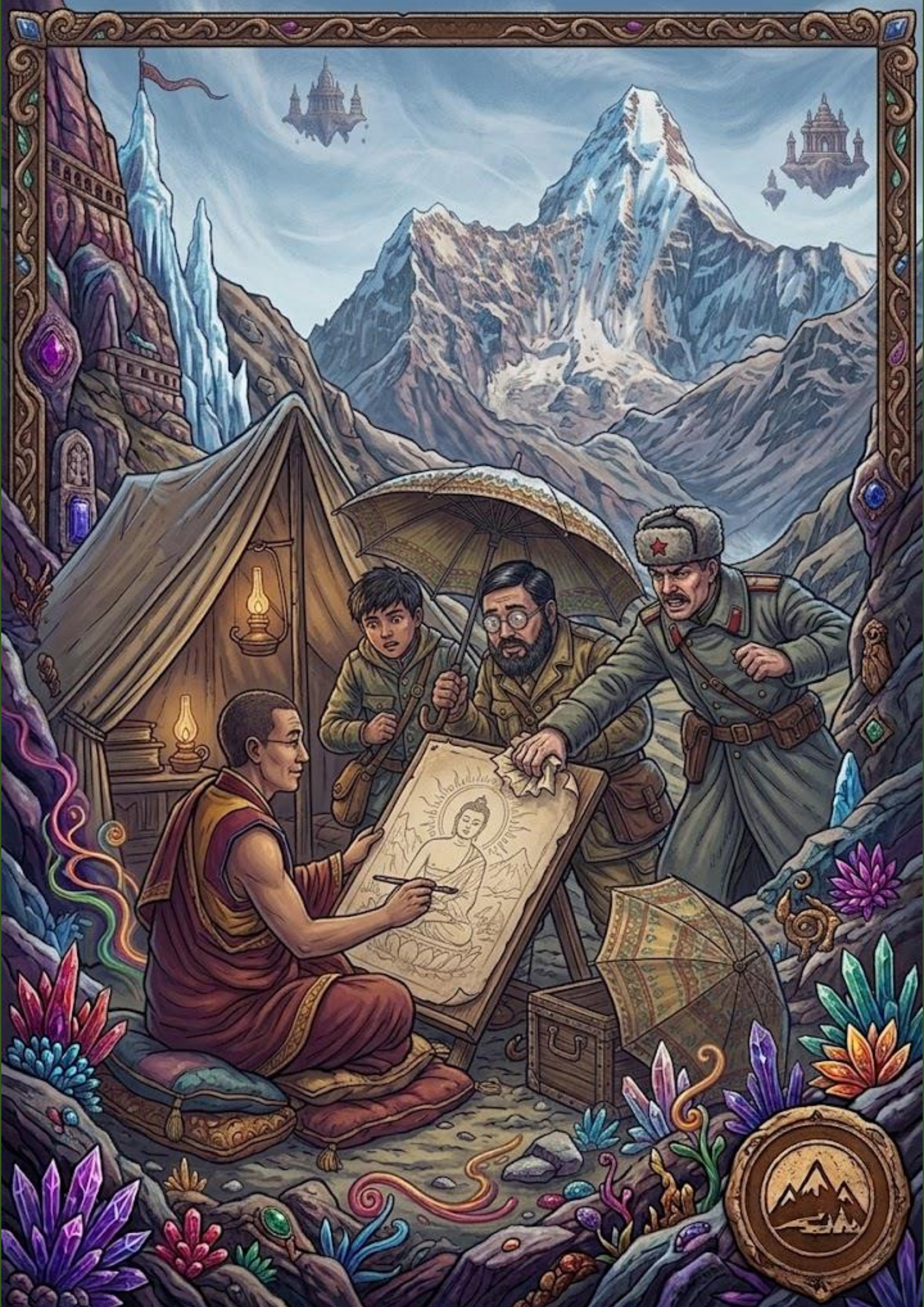
जब एक भीषण तूफान थमने के बाद हरी बाबू उन विदेशी जासूसों के शिविर (कैंप) तक पहुँचे, तो देखा कि उनके साथ आए सभी स्थानीय कुली और मज़दूर उन्हें छोड़कर जा चुके थे। दरअसल, तूफान के दौरान आसमानी बिजली गिरने से पास ही का एक बड़ा पेड़ जलकर खाक हो गया था। स्थानीय कुली इसे किसी बड़ी अनहोनी और बदशगुनी का इशारा मान रहे थे और उनका मानना था कि कोई अलौकिक, मनहूस शक्ति उन्हें भारी नुकसान पहुँचा सकती है।



हरी बाबू ने अजनबियों की मदद की और इलाके के लोगों को पैसे देकर काम के लिए दोबारा राजी कर लिया। उसने अपना परिचय रामपुर के राजा के एजेंट के रूप में करवाया। सफर शुरू हुआ और हरी बाबू उनसे दिलचस्प बातचीत करता रहा, लेकिन एक बड़े संदूक पर नजर भी रखी जिसमें नक्शे और कीमती कागजात मौजूद थे। किम भी छतरी को देखता हुआ लामा के साथ उन तक पहुंच गया। किम ने अकेले में हरी बाबू से पूछा मुझे क्या करना है। जवाब आया बस इंतजार करो और देखो। इस संदूक में नक्शे और कीमती कागजात मौजूद हैं। मैं देख चुका हूं कि एक राजा का लिखा गया पत्र भी वहां पर है, लेकिन किस राजा का, यह अब तक पता नहीं चल सका क्योंकि वे इसकी बहुत हिफाजत करते हैं। हां, अच्छी बात यह है कि अब तक रूस में कोई चीज भेजी नहीं जा सकी है। देखो अगर मुझे कुछ हो जाता है तो कम से कम तुम्हें तो मालूम होना चाहिए कि कीमती कागजात कहां पर हैं।



लामा एक पवित्र चित्र, जो उसने खुद बनाया था, के साथ किम को बौद्ध दर्शन के बारे में बता रहा था। जासूसों ने चित्र में दिलचस्पी दिखाई तो लामा ने जासूसों को चित्र के बारे में समझाने की कोशिश की। लेकिन एक ने उसे रोककर कहा, "मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि यह क्या कह रहा है, मैं यह चित्र खरीदना चाहता हूं। इससे पूछो कितने में बेचेगा।" हरी बाबू ने लामा से पूछने के बाद कहा कि नहीं, यह नहीं बेचेगा। लामा इलाके का अहम व्यक्ति होने के साथ-साथ एक अच्छा चित्रकार भी था और किसी ऐसे व्यक्ति को चित्र नहीं बेच सकता था जिसे उसकी कद्र न हो। रूसी ने समझा कि लामा चित्र की कीमत बढ़ाना चाहता है। मजाक में जेब से रकम निकाली और चित्र लामा से छीनने की कोशिश की।



और वह फट गई। पहाड़ी मजदूरों में से कुछ बुद्ध को मानने वाले थे, यह देखकर वे सख्त घबरा गए। भीषण लड़ाई की शुरुआत होते देखकर हरी बाबू परेशान था। जासूसों से बोला, "जनाब जनाब, आप एक नेक-पवित्र इंसान को हरगिज न मारें।" इससे पहले कि किम रोकता, रूसी ने पूरी ताकत से लामा के मुंह पर घूंसा मार दिया। अगले ही पल गुस्से में किम उसकी गर्दन पर हाथ डाल चुका था और वे दोनों कुलांचें (गुलटियां) खाते हुए पहाड़ियों से नीचे गिर रहे थे। लामा परेशानी की हालत में जमीन पर बैठ गया और तमाम मजदूर खौफजदा हालत में सामान उठाए ऊपर की ओर तेजी से भागने लगे। पवित्र इंसान लामा को मारना खौफनाक गुनाह था और वे अब उस जगह से दूर निकल जाना चाहते थे।



फ्रांसीसी व्यक्ति ने अपनी पिस्तौल के जरिए लामा को बंधक बनाने का सोचा, लेकिन पहाड़ी लोगों ने उस पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए, जिनका निशाना बहुत अच्छा होता है। फ्रांसीसी के फरार होने पर बुद्ध को मानने वाले एक मजदूर ने लामा को सहारा देकर ऊंचाई की ओर चढ़ाना शुरू किया। फ्रांसीसी को कीमती सामान जाने का दुख था और हल्की रोशनी में अंधाधुंध गोलियां चलाने लगा।



हरी बाबू खामोशी से किम तक पहुंच गया और आहिस्ता से कहा, "इस सामान में कीमती दस्तावेज मौजूद हैं। तुम मजदूरों के साथ शामिल हो जाओ।" फिर फ्रांसीसी से चीख कर कहा, "गोलियां मत चलाएं। इस तरह मजदूर नीचे उतरकर हम सबको मार डालेंगे।" किम तेजी से जा रहा था तो एक गोली उसके करीब से गुजरी। वह लामा और मजदूरों के करीब पहुंच गया तो दोनों ने एक-दूसरे की खैरियत पूछी। लामा ने कहा, "सफर शुरू करना चाहिए।" जबकि एक मजदूर ने कहा, "उनकी चार बंदूकें अब हमारे पास हैं। उन्होंने आपको मारा है और अब हम बदला लेंगे, उन्हें नेक इंसान को तंग करने की सजा देंगे।" तमाम मजदूर बदला लेने के लिए एक साथ बोलने लगे। मगर लामा ने कहा, "उन्होंने मुझे मारा है और मैंने उन्हें माफ कर दिया। तुम मेरा हुक्म मानोगे और अब नजदीकी आबादी की ओर सफर शुरू करोगे।"



मजदूर उन जासूसों को सजा देने पर आमादा नजर आए तो लामा खड़ा हुआ और कहने लगा, "क्या तुमने सुना नहीं कि मैंने क्या हुक्म दिया है? अगर नाफरमानी करोगे तो नई जिंदगी चूहे या सांप बनकर शुरू करोगे।" मजदूर घुटनों के बल बैठकर माफी मांगने लगा। लामा को अफसोस था कि उसकी वजह से लड़ाई शुरू हुई। लामा को कमजोरी महसूस हो रही थी तो एक मजदूर ने दवाई के नाम पर उसके मुंह में शराब की कुछ बूंदें टपका दीं। जासूसों का सामान खोलकर तलाशी ली गई और किम को अपने कीमती कागजात मिल गए। लामा ने चांद की रोशनी में बर्फ पर सफर का हुक्म दिया। दूर बैठकर मजदूरों ने फैसला किया कि आगे जाने से पहले जासूसों का सारा सामान आपस में बांट लेना चाहिए। उन्होंने किम को कीमती दस्तावेजों का संदूक दे दिया क्योंकि वह उनके किसी काम का नहीं था, जबकि किम के लिए वह बहुत बड़ा कीमती खजाना था।



दूसरी तरफ जासूस अब बिना टेंट, खुराक और बंदूकों के थे। जासूसी का सामान भी उनके पास न था और उनके कीमती कागजात चले जाने से 'ग्रेट गेम' का भी खात्मा हो चुका था। अचानक ही यह सब कुछ हो गया। किम ने सोचा कि हरी बाबू भले ही भूखा और भीषण सर्दी में होगा, लेकिन वह भी बेहद खुश होगा कि कीमती सामान तो किम के पास सुरक्षित है।

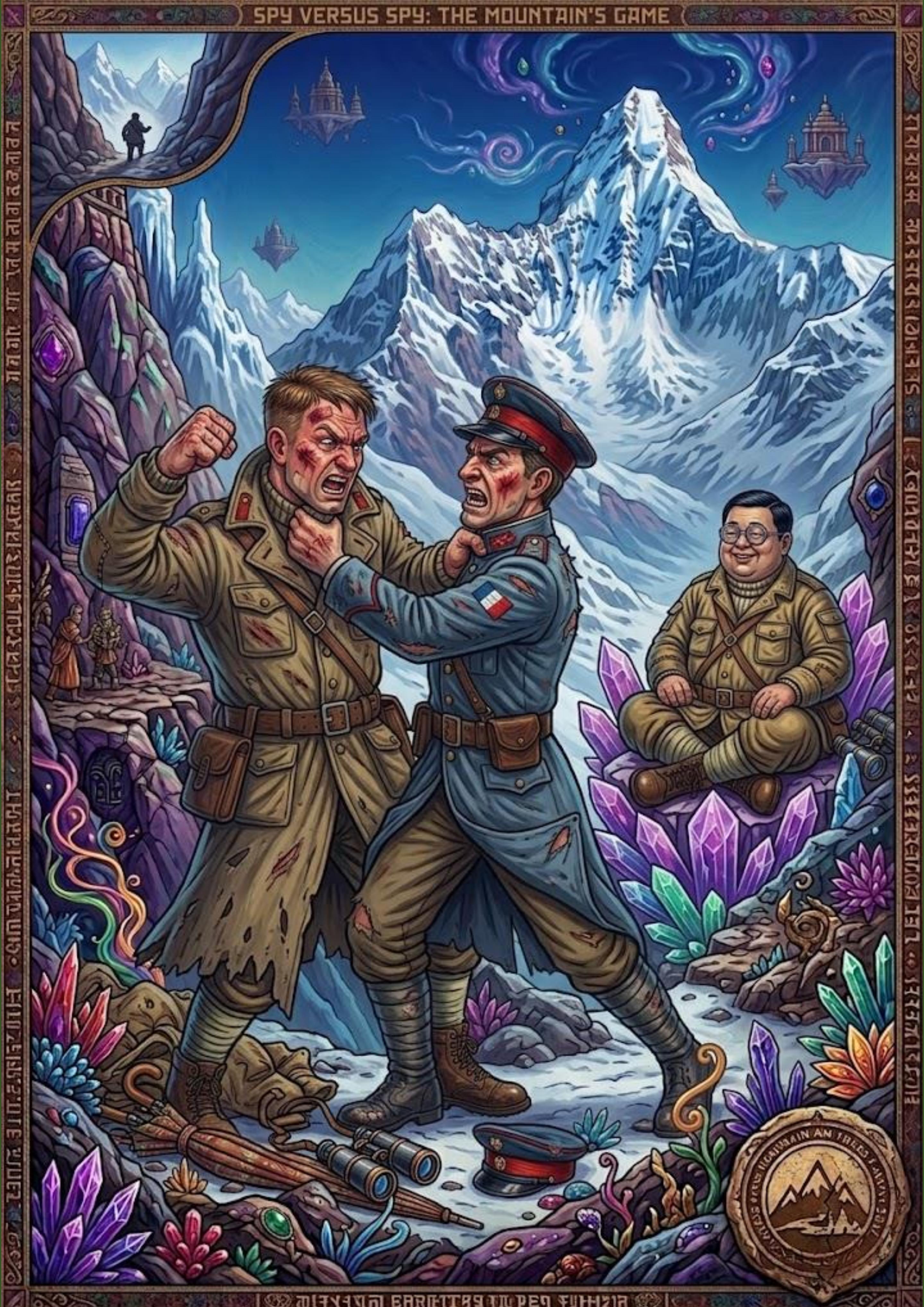
दोनों जासूसों की हालत बहुत खराब थी और वे सख्त गुस्से में भी थे। वे एक-दूसरे को दोष देते और हरी बाबू को भला-बुरा कहते, तो वह डरने की अदाकारी करता। एक जासूस, जिसकी किम ने हालत खराब कर दी थी, वह ज्यादा तकलीफ में था। सर्दी से परेशान होकर उन्होंने हरी बाबू से कुछ करने को कहा।

हरी बाबू ने कहा कि वे खुशकिस्मत हैं कि मजदूरों के हाथों मारे नहीं गए, और अब अगर मजदूर उनका पीछा नहीं कर रहे होंगे तो वे ऊपर दूर जा चुके होंगे। उसका राजा तो नब्बे मील दूर है, जो उन्हें इतनी दूर से पैसे भी नहीं भेज सकता ताकि वे नजदीकी आबादी तक पहुंच सकें। लेकिन हकीकत में मदद करने के बजाय, वह तो उन्हें जेल भेज सकता था अगर उसे पता चलता कि किसी पवित्र इंसान को उनके हाथों तकलीफ पहुंची है।

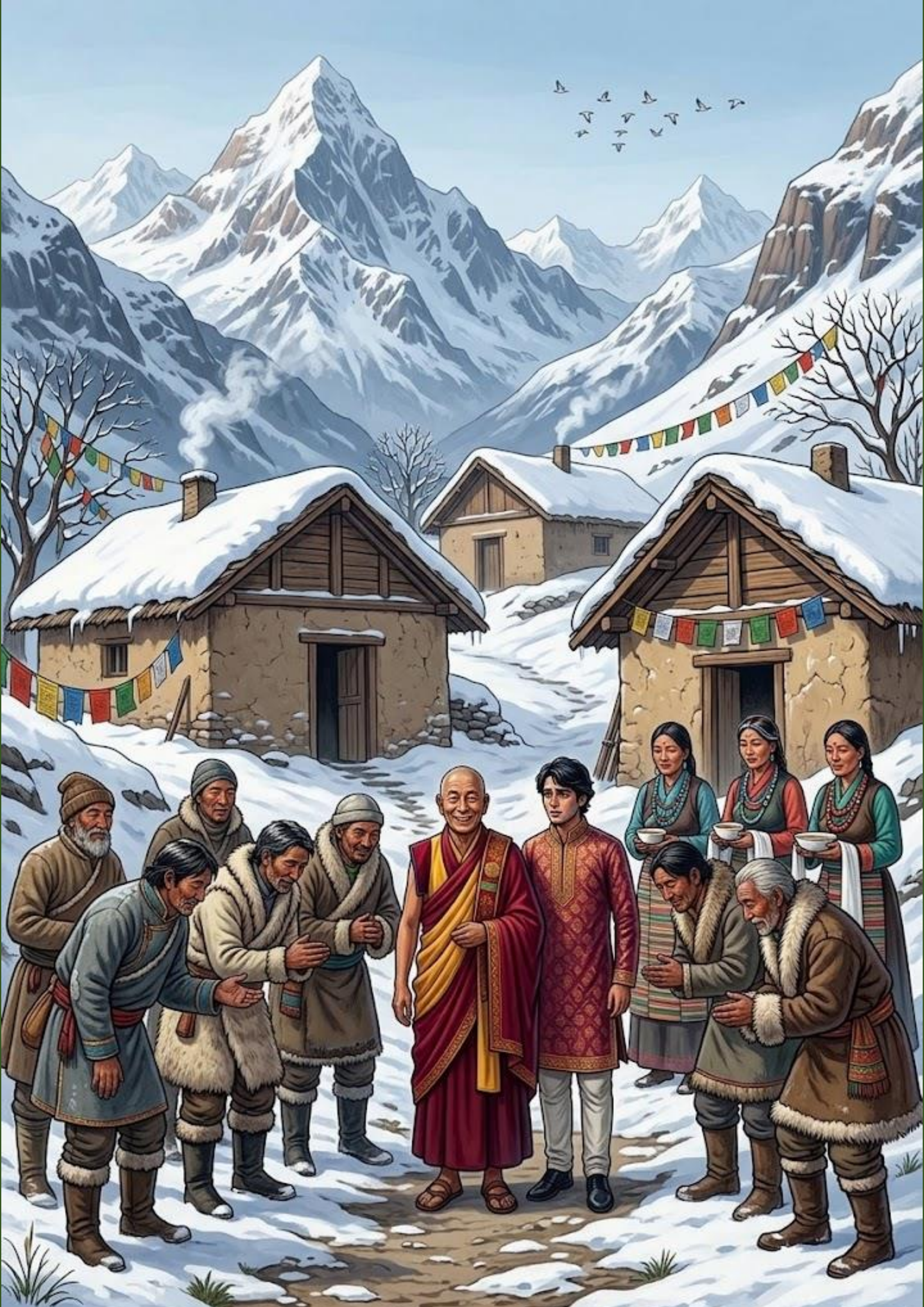

THE CLASH OF SPIES

जब हरी बाबू ने कई बार यही बात दोहराई तो उन्होंने उसे खामोश होने के लिए कहा, तो उसने जवाब दिया कि एक गांव से दूसरे गांव होते हुए अभी भी हम अपनी मंजिल-ए-मकसूद तक पहुंच सकते हैं। हरी बाबू के पूछने पर कि उन्होंने पवित्र-नेक लामा को क्यों मारा, उन्होंने कहा, "क्या हम बेवकूफ लग रहे हैं कि भिखारियों की तरह सुनसान पहाड़ियों पर मारे-मारे फिरेंगे? कोई तो हमारा भी मकसद होगा।"

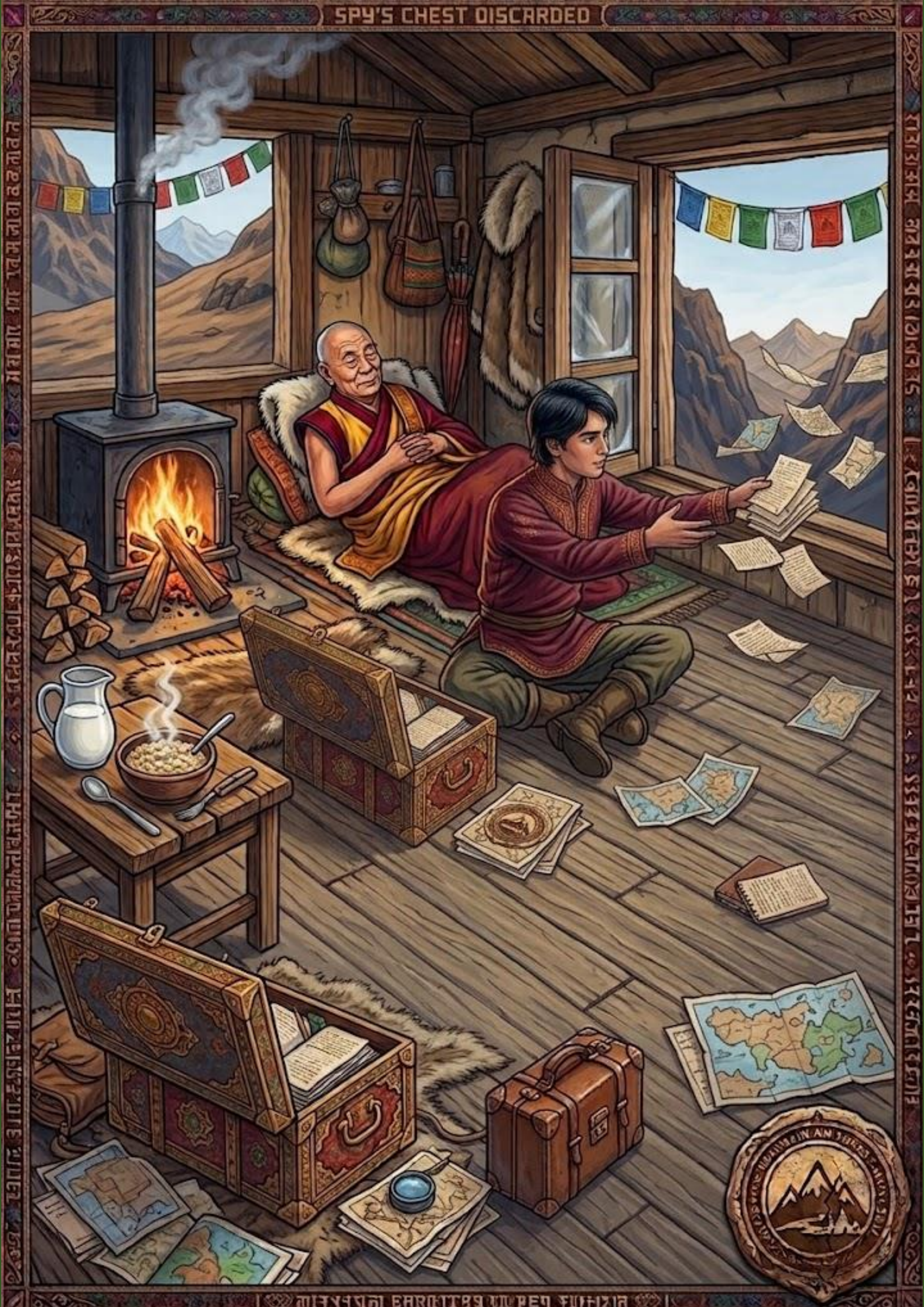
हरी बाबू दिल में हंसा, मगर खामोश रहा। एक जासूस ने दूसरे से कहा, "हमारा कितना कीमती सामान चला गया, क्या तुम्हें एहसास है?" वे दोनों फिर लड़ने और बहस करने लगे, जबकि हरी बाबू अंधेरे में बैठा मुस्कुरा रहा था। कई महीनों की मेहनत और मशक्कत के बाद 'ग्रेट गेम' के अहम दस्तावेज किम के पास थे। इससे बेहतर तो कुछ हो ही नहीं सकता था।


SPY VERSUS SPY: THE MOUNTAIN'S GAME

लामा ने कुछ देर आराम करने के बाद चांदनी में सफर का आगाज किया। एक घंटे ऊंचाई पर जाने के बाद बर्फ से ढकी हुई एक घाटी शाम-ले में पहुंचे, जहां कुछ झोपड़ियां भी मौजूद थीं। यह आबादी सिर्फ तीन खानदानों पर मुश्तमिल थी—तीन औरतें और आठ-नौ मर्द। किम हैरान था कि दुनिया से इतनी दूर ये कैसी मुश्किल जिंदगी गुजारते होंगे। मजदूरों ने एक झोपड़ी में किम और लामा के रहने का इंतजाम किया।

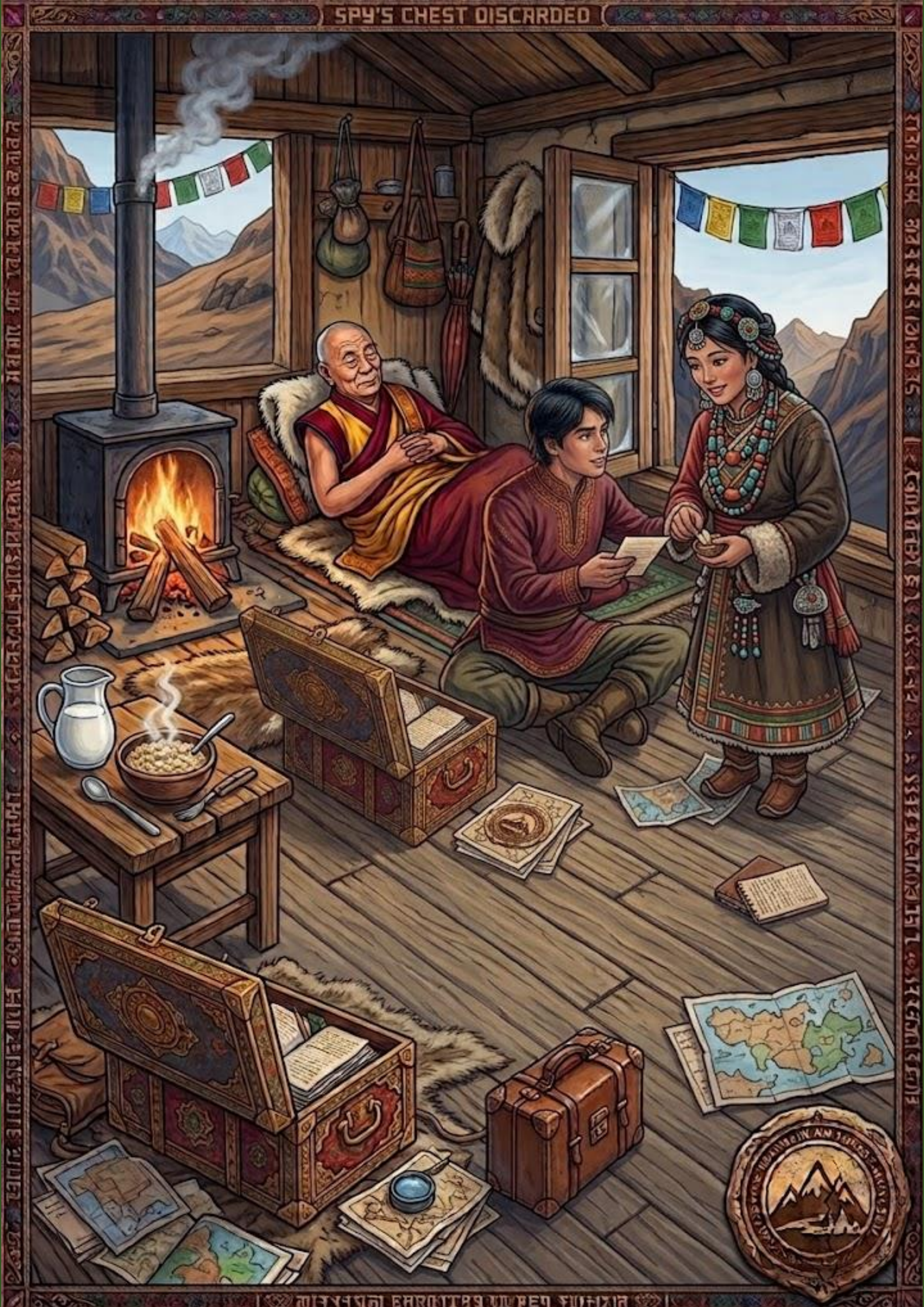


भोजन का प्रबंध करने के बाद एक तरफ की खिड़की खोलकर कहा कि संदूक में से जिस चीज की जरूरत न हो, उसे इस खिड़की से बाहर फेंक दें। वह इतनी गहराई में जाकर गिरेगी कि न आवाज सुनाई देगी, न वह वस्तु नजर आएगी। कीमती दस्तावेजों का संदूक किम को देकर बाकी सामान मजदूर आपस में बांट चुके थे। रात किम और लामा ने सोकर गुजारी। सुबह सामान का जायजा लिया तो अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों के साथ कढ़ाई किए हुए ऐसे संदेश भी मिल गए, जो एक राजा दूसरे राजा को अहम मामलों और संदेश-व्यवहार के लिए भेजता है। किम अपनी जीत पर मुस्कुरा रहा था। उसने सोचा कर्नल क्रेटन और हरी बाबू के लिए ये बहुत ही कीमती चीजें हैं, वे इनके मिलने पर बहुत ज्यादा खुश होंगे। कीमती चीजों को अलग किया और गैर-ज़रूरी चीजों को खिड़की से बाहर फेंक दिया, जहां वे बहुत गहराई में जा गिरीं—ऐसी गहराई जहां से उन्हें खोजना नामुमकिन था।

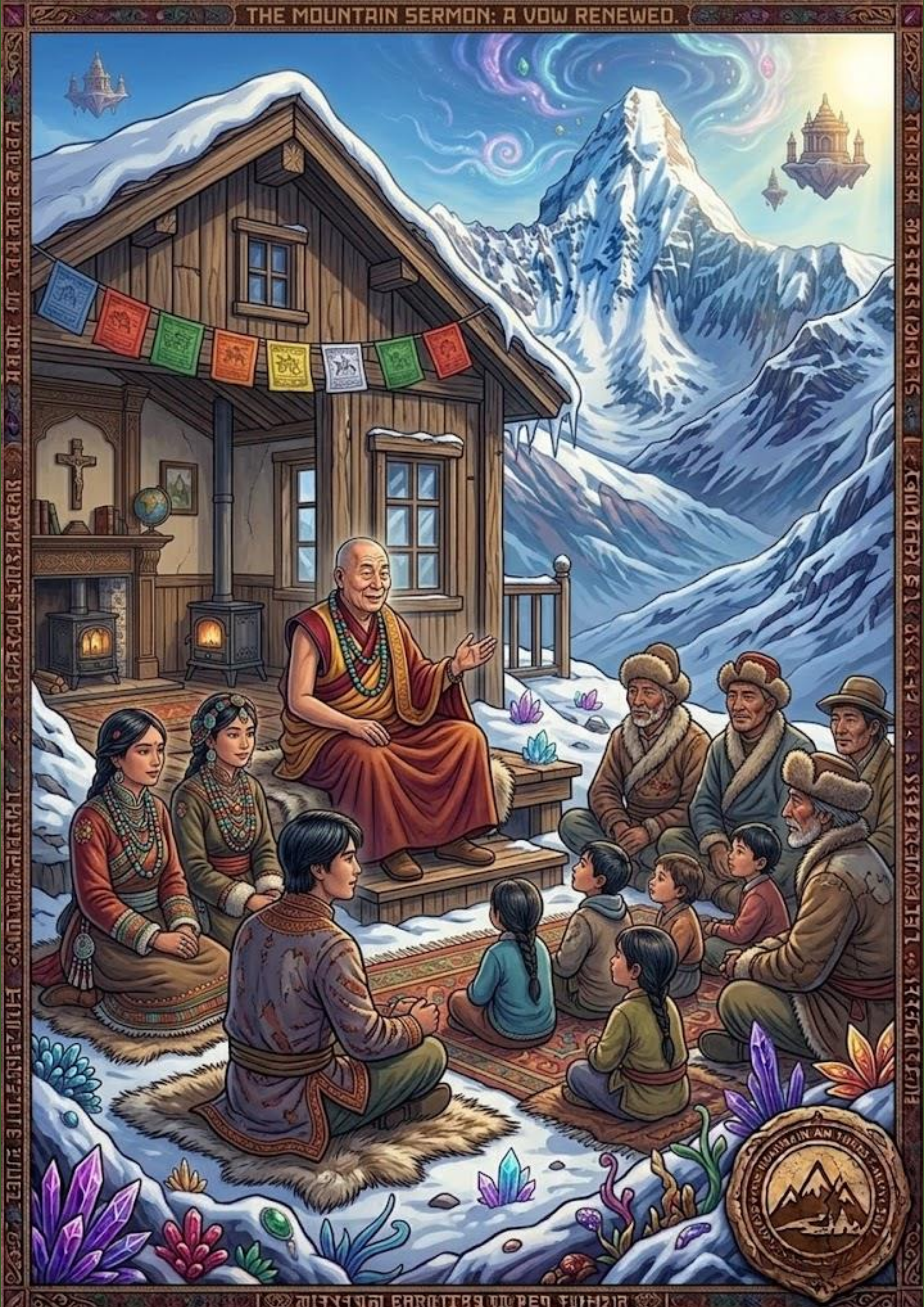

SPY'S CHEST DISCARDED

फिर एक औरत दरवाजे पर दिखाई दी, जिसने जेवरों से अपनी खूबसूरती में इजाफा करने की कोशिश की थी। किम ने उससे कहा कि दो अजनबियों के साथ जो हकीम सफर कर रहा है, क्या उस तक संदेश पहुंचाया जा सकता है? तुम्हें इनाम भी दिया जाएगा। औरत ने हां में जवाब दिया।

किम ने हरी बाबू को लिखा कि उसके पास वे सभी अहम दस्तावेज मौजूद हैं, जो राजा की तरफ से भेजे जा रहे थे। लामा बीमार है, मुझे बताएं आगे क्या हुक्म है। औरत ने एक अखरोट सलीके से तोड़ा, उसके छिलके में किम का संदेश रखकर उसे बंद कर दिया और कहने लगी कि इस काम को करने के बदले में आपने इनाम देने का वादा किया है। मैं मामूली औरत नहीं हूं। शाम-ले से मेरा ताल्लुक है और राजा भी मुझे जानता है। शाम-ले अब तुम्हारा है। इसकी हर चीज—इसका दूध और मक्खन भी तुम्हारा है। दिल चाहे तो हासिल कर लो, दिल न चाहे तो कोई बात नहीं। निर्णायक अंदाज में वह मुड़ी और किम के कानों में उसके चांदी के हार की आवाज आई, जो औरत के सीने से टकराकर बज उठा था। किम सोचने लगा, "ग्रेट गेम का मैं हिस्सा हूं और देखो, औरतें मेरे साथ मजाक कर रही हैं।" दूसरी औरतों के बाद इससे भी मुलाकात होनी बाकी थी।


SPY'S CHEST DISCARDED

औरत के जाने के बाद किम ने लामा के लिए बेहतरीन खुराक का इंतजाम किया।
सूरज की रोशनी में लामा ने लोगों को नेकी की तालीम दी।


THE MOUNTAIN SERMON: A VOW RENEWED.

जब औरत शाम को वापस आई, तो उसके साथ हरी बाबू का जवाब भी था कि मैं अभी इन लोगों से अलग नहीं हो सकता। इन लोगों को लेकर शिमला जा रहा हूँ। इन जंगली लोगों के पीछे बिल्कुल मत आना। जिस रास्ते से आए हो, उसी रास्ते से वापस चले जाओ। मैं भी जल्द तुमसे आ मिलूँगा। दस्तावेज़ मिलने की बहुत ज़्यादा खुशी है।

औरत ने बताया कि बंगाली से मिलने के बाद उसने पास के गाँव वालों से कह दिया है कि इन लोगों को खाने-पीने की चीज़ें मुफ्त में दें, जो उन्हें मिल भी रही हैं। लेकिन साहब लोग तो इस वक्त बहुत बुरे हाल में हैं। बंगाली उन्हें छोड़ क्यों नहीं रहा? किम ने कहा कि वह एक नेक और दयालु दिल का इंसान है।

औरत ने कहा, "तुमने कहा था कि मुझे तोहफा दोगे, अब इस बात पर आते हैं। यह गाँव तुमसे प्यार करता है, तुम भी इसे प्यार दो।"

किम ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा कि मैंने भी दिल में क्या-कुछ सोचा था, लेकिन मेरे बुजुर्ग लामा ने यहाँ से रवाना होने का हुक्म दे दिया है, जिसे मैं टाल नहीं सकता।

औरत ने कहा, "उस बूढ़े को उसके हाल पर छोड़ दो। तुम तो जवान हो, जिसने साहब की अच्छी मरम्मत (पिटाई) की थी।"

किम ने कहा, "रुकना मुमकिन नहीं है।"

"क्यों?"

"यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आएगी।"


A NIGHT OF MOUNTAIN VOWS

औरत ने कहा, "क्या तुम यकीन करोगे कि बहुत पहले एक साहब मुझसे प्यार करने लगा था? मैं मिशन हाउस में अंग्रेजों के कपड़े पहनती थी और उनकी तरह ही अंग्रेजी बोलती थी। जब साहब बीमार हुआ तो मैंने उसकी देखभाल की। जब वह जाने लगा तो उसने कहा कि वापस आकर मुझसे शादी करेगा। वह कभी वापस नहीं आया, तो मैं समझ गई कि साहब और उनका भगवान दोनों झूठे हैं। तुम्हें देखा तो मुझे अपना साहब याद आ गया।"

औरत ने तंजिया (व्यंग्यात्मक) हंसी हंसते हुए कहा, "तुम्हारा भगवान, तुम्हारे काम और तुम्हारी बातें, सब झूठ हैं। मैंने अपने साहब से भगवान की तरह प्यार किया, लेकिन वह मुझे छोड़कर चला गया। यहीं रुक जाओ, तुम्हारा बूढ़ा लामा तो आधे मील से ज़्यादा आगे नहीं जा सकेगा। क्या उसे अपने कंधों पर उठाए फिरोगे?"

लामा के खिलाफ बातें सुनकर किम गुस्से में आ गया और कहा कि वह लामा को लेकर मैदानी इलाके में ज़रूर जाएगा और आखिरी सांस तक उसके साथ रहेगा।

औरत दुखी होकर वहां से चली गई।


COMPASSION'S SANCTUARY: THE MISSION'S CARE.

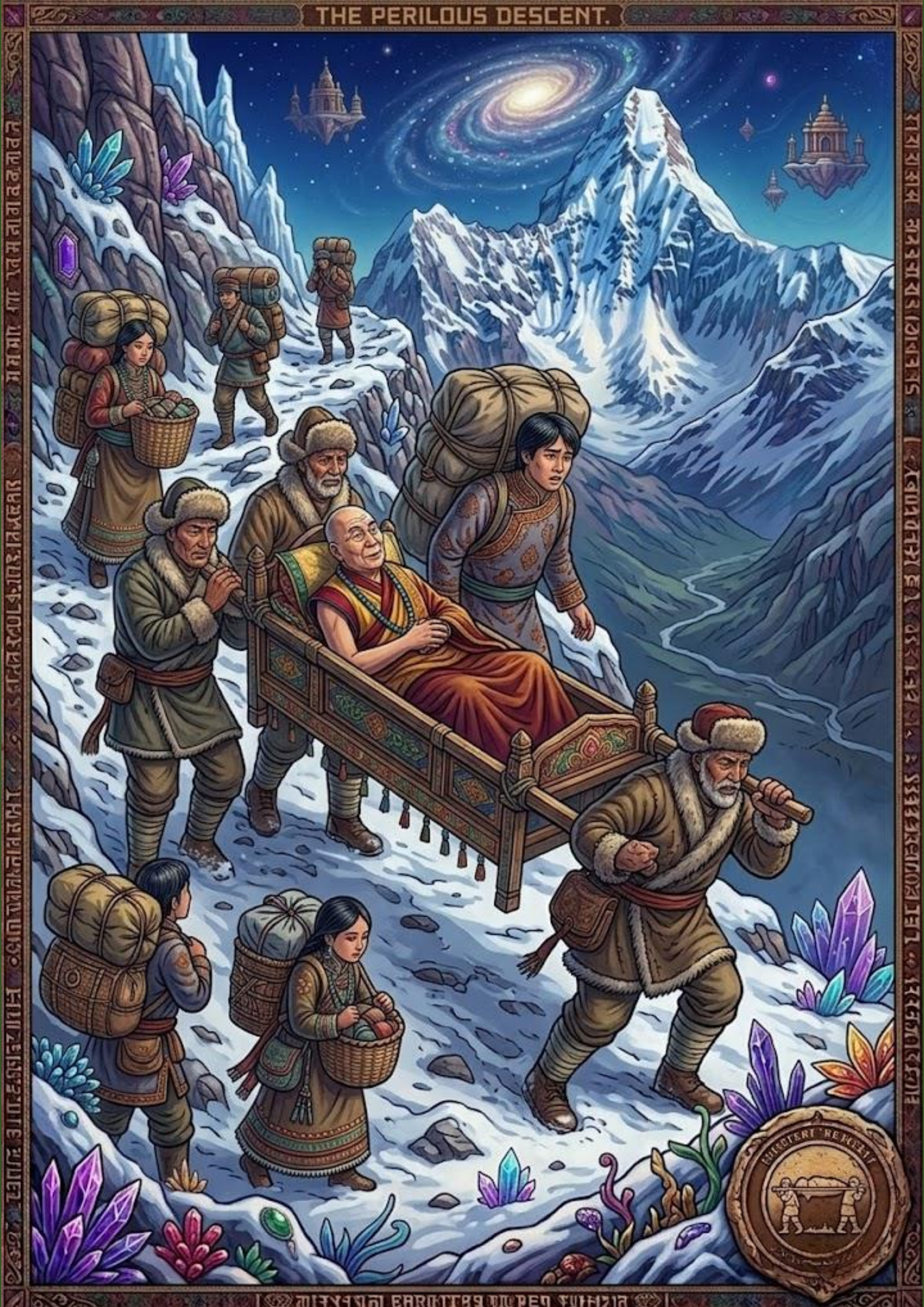
किम ने लामा से पूछा, तो उसने जवाब दिया, "मैंने बहुत सोच-विचार किया है। मुझे पहाड़ियों ने बुलाया, तो मैं यहाँ आ गया। मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था, क्योंकि पवित्र नदी तो मैदानी इलाकों में ही हो सकती है, इसलिए हमें वापस मैदानी इलाकों में उसे तलाश करना चाहिए। मुझे नहीं पता कि मैं और कितने दिन ज़िंदा रहूँगा। हकीम (वैद्य) का इंतज़ार नहीं किया जा सकता।"

किम ने कहा कि आप बहुत बीमार और कमज़ोर हो चुके हैं।

लामा ने जवाब दिया, "लेकिन सफ़र ज़रूरी है।"

किम ने खाने-पीने का इंतज़ाम किया। उसी औरत ने दरियादिली से चीज़ें दीं। जिस तरह बीमार को स्ट्रेचर पर ले जाते हैं, आदमी उसी तरह लामा को लेकर सफ़र करने लगे। जहाँ तक ज़रूरी था, वहाँ तक वे साथ चलते रहे।

किम ने लामा से कहा, "ये पहाड़ी लोग मेरी सोच से भी ज़्यादा दरियादिल और नेक हैं।"


THE PERILOUS DESCENT.

दूसरी तरफ, हरी बाबू अलग-अलग रास्तों से होता हुआ दोनों जासूसों को लेकर भारत की राजधानी की तरफ जा रहा था। रास्ते में वह उसी औरत से मिला जो पैगाम लेकर आई थी। औरत ने उसे बताया कि बीमार लामा को लोग किस तरफ लेकर गए हैं। वे बहुत धीमी रफ्तार से सफर कर रहे होंगे। हरी बाबू ने भी उसी तरफ सफर शुरू कर दिया।


MOUNTAIN ROUSE

किम और लामा बहुत धीमी गति से सफ़र कर रहे थे। रास्ते में लोग बीमार लामा की बहुत सेवा करते। सफ़र के दौरान उन्हें एक बर्फ़ीले तूफ़ान का भी सामना करना पड़ा। नदी-नालों, जंगलों और बर्फ़ीले पहाड़ों से गुज़रते हुए वे उस जगह पहुँचे, जहाँ लामा को उठाए हुए लोगों को पसीना आने लगा। वे लामा के गिर्द जमा हुए, उनसे आशीर्वाद (दुआएँ) लिया और वापसी का सफ़र शुरू किया। किम ने उन्हें पैसे भी दिए।

उन लोगों के जाने के बाद लामा ने हिमालय के पहाड़ों को अलविदा कहा, क्योंकि उसका मानना था कि शायद वह दोबारा वहाँ साँस न ले सके। किम के कंधे पर हाथ रखे लामा ने धीरे-धीरे मैदानी क्षेत्र की ओर चलना शुरू किया। जब वह थक जाता, तो किम ज़मीन पर कंबल बिछाकर लामा को आराम कराता और उसके पैरों की मालिश करता।

लामा ने कहा, "तुम दुनिया के सबसे अच्छे शिष्य (चेले) हो। नदी ढूँढ़ने के बाद हम दोनों मुक्ति (आज़ादी) हासिल कर लेंगे।"

उसने किम से पूछा, "क्या तुम नहीं चाहते कि मुझसे अलग होकर एक स्वतंत्र जीवन बिताओ?"

किम ने अपने कीमती दस्तावेज़ों के बारे में सोचा कि काश कोई ऐसा होता जिसके हवाले वह ये कीमती चीज़ें करके मुक्त हो जाता और 'ग्रेट गेम' उसके बिना भी जारी रहता। अब किम खुद भी बीमारी और कमज़ोरी महसूस कर रहा था।

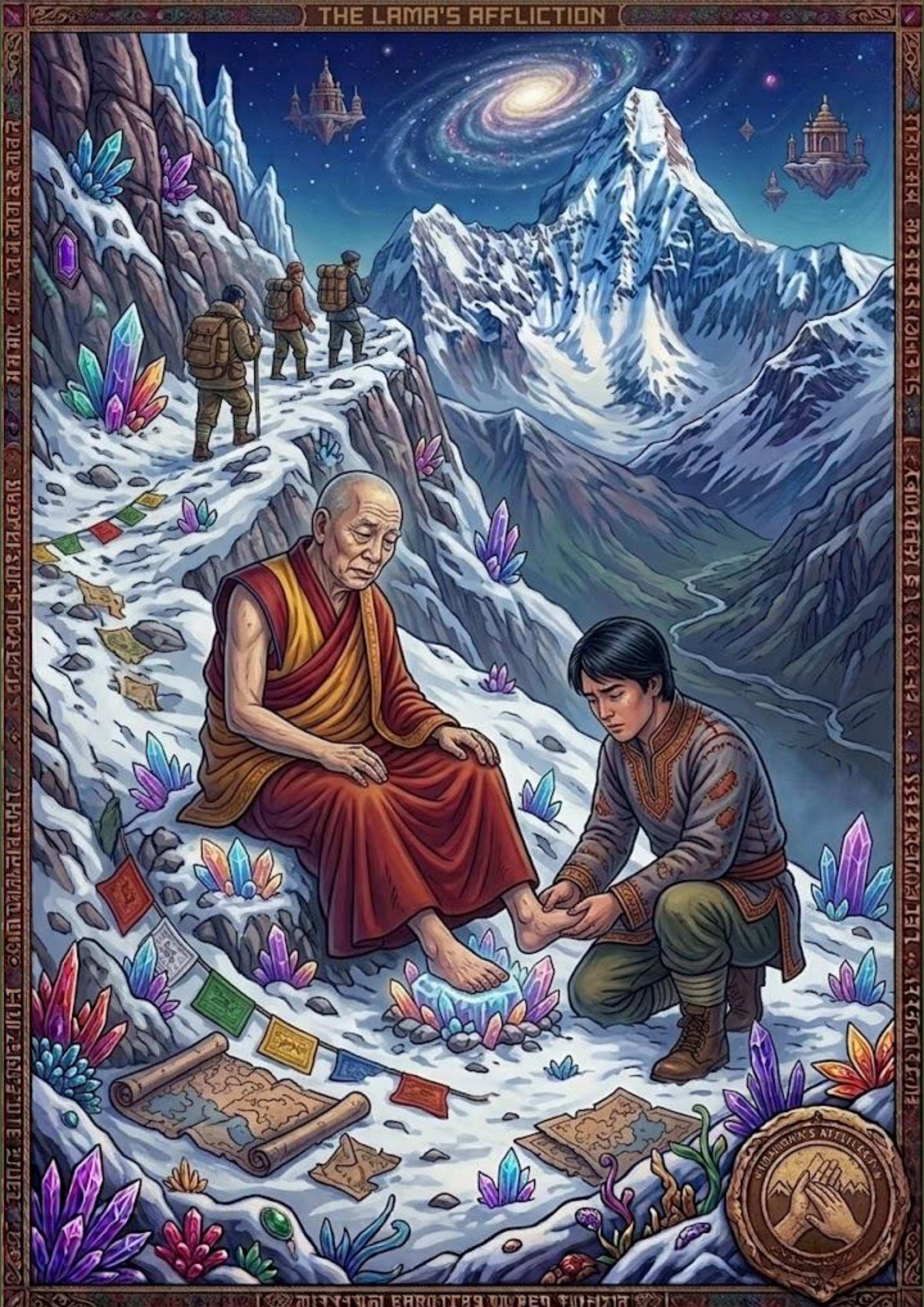
किम ने जवाब दिया, "मैं कोई कुत्ता या साँप तो नहीं हूँ कि जिसने मुझे प्यार दिया, उसी से दग़ाबाज़ी कर जाऊँ। मैं आपका साथ कभी नहीं छोड़ूँगा।"

लामा ने कहा, "तुम मुझ पर बहुत दयालु हो।"

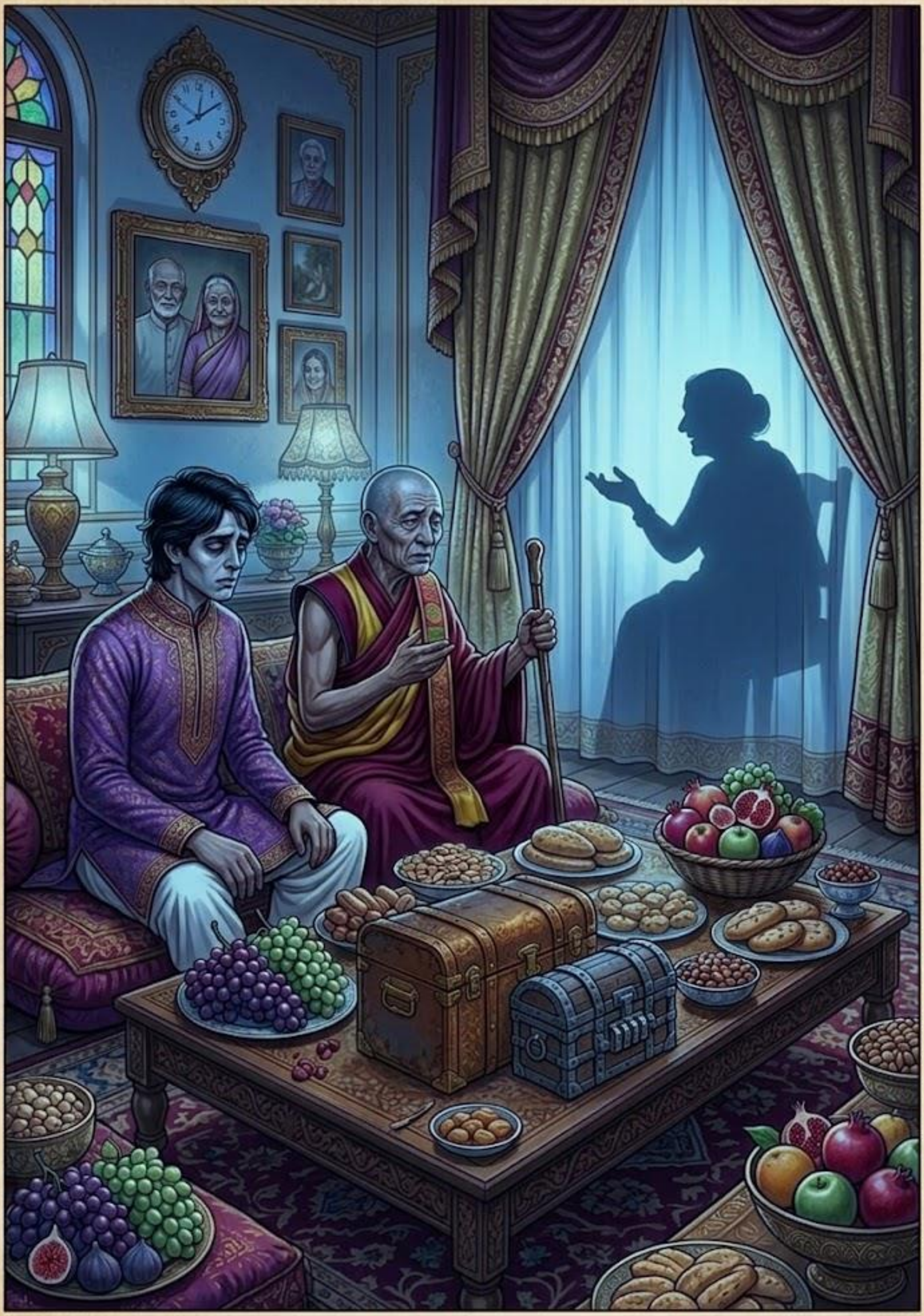
इस पर किम ने उत्तर दिया, "आपको बताए बिना मैंने उस नेक बूढ़ी औरत को पैग़ाम भेजा है। आपको सफ़र के लिए मदद की ज़रूरत है, अब हमें उसका इंतज़ार करना चाहिए।"

लामा ने कहा, "हाँ, वह औरत सोने का दिल रखती है। तुम भी तो बीमार और कमज़ोर हो रहे हो, उस नेक औरत के घर तुम भी आराम करके सेहतमंद हो जाना।"

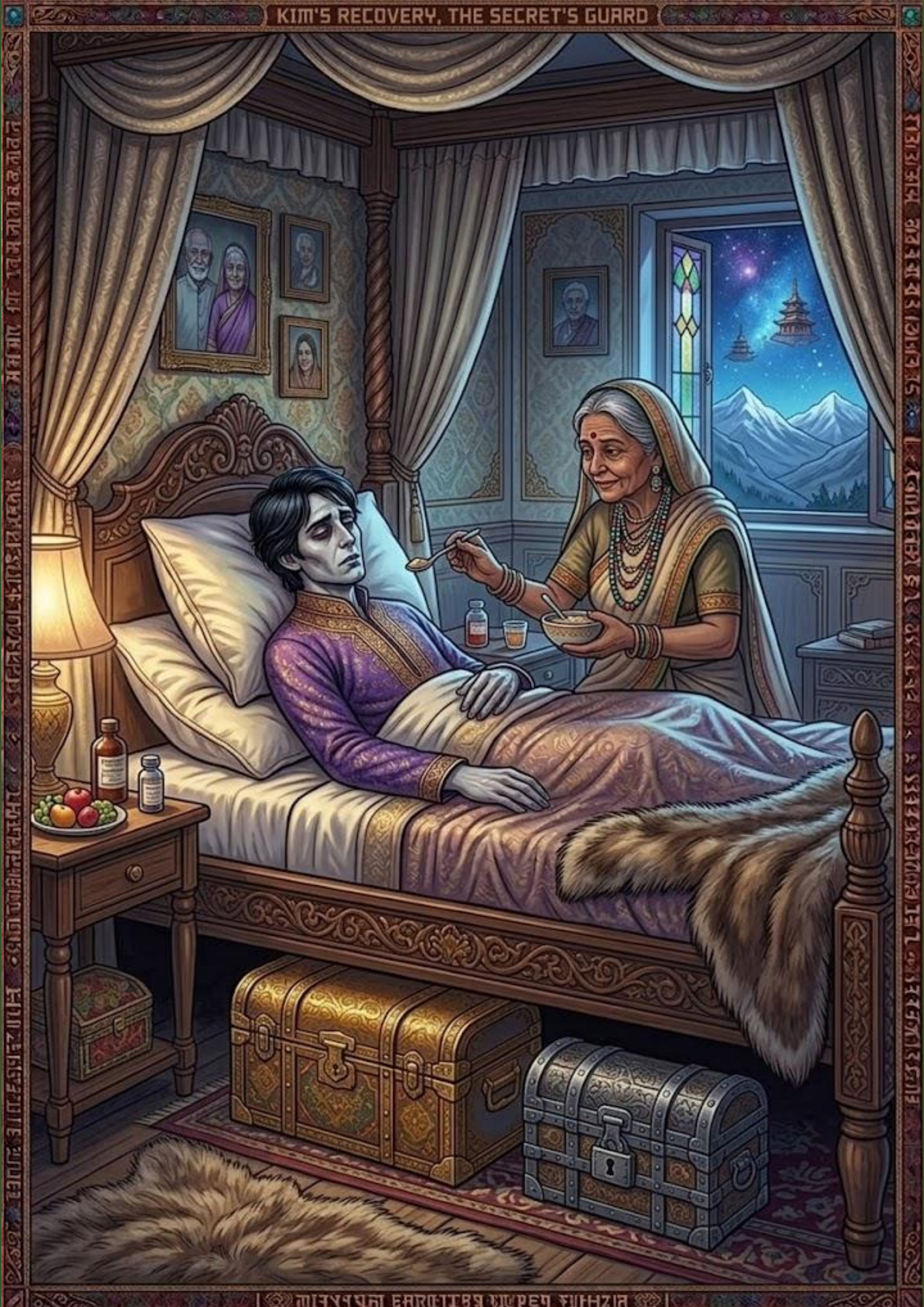
प्रेम से भरी यह बात सुनकर किम की आँखों में आँसू आ गए।


THE LAMA'S AFFLICTION

जल्द ही बूढ़ी औरत ने नौकर भेजकर किम और लामा को अपने पास बुला लिया और कहा कि बीमारों का इलाज करने में तो मेरा कोई मुकाबला नहीं कर सकता।



किम, जो सख्त तकलीफ में और बीमार था, उसे अच्छी खुराक और दवाई दी गई।
किम ने कीमती दस्तावेज़ों का संदूक बिस्तर के नीचे रखा और फिर उसे होश न रहा।
अच्छी खुराक उसे मिलती रही और जल्द ही वह पूरी तरह तंदुरुस्त हो गया।

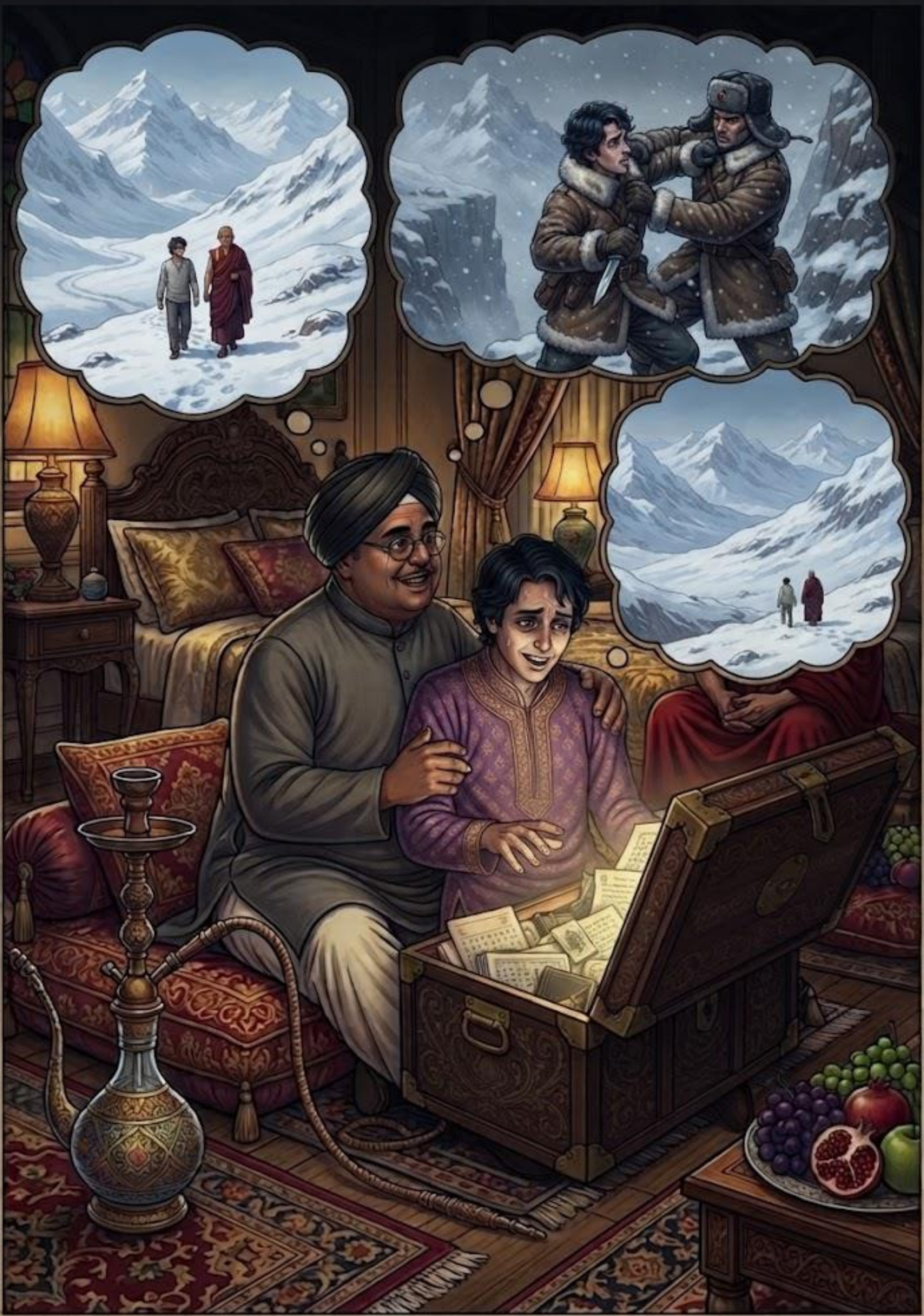

KIM'S RECOVERY, THE SECRET'S GUARD

पूरी तरह तंदुरुस्त होने के बाद उसने पवित्र लामा के बारे में पूछा, तो बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "वह ठीक हैं, लेकिन अगर मैं किसी तावीज़ से उन्हें अकलमंद बना पाती, तो ऐसा ज़रूर करती। वह दो दिन तक बिना कुछ खाए-पिए घूमते रहे, फिर एक नदी में छलांग लगा दी। मैं तो परेशानी से पागल हो गई थी, लेकिन उन्होंने बताया कि उन्हें पवित्र नदी मिल गई है और वे पापों से मुक्त हो गए हैं। अब वह ठीक हैं और रोज़ तुम्हें देखने आते हैं।"

किम को तो याद ही नहीं था कि वह कितने दिनों तक बेहोश रहा था। उसने बूढ़ी औरत को बहुत आशीर्वाद (दुआएँ) दिया, जिस पर उसने कहा, "तुम मेरे बेटे जैसे हो। और हाँ, हकीम भी तो वापस आ चुका है, वही जो पिछली बार तुम्हें यहाँ मिला था।"


KIM'S RECOVERY, THE SECRET'S GUARD

हकीम के भेष में हरी बाबू भी वहाँ आ गया। जब किम ने उसे सभी कीमती दस्तावेज़ दिए, तो वह बेहद खुश हुआ और बोला, "किम, तुम्हें तो अंदाज़ा भी नहीं है कि ये खुफिया खत-ओ-किताबत (गुप्त पत्राचार) और समझौते कितने अहम हैं, कितने कीमती हैं। मैं तुम्हारे इस कारनामे के बारे में आला अधिकारियों और सब लोगों को जानकारी दूँगा। वे भी बेहद खुश होंगे। हालाँकि यह सब लिखित रूप में नहीं बल्कि ज़बानी होगा, क्योंकि लिखने की तो अनुमति ही नहीं है।"



हरी बाबू ने बताया कि यहाँ पहुँचने के बाद उसने पवित्र लामा को न समझ में आने वाली हरकतें करते देखा। उसकी सुरक्षा के ख़ातिर वह उसका पीछा करता रहा। लामा एक दिन पेड़ के नीचे देर तक ख़ामोश सोचों में खोया रहा।



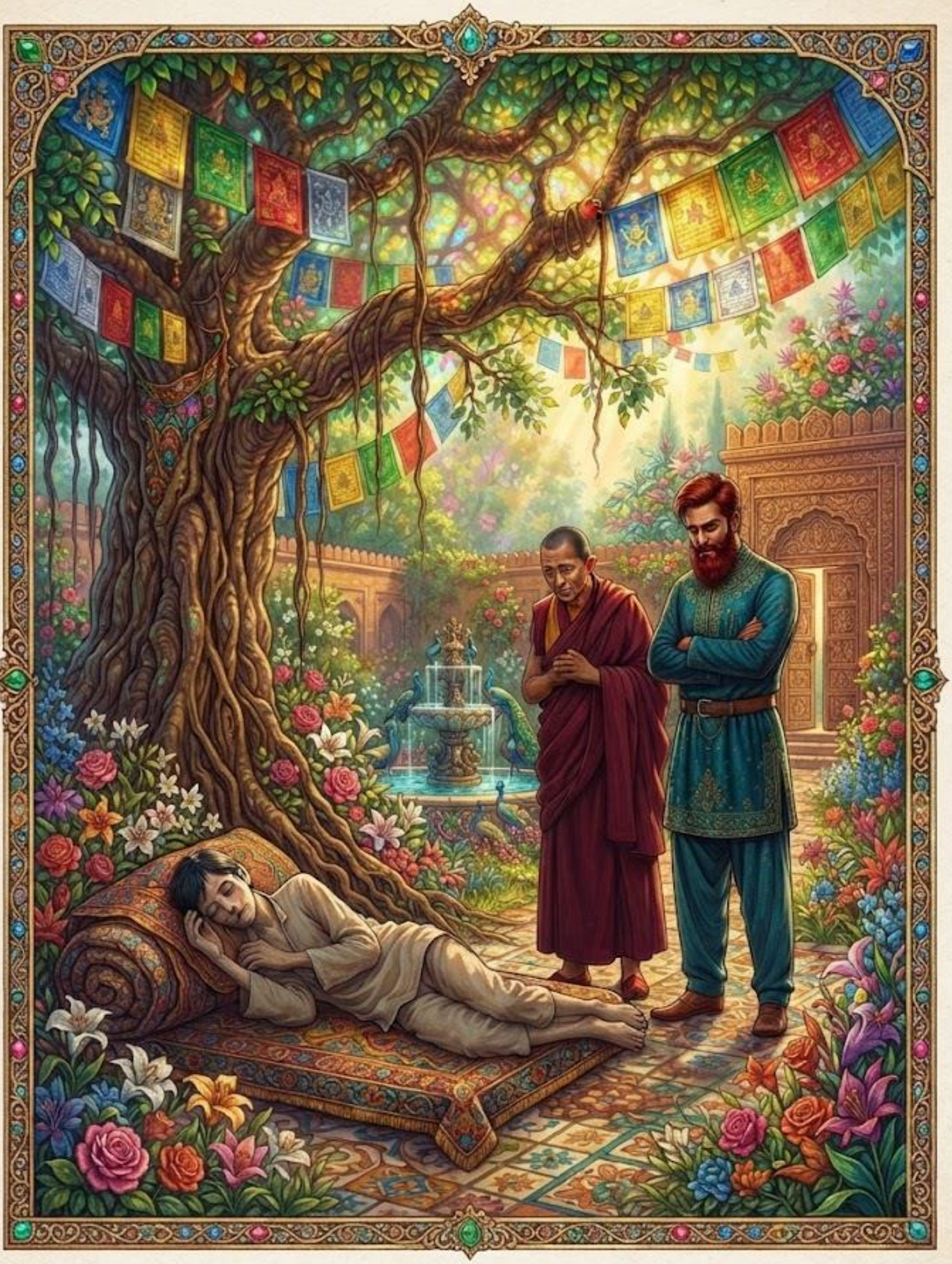
फिर अचानक तेज़ी से उठा और नजदीकी नदी में छलांग लगा दी। अगर मैं उन्हें न निकालता तो वे डूब चुके होते। किम ने कहा, "मुझे उनके साथ रहना चाहिए था मगर मैं बीमार हो गया।" हरी बाबू ने कहा कि अब वे कहते हैं कि वे तमाम गुनाहों से आज़ाद हो चुके हैं क्योंकि वही पवित्र नदी थी। "अब मुझे जल्दी रवाना होना है, तुम भी तंदुरुस्त होकर शिमला आ जाना। सब लोगों को तुम पर फ़क्र होगा, ख़ास तौर पर महबूब अली को जो तुम्हारे लिए बहुत फिक्रमंद भी रहा। मैंने तार देकर उसे यहाँ बुला लिया क्योंकि मैं काग़ज़ात की वजह से परेशान था।"



शाम को किम घर से बाहर घूमने गया और पेड़ के नीचे सो गया। महबूब अली और लामा की आवाज़ से उसकी आँख खुली। लामा कह रहा था कि ऐसा ख़याल रखने वाला अच्छा चेला पहले किसी को नहीं मिला होगा—मेहरबान, अक्लमंद, ख़याल रखने वाला, सच्चा और पढ़ा-लिखा; उसकी नेकी का फल उसे ज़रूर मिलेगा। उसकी वजह से ही मुझे पवित्र नदी की तलाश में कामयाबी हासिल हुई।

महबूब अली ने पूछा, "मगर अब आप इसके भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं?"

लामा ने कहा कि इसे सरकार ने काम के लिए तालीम दिलवाई है और पवित्र नदी में नहाकर इसके गुनाह भी ख़त्म हो जाएँगे। महबूब अली को उसके धार्मिक अकीदों (मान्यताओं) का तो पता न था, मगर यह जानकर ख़ुशी हुई कि लामा ने किम को सरकार के साथ काम करने की इजाज़त दे दी है।



- The Sick Pilgrim -

A Journey of Compassion

महबूब अली अपने घोड़ों की तरफ गया तो लामा ने किम से कहा, "चेला उठो, पवित्र नदी मिल गई है।" किम ने आँखें खोलीं और मुस्कुराया, "मैं शायद कई साल तक सोया रहा।" दोनों ने एक-दूसरे की सेहत के बारे में पूछा। दोनों अब तंदुरुस्त थे।

लामा ने कहा, "मुझे तुम्हारी सेहत की तरफ से फ़िक्र थी। मैंने ख़ामोशी से ग़ौर-ओ-फ़िक्र (ध्यान) किया। न कुछ खाया, न पिया। दो दिन और दो रातें इसी तरह गुज़र गईं। फिर मुझे अपनी नदी नज़र आ गई। मैं वहाँ गया, वह वहाँ आम के पेड़ों के दूसरी तरफ है। हकीम ने मुझे उसमें से बाहर निकाला। सब लोग मेरे लिए फ़िक्रमंद थे मगर मैं तो ख़ुश था कि गुनाहों से पाक (मुक्त) हो गया हूँ। चलो, अब तुम भी मेरे साथ उस पवित्र नदी में चलो ताकि तुम्हारे गुनाह भी ख़त्म हो सकें।"

रात की तारीकी (अँधेरे) में लामा और किम उस नदी—पवित्र नदी—की तरफ कदम बढ़ाने लगे।



प पहाड़ों का रहस्य | The Secret of the Mountains

महाबूब, लामा, और किम का पुनर्मिलन | Mahboob, Lama, and Kim's Reunion

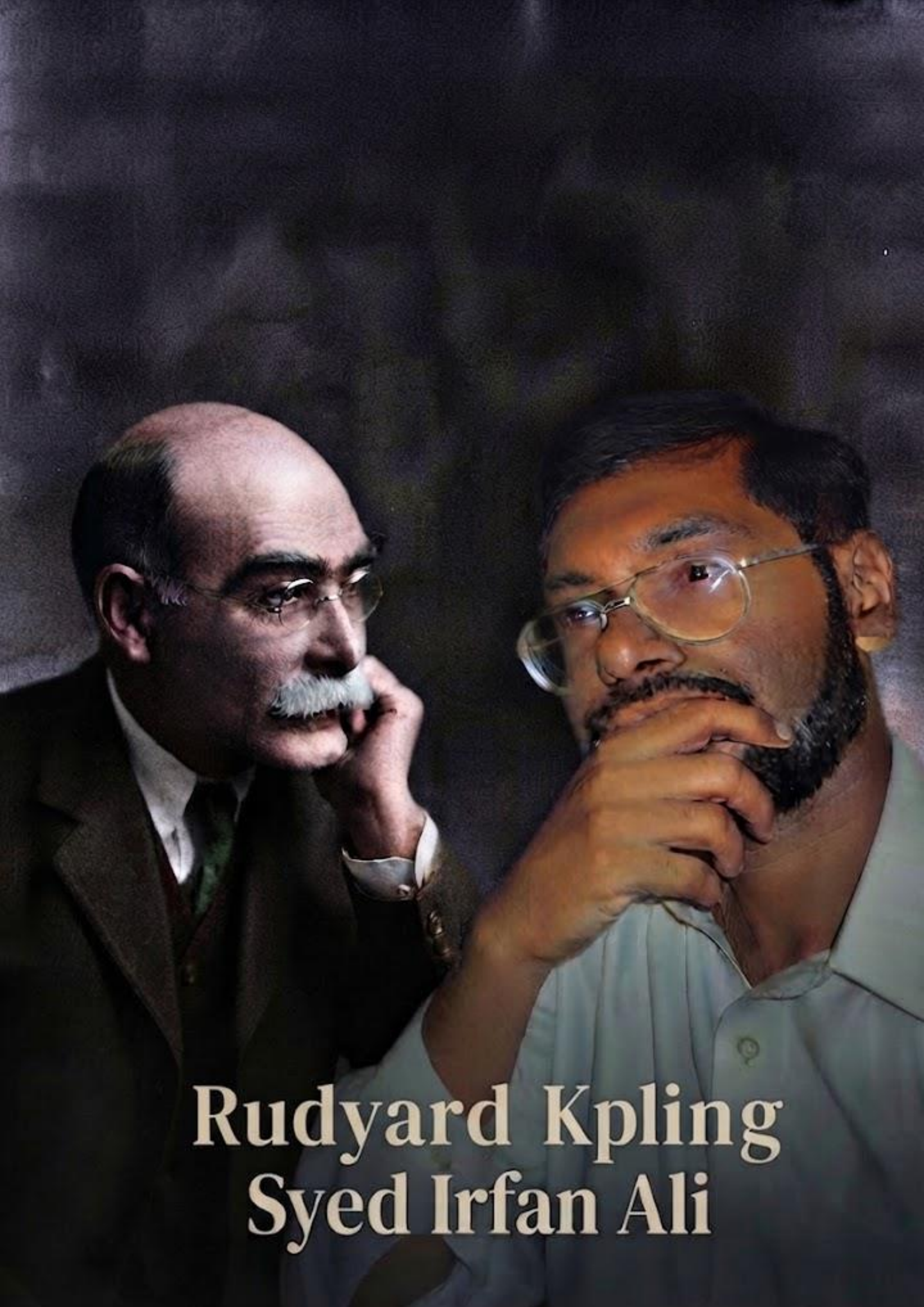
किम

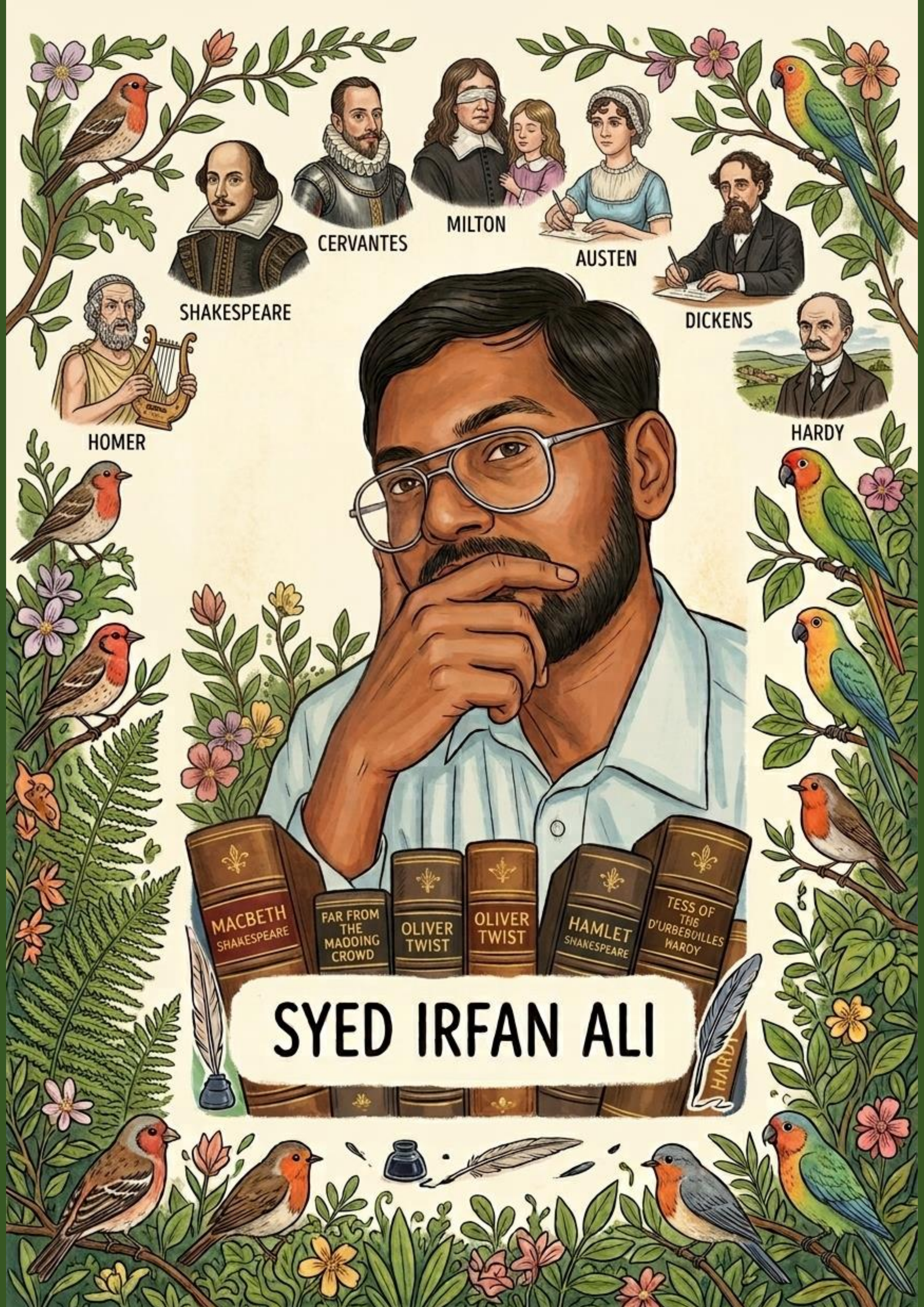
रुडयार्ड किपलिंग का महान उपन्यास

हिंदी अनुवाद: सैयद इरफान अली

Hindi Translation

Syed Irfan Ali


Rudyard Kpling
Syed Irfan Ali


SHAKESPEARE
CERVANTES
MILTON
AUSTEN
DICKENS
HOMER
HARDY
MACBETH
SHAKESPEARE
FAR FROM THE
OLIVER TWIST
OLIVER TWIST
HAMLET
SHAKESPEARE
TESS OF THE
SYED IRFAN ALI